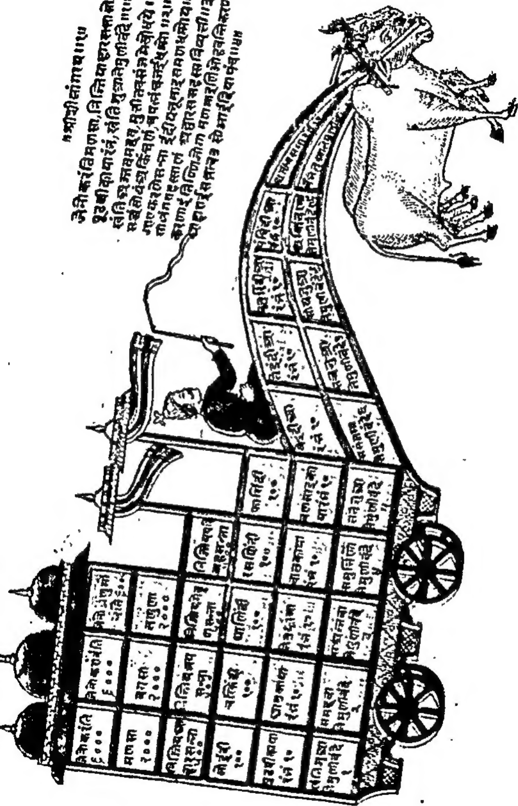
प्रस्तावना.

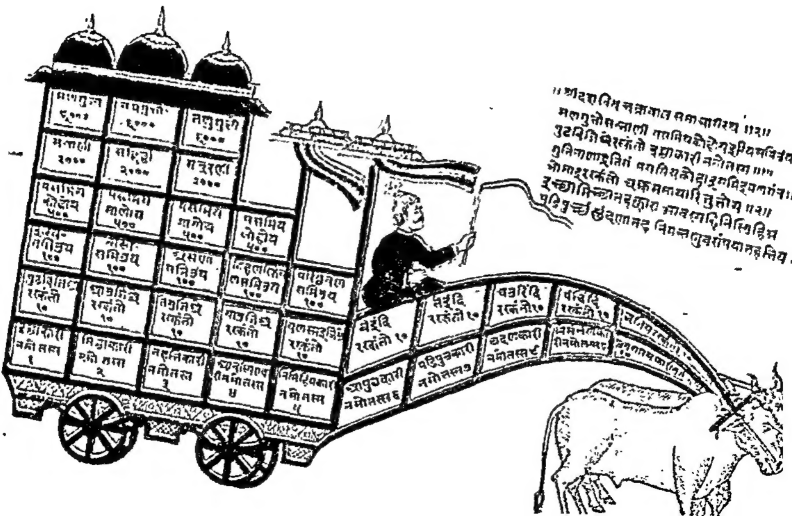
आ पुस्तक प्रगट करवानो हेतु ए छे जे साधु साध्वीजी महाराजने सज्झाय ध्यान माटे घणा रथ अति उपयोगी अने जवल्लेज मळी शके छे माटे ते छपावी प्रसिद्ध करवा योग्य छे एम केटलाक साधु महाराज तरफथी कहेवामां आव्युं तेथी छपावी प्रगट कर्युं छे. हवे ते पुस्तकनी हस्त लीखीत प्रत एक, महाराजजी साहेब सुखसागरजीए डीसेथी ते काम माटे प्रथम मोकली तेनी नकल करावी लीधी. पछी वडोदरेथी पन्यासजी दानविजयजी महाराजे एक प्रत तेवीज आपी तेनी साथे मेळवणी करी रथ सुधार्यां. आटलुं छतां घणी भूलो रहेली मालम पडी ते उपरथी महाराज सिद्धिविजयजीए सुरत तेमना गुरुभाइ विनय विजयजी उपर मोकलावी आपी अने असल मूळनी गाथाओ सुधरावी. त्यार पछी महाराजजी साहेब सुखसागरजीना उपदेशथी पाणतमे महाराजने वांदवा आवेला भाइ उत्तमचंद खेमचंदे आ पुस्तक प्रगट करवामां मदद तरीके रु. ४६-४-० मोकली आप्या. ते मोटा उपकार साथे स्वीकार्या अने काम शरु कर्युं. पण आटलेथीज ते कामपार पडे एम नहोतुं. तेथी वधु प्रयास करी घणे ठेकाणे ते बाबतनी समजण पाडी तेमां मदद मागतां छेवटे डभोइथी महाराजजी साहेब गुणविजयजीना उपदेशथी रु. २५५-०-० मोकलवामां आव्या. तेथी आ काम वधारे सगवडथी अने झडपथी चलाववा मांड्युं.

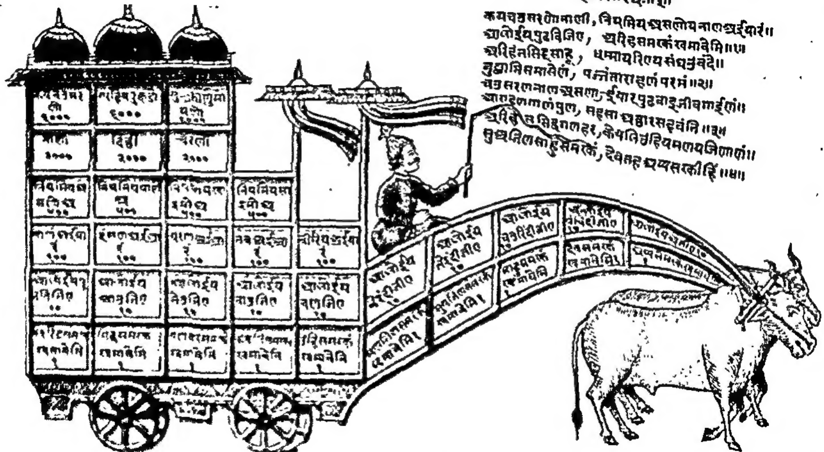
प्रथम तो आ पुस्तकनी अंदर एकला सादा एकवीस रथ छापवानो विचार हतो. पण एटलुंज करवाथी थोडा ज्ञानवाळाने अर्थनी समजण नहि पडे माटे अर्थ समजाववानी वधारे आवश्यकता जणायाथी तजवीज करतां वकील केशवलाल प्रेमचंद तरफथी तेनी संस्कृत छाया सहित समजुतीनुं लखाण तेमणे पोते करेलुं तैयार हतुं ते मळ्युं तेथी वधारे आल्हाद साथे तेमांथी छुटा दबोना अर्थनी गोठवण मारा मोटा बांधव हीराचंदे करी आपी.

हवे आवी रीते मेटर तैयार करतां वारेघडीए मागधीमां अथवा अर्थमां समजण न पडे त्यारे नागोरी तपागच्छिय भट्टारक सूरिश्वरजी भ्रातृचंद्रजी महाराजे पोतानो अमूल्य वखत रोकी तेमां भूलो सुधारी आपी माटे तेउ साहेबनो उपकार मानुं छुं. तेमज बनारसना पंडित भगवानदास हरखचंदे एथनुं लखाण सुधारवामां पोतानो किंमति वखत रोक्यो ते माटे तेमनो उपकार मानुं छुं. आ पुस्तक बहार पाडवामां जे जे उदार जैनीभाइओए मदद आपी छे. तेमनां मुबारक नाम मोटा उपकार साथे पुस्तकनी अंते जाहेर करवामां आव्यां छे.

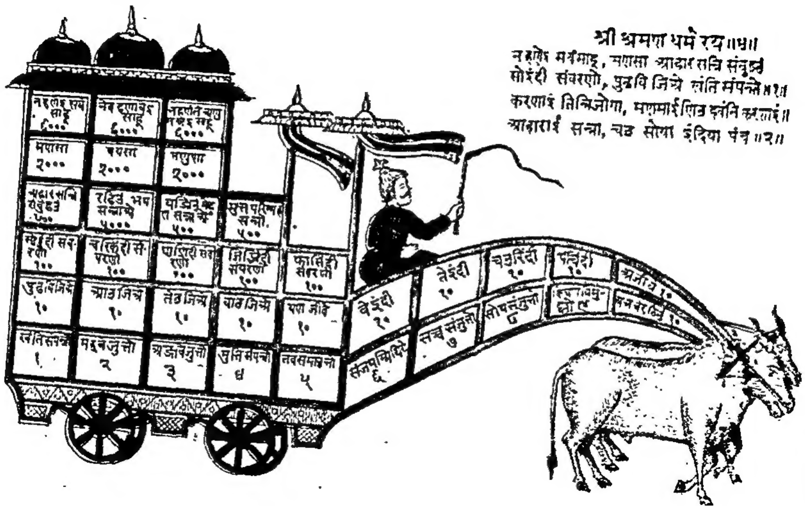
आ पुस्तक छपावी बहार पाडतां प्रुफ सुधारवामां बनती काळजी राखतां छतां कंपोझीटरोनी सुधारवामां कसुर रही जवाथी अथवा तो मारा दृष्टिदोषथी या मति मंदताथी कानो, मात्रा, मींडी, अक्षर उलटपालट विगेरेनी भूलो रही गइ होय तो तेने माटे हुं मिच्छामिदुक्कड देउं छुं तथा वांचकवर्गने सुधारी [illegible]

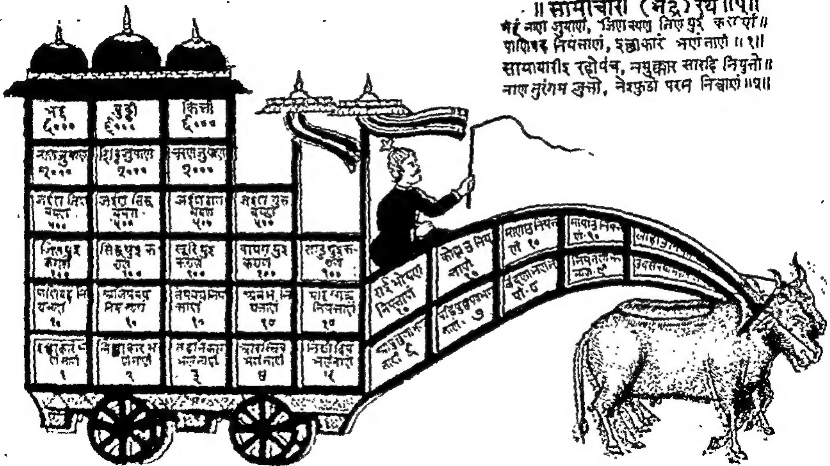






कयचउसरणोमाली, निम्मियक्खसलोयनाणअईयारं॥
खामेईय पुढविजिए, अरिहसमक्खं खमावेमि ॥१॥
अरिहंतसिद्धसाहू, धम्मायरिय य संघ वंदे॥
सुद्धासिसमासेलं, पंचनमाराहणं परमं ॥२॥
चउसरणनालखमणा-ईयारपुढवाईजीवखाईलं॥
आराहणाणंपुल, महला चउहारसइवंनि ॥३॥
अरिहंतसिद्धनलहर, कैपलितिहियमणयजिणाणं॥
सुद्धनिलसाहुसेनक्कं, देवतहसयसक्कीहिं ॥४॥


श्री श्रमण धर्म रथ ॥४॥
तेइंदी
१०
चउरिंदी
१०
बेइंदी
१०
मद्दवजुत्तो
२
अज्जवजुत्तो
३
२०००
२०००
२०००



॥ सामाचारी (भद्र) रथ ॥५॥
पाडिवइ निमंत्ताणं, इच्छाकारं भणंताणं ॥१॥
सामायारीइ रहोयंच, नमुक्कार सारहि निउत्तो ॥
नाण तुरंगम जुत्तो, नेइफुडो परम निव्वाणं ॥२॥

अहनिसि रायकुंयारिसहस सेवइं पय भत्तिहिं ।
जाणइ नाणनिहाण माण पुण नाणइ चित्तिहिं ।
दिणदिक्खिय देक्खिय आवतु द्रमक साधु सा ऊठि करी ।
अभिगमण नमण वंदण विणय सुणइ वयण आणंदभरी ॥ ५
घाणारसिनयरीनरिंद नामिहिं संवाहण ।
पुर अंतेउर पवर अवर हय गय बहु साहण ।
कन्नासहस सुरूव अछइ पुण पुत्त न इकय ।
राय पत्त पंचत्त लच्छि लियइ रिउ ढुक्कय ।
नेमित्तियवयणि राणीउयरि कुंयर जाणि पट्टिहिं चविउ ।
तिणि अंगवीरि अरि त्रासुयी रज्जबंध सहु राहविउ ॥ ६ ॥
कियसिंगारउदार अंग आरीसइ पिक्खइ ।
पाणी पडी मुंद्रडी सयल तणु तिणिपरि दिक्खइ ।
अंतेउरआवासि पासि भयवासि विरत्तउ ।
भरहेसर वरझाण नाण केवल संपत्तउ ।
एउ चक्कवट्टि विसयारसिहिं रमइ रंगि जणु इम गणइ ।
तसु अप्पकज्ज अप्पिहिं सरिउं किं परजणजाणावणइ ॥ ७ ॥
सेणिय करइ पसंस दुमुहदुव्वयणि निवारइ ।
रायरिसि कासग्गि रहिउ रणि अरिअण मारइ ।
सिरकरकज्जि सिरि हत्थ घल्लि संजम संभालइ ।
मनिहिं बद्ध बहु पाप आप आपिहि पक्कालइ ।
गति कहइ वीर सत्तम नरय मगहराय अचरिज भयउ ।
तिणि समइ देव जय जय भणइं प्रसनचंद केवलि जयउ ॥ ८ ॥
भरहसरिसु बल झुज्झि वुज्झ संजम अणुसरयु ।
कुण वंदइ लहुभाय ठाय तिणि कासग्ग करयु ।
इह ऊपानं नाण माण धरि वच्छर रहियु ।
सहइ सुक्क बहु दुक्क तह वि न हु केवल लहियु ।
नियवहिनिवंभिसुंदरिवयणि मयमयगल जय परिहरइ ।
रिसहेसरनंदणबाहुवलि सयल कज्ज तरक्खणि सरइ ॥ ९ ॥
कहिय इंदि अतिरूप सुणिय सुर बंभणवेसिहिं ।
पुहवि पत्त मन्नणइ रूप पेक्खइं सुविसेसिहिं ।

कियसिणगार सणंकुमार नरनाह निरंतरु ।
हक्कारइ अत्थाणि जाणि आवि देसंतरु ।
खणि देहि हाणि इम वयण सुणि रज्ज छंडि संजम ग्गहिउ ।
सयसत्त वरिस चारित्तधर सहइ रोग लद्धिहिं सहिउ ॥ १० ॥
करइ रज्ज कंपिल्लनयरि छक्खंडनरेसर ।
जाइसमरणि जाणि पुव्वभवबंधव मुणिवर ।
बोहइ बहु उवएस सहसि पुण सोइ न बुज्झइ ।
भोग भवंतरि बद्ध तिण विसयारस मुज्झइ ।
सो बंभदत्त वेभणि किउ अंध अधिक पातग करी ।
संपत्तउ सत्तउ सत्तमनरगि सु जि साधु पत्त सिद्धहं पुरी ॥ ११ ॥
सेणियकुलि कोणियनरिंदसुय नियइ उदाइय ।
पाडलिपुरि गुरुभत्त रत्त पोसहसामाइय ।
खत्तियपुत्त जाणि तिणि देसह कड्ढिउ ।
उज्जेणि पज्जोयराय ओलगइ अणिड्ढिउ ।
इणि वयरि अवर अलहंत छल वरिस बार व्रत धारयुं ।
तिणि दुट्ठि तह वि अवसर लहवि निय उदाइ निसि मारयु ॥१२॥
चंपापुरि सुंनार नारिसयपंचह सामी ।
सासिमत्त अहरत्ति गेह नवि छंडइ कामी ।
तिणि मारी इक नारि अवरनारिहिं सो मारीउ ।
पढम भव्व नररूपि विप्पकुलि सो पुण नारीउ ।
सयपंच भव्व जे चोर तस घरणि इक्कु सा नारि हुय ।
पहुवीरपासि पुच्छइ सु नर जा सा सा सा विप्पभूय ॥ १३ ॥
कोसंबो ससि सूर वीर वंदइ सविमाणय ।
मिग्गवइ महासत्ति जंत चंदण नवि जाणइ ।
निसि एकल्ली जाइ पाइ लग्गेवि खमावइ ।
पडिवज्जइ नियदोस रोस मिल्हइ मिल्हावइ ।
सुहभावि शुद्ध केवल भयु भुजग विनाणिहिं जाणियउ ।
जिम पवत्तणी स भवपार गय विनय अंगि तिम आणियउ ॥१४॥
जंबूकुमर विलासभवणि पडिबोहइ भव्वह ।
प्रभव पंचसयजुत्त पत्त तहिं परधणकज्जह ।

कणयनवाणुंकोडि छोडि व्रत वंछइ सुहमणि ।
तं पिक्खवि तसु वयणि सयल पडिबुज्झइ तरुणि ।
सगवीसअधिकसयपंचसिउं रायगिहि संजम लयउ ।
सो दूसमि पंचमगणहरह सीस चरिमकेवलि भयउ ॥ १५ ॥
सुंसुमरागिहि रत्त पत्त रायगिहिनयरिहिं ।
दास चिलाइपुत्त जुत्त धणधरि बहुचोरिहिं ।
कुंयरि करीय करि नट्ठ दुट्ठ अडविहिं अणुसरिउ ।
याहर पत्तउ पुट्ठि सिट्ठि पुत्तिहिं परिवरिउ ।
सो रिक्कि दिक्खि ग्रिहु अक्खरिहिं स्वग्गसीस छंडइ करम ।
कीडियहं कट्ठि अदइ दिवसि सहरसारि दीसइ परम ॥ १६ ॥
जायवपुत्त जिणिंदसीस ढंढण गुणजुग्गह ।
अंतराय जाणिइ लेइ नियलद्धि अभिग्गह ।
बारयइं छम्मास भमइ मुणि रमइ समिद्धउ ।
भुरक दुक्क बहु सहइ लहइ आहार न सुद्धउ ।
मोदकचूर्णाइकम्मरसहिय कम्मि कहि केवल कलिउ ।
गंरस सिद्धि मंगसि सुह तपतरु इम पुष्फिय फलिउ ॥ १७ ॥
मुंनि ति पंडियपवर अमरकुमरपणि न कुप्पइ ।
खंदगसिरिमुणीस जेम आगार न लुप्पइ ।
पालगकरउवसग्ग लग्ग मण नाहं सरझाणिहि ।
[illegible] मिलह [illegible] ।
सो अभिनवइ नागिहिं गयउ [illegible] अमिलिइ पगउ ।
सो [illegible] इम [illegible] कणउ ॥ १८ ॥
पुत्रइ सुरवर [illegible] निनु नमइं निरगल ।
[illegible] सारइं समगल ।
[illegible] जिम [illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ॥ १९ ॥
[illegible] न [illegible] ।
[illegible] मम [illegible] ।

सुणवि तासु गुणवत्त रत्त धणसिद्धिकुमारी ।
कणयकोडिसंजुत्त पत्त सासइं वरनारी ।
गुरुरयणवयणपडिबोह सुणि सुद्धसीलसंजमि रहि ।
जिम तेणि मुक्क निम मुक्कइ रमणि रयणकोडिहिं सही ॥ २० ॥
नंदिसेण दोहग्गनडिउ निद्धणबंभणसुय ।
भवविरत्त चारित्त गहवि नव तवइ अचब्भुय ।
वेयावचपसंस इंदकियकसिहिं पहुत्तउ ।
बंधिय अंनि नियाण सग्गि सत्तमि सो पत्तउ ।
दसचउरसारनरखयरधुयसहसबहुत्तरिरमणिवर ।
सोहग्गसार वसुदेव हुय हरिकुल वंसपयासकर ॥ २१ ॥
पत्त दिवसि चारित्त कन्हलहुबंधव रयणिहिं ।
गयसुकुमाल मसाणि रहिउ कासग्गि जिणवयणिहिं ।
बंभणि बंधवि पालि सीसि चइसानर दिद्धउ ।
सिरह सरिस दुक्कम्म दहवि मुणि तक्कणि सिद्धउ ।
तस दुद्धुरियभारभूरिय उयर फुट्ट नरय ग्गमह ।
जिम सहिउं तेणि तिम संसहु लहु लच्छि सुपरक्कमह ॥ २२ ॥
थूलभद्द गुरुवयणि कोसवेसाहरि पत्तउ ।
चित्तसालि चउमासि रहिउ रसविगइनिरत्तउ ।
पुव्ववेर संभारि समर समरंगणि जित्तउ ।
जिणसासणि जयवंत सुहड सुपरिहिं विदित्तउ ।
खरखग्गधारसिरि संचरिउ सरिउ सीह जिम इक्कमन ।
जं सीलभाव दुद्धर धरइं ते सुसाहु ते धन्न धन ॥ २३ ॥
तयसी इक्क उपकोसगेहि गिउ गुरु अयमछिय ।
थूलभद्दमुणिसरिसु करिसु तव इम मनि मछिय ।
अत्थलाभ सुणि वयण रयणकंबल भणि चल्लइ ।
सहवि अवत्थ सुवत्थ आणि वेसाकरि मिल्हइ ।
चंपवि ख्वालि पडिबोहिउ मुगुरुपासि पत्तउ भणइ ।
निंदाइ लोकि सो गुरुवयण अप्पमाण इह जो कुणइ ॥ २४ ॥
गुणिअणसरिसउं गव्व म करि मूरख मच्छरि चमि ।
न हु निव्वडइ समत्थ जइ वि गहइ गयमरकसि ।

सुहडभणी संभूतविजय दुक्कर ति पसंसिय ।
तसु सीसिहिं पुण थूलभद्दमुणिवरगुण लिंसिय ।
तिणि कम्मि कोसवेसिहिं नडिऊ चडिउ हत्थ दुज्जणतणइ ।
अपकित्ति अलिय अज्ज वि अजस महिमंडलमाहि रणझणइ ॥ २५ ॥
म करउ मच्छर माण जाण सरिसउ जगि कोइ ।
पूरउ पुण्य प्रभावि पावि पुण हीणउ होइ ।
बाहुसुबाहु सुसाहु सुणवि गुण किउ मनि मच्छर ।
तिणि हीणत्तण पत्त पीढमहपीढिहिं दुहकर ।
परजम्मि बंभिसुंदरि सुधूय महि महिला महियलि मुणउ ।
सिरिरिसहभरहबाहुबलिहिं त्रिहुं प्रभाव पुन्नहतणउ ॥ २६ ॥
अणगल नीर विचार सुहम जीवाइअरक्खण ।
इण कारणि बहुकट्ठ अप्पफल कहइ विचक्खण ।
छड्डिहिं सट्ठिसहस्स वरिस तप तपइ अज्ञानिहिं ।
पारण पुण इकवीसवारजलधोइयधानिहिं ।
सो तामलि रिसि परिस नवा मास वुझि अणसणि सरिउ ।
ऊणाम्र इंद्र ईसाणि तिणि मुक्खमग्ग न हु अणुसरिउ ॥ २७ ॥
धम्मरयणचिंतामणि जाणि जग उत्तमसंगिम ।
नरवरविगहणि जाइ माइ पुत्ताइ पभणइ इम ।
आवि इक्क मगण पुत्त पत्त सेणिय तुह मंदिर ।
लेउ क्रियाणउं माइ ठाइ ठावउ जिणि तिणि परि ।
न कयाणउं कुइ एउ मामि मुज्झ सालिभद्द स पभणइ सुणि ।
भवयामविरत्त चरित्त लिइ छंडि मुक्क सहु कणगमणि ॥ २८ ॥
अवंतीसुकुमाल नयरि उज्जेणि वसिवउ ।
नलिनीगुल्मविमाण सुणवि सम्मणि पडिबुद्धउ ।
अज्जसुहत्थिमुणिंदहत्थि वय लेवि मसाणिहिं ।
कासग्गि रहिउ सीयालि भक्ख मण लग्गु विमाणिहिं ।
सुरहाणि उपवि तिणि सुर हुआ रमणि वलिवि वन लिइ ।
तसु नंदणि तिणि थानकि पवइ महाकालदेहल किउ ॥ २९ ॥
रायरिद्धि छंडेवि नवकवयर विहारिउ ।
दुल्वंतिलव मुणि कोवि रिपु दुण्णिहिं ल्हारिउ ।

विहरंतउ तिहिं पत्त सुद्दसोनारह मंदिरि ।
कौंचि कणय जव खद्ध यद्ध वद्धउ तिणि तस सिरि ।
दघाइ दिट्ठि दुइ नीकलीय दलिय धरणि निचलु भयउ ।
तस पंखिप्राण रक्षा करी धरी ध्यान सिद्धिहि गयउ ॥ ३० ॥
धणगिरिघरणिसुनंदउयरि जायउ जाईसर ।
छम्मासिउ पिउपासि वयर संपत्तउ वयधर ।
तस समीवि मुणिकज्ञि गुरिहिं वायण अणुजाणीय ।
धन्न सीहगिरिसीस जेहिं मन्निय इय वाणीय ।
जे माणगण मनि परिहरी सुगुरुवयण इम सद्दहइ ।
ते सुद्ध साधु सुकुलीण सयिगुणनिहाण गुरुयडि लहइं ॥ ३१ ॥
संगमसूरि गिलाण वासि संजमविहि रक्खइ ।
धम्मच्छलि नस सीस दत्त गुरुदोस निरिक्खइ ।
चित्तविहार सचित्त पिंड अंगुलि दिप्पंतिय ।
नित्यवास नितु सरसु असणु दीयय मणि चिंतिय ।
मन्नंतउ मुनि अप्पउं सगुण निगुण भणवि गुरु परिभवइ ।
घांरंधयार घण सह करि सम्मदिट्ठि सुर सिक्खवइ ॥ ३२ ॥
वद्धमाण विहरंत नयरि सावत्थिहिं आवइं ।
गोसालउ चउसाल आप नित्थयर भणावइ ।
मंखलिपुत्तासरूय कहइ पहु पुच्छिउ सीसिहिं ।
जिणवरसंमुह मुक्क तेउलेसा तिणि रीसिहिं ।
तं पिक्खि सुगुरुपरिभव असह सुनक्खत्त मुनि विचि थयउ ।
तिणि तेजि दद्ध आराधना करवि सग्गि अच्चुनि गयउ ॥ ३३ ॥
नाहियवादि नरिंद नयरि सेतंबी पएसी ।
पाससीस विहरंत पत्त तहिं गणहर केसी ।
नरयगमणि इकचित्त सुगुरुवयणिहिं पडिबोहिउ ।
सावयधम्म सुरम्म करवि तिणि अप्पउं मोहिउं ।
सहुकालि काल करि सु जि सरिउ सूरिआभसुविमाणि सुर ।
इम दुरियदुरुक दूरिहिं हणी सयल सुरक साधइ सुगुरु ॥ ३४ ॥
तुरमिणिपुरीनरिंद दत्त बंभणकुलि बहुबल ।
माउलकालिगसूरिपासि पुच्छइ जन्नह फल ।

वंभणभज्ज सगब्भ हणिय वालक फुरकंतउ ।
पिक्खवि भववेरग्गि लेइ संजम दिप्पंतउ ।
संभरणअवधि छंडिय असण तिणि ज गामि छम्मास रहि ।
अक्कोस वंधवह दुसहसह सिद्धि पत्त दुक्कम दहि ॥ ४५ ॥
वीरसेणसेवक्क सहसमल्ल त्ति पसिद्धउ ।
कालसेनरिउराय जेण विहुवांहिहिं वद्धउ ।
तिणि गुणि संखनरिंदि किद्ध सामंत चिदित्तउ ।
वेरग्गिहिं व्रत लेवि तीण अरिदेसि पहुत्तउ ।
पचारिय पूरव वाहुवल कालसेनि कुट्टाविउ ।
सव्वट्ठसिद्धि सुरवर सरिउ कोह कह वि तस नाविउ ॥ ४६ ॥
सावत्थीनिवकणयकेउसुय खंदग नामिहिं ।
दिक्ख लेवि जिणकप्प करइ विहरइ पुरगामिहिं ।
व्रत लिद्धइ तस ताय नेहि सिरि छत्त धरावइ ।
तह वि अवद्धउ वंधुपासि कंतीपुरि आवइ ।
तस वहिन सुनंदा रायघरि मग्गि जंतु तिणि दिठ्ठ मुणि ।
नरवरि अलीकशंका धरिय हरिय प्राण तस तिणि रयणि ॥ ४७ ॥
दीरघसिउं रइरत्तचित्त चुलणी मयणातुरि ।
वंभदत्तनियपुत्तदहण दक्खइ लक्खाहरि ।
वरधन मंत्रि सुरंगसंगि रक्खिउ परपंचिहिं ।
फिरिय फिरिय महिमज्झि रज्ज पुण लहइ सुसंचिहिं ।
इह कस्स कोइ न हु वल्लहउ भवसरूप नडपिक्खणउं ।
मुहियां जि मूढ मोहिय भणइ हणइ कज्ज पर तह्लणउ ॥ ४८
तेयलिपुरि निव कणयकेतु पउमावइ राणी ।
मंत्री तेयलिपुत्त भज्ज तस पुट्टिल नाणी ।
जाय मत्त सवि पुत्त राय निय लोभि मरावइ ।
राणी मंत्रि कहेवि एक सुय छन्न रहावइ ।
नरनाह पत्त पंचत्त सु जि कुंयर राय महतइ कियउ ।
महतउ पुण पुट्टिलसुरवयणि पडिवुद्धउ केवलि थियउ ॥ ४९ ॥
रज्जलोभ मनि धरवि भरह पहुत्तउ समरंगणि ।
वाहुवलिहि तहिं दिट्ठिमुट्ठिमुज्झिहिं जित्तउ खणि ।

रोसि चडिउं रणि चक्क भरह बाहुबलि मिल्हइ ।
धिग विसयारसि लुद्ध मुद्ध सामन्नसुह छिल्लइ ।
इम चिंति चिति संजम सबल बाहुबलि कासगि रहिउ ।
भरहेसर पत्त अउज्झपुरि भायनेह किलिम कहिउ ॥ ५० ॥
भज्ञा विसयविकारिभारि पडमागणि चल्लइ ।
सुरियकंत कन्हा भत्तभोलरि विस यल्लइ ।
रायपएसि सुधम्म रम्म पोसहवय पालिय ।
करइ पारणउं जाव ताव मरणि विवि वालिय ।
सुहझाणि ठाणि निअ आणि मण मरणमंतहि संचय सूर ।
दुद्धमचारि मा नारि पुण भमइ भूरि भव अंतकर ॥ ५१ ॥
सीरवयणि जाणेवि नरय रंजिय चित्तइ मनि ।
कोणिय रज्ज ठवेवि तेम संजम जाइ वनि ।
हड्डुविहड्डइं हार गुण्णमयथभिय दिन्नउ ।
पूव वती कोणिकि रायरंजिय मय वन्नउ ।
निग्गनाय चडुपंजरि धरी आण पाण वे रहइ ।
सयपंच घाय दिति दिवि दिवस पुत्तनेह नरिस दहइ ॥ ५२ ॥
पणिगपुत्त चाणिक्क कवड बहुबुद्धि विधाणइ ।
चंदगुत्तसमाहिअकज्जि पब्वयविसि आणइ ।
ननसुरितिरि अतिनिसि करिय अविवेकिय टालिय ।
चंदनरिंदह रज्जनयरि पाडलि उद्धालिय ।
चिरकाल जाणि परिपालियउ सो वि विनु अणपुरि रुमइ ।
निरुकझ करवि विहडिउ धणइ विसनेह नरिंद नयड ॥ ५३ ॥
परसुराम जमदग्गिपुत्त रेणुयअंगुब्भव ।
कत्तविरिय नरनाह हणइ मातासुय दुब्भव ।
अप्पण पइ तस रज्ज लेवि हत्थिणपुरि रहियउ ।
खत्तियवंस असेस परसुरामि किय रहियउ ।
निवसणि नइ पच्छन्न ठिय तस सुभूम सुय भवदहइ ।
निद्दहइ वंस खंभणतणउ निययनेह नरिस हवइ ॥ ५४ ॥
अज्जमहागिरिसूरि सूरिअखवणबोधावारय ।
सिद्ध जिणकप्पि करवि तस्स सुहत्थि आइरायय ।

कुलयरनियसुहसयणसंग निस्सा सवि छंडिय ।
अपडिवद्धविहारसार संजमगुणमंडिय ।
सावयघरि अन्नसुहत्थि गुरि गुणपसंस हरपिहिं करिय ।
अइआदर दिक्खि सुकारणिहिं पाडलपुर तिणि परिहरिय ॥ ५५
सेणियधारणिपुत्त मेह भवन्न विमुक्किय ।
वीरपासि वय लिद्ध बुद्धि निसि संजम चुक्किय ।
पुव्वजम्म परिकहिय पुण वि थिर किद्धउ वीरिहिं ।
बहुजइजणसंघट्ट सहइं अइदुसह सरीरिहिं ।
सो रायवंसअवयंसमणि मणिन अप्प तृणसम गणइ ।
नारइ विजयवेमाणि सुह रहिउ सिद्धि घरअंगणइ ॥ ५६ ॥
नंदयभूपसुजिइगुन्नन्दासइअंगुब्भम ।
विज्जाहरपेरालपुणु विज्जावलदुद्दम ।
[illegible] अंग इग्यारह जाणइ ।
[illegible] अंगि अतिरूपण आणइ ।
[illegible] करवि कुड केला कणिउ ।
[illegible] निमरदास परिस भणिउ ॥ ५७ ॥
[illegible] केवलनाणी ।
[illegible] निसुणइ जिणवाणी ।
[illegible] मुणिवरवंद निसिवंदणि वंदइ ।
[illegible] निम्मल निंदइ ।
[illegible] केला करइ ।
[illegible] करइ ॥ ५८ ॥
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ॥ ५९ ॥
[illegible] ।
[illegible] ।

निसि चंपइ अंगार सुणविण मद्दइ प्राणिउ ।
तव अंगारयमद्द सूरि अभविय इम जाणिउ ।
ते सीस सवे निवपुत्त हुय सूरि करइ वक्करभरिउ ।
तिहिं देखि सयंवरि आवने पुव्वजम्म तक्खणि सरिउ ॥ ६० ॥
पुप्फचइसुय पुप्फचूल भइणी तह भज्जा ।
सुमिणि नरयसुह देखी पुप्फचुला वयसज्जा ।
अन्नियसुयगुरुकज्जि खीणजंघाबल जाणी ।
आणंती सा भत्तपाण हुय केवलनाणी ।
पुच्छेइ सूरि मह नाण कहिं सु पण गंगभीतरि कहइ ।
तव बुहुदेवि उवसग्ग सहि सुगुरु तत्थ केवल लहइ ॥ ६१ ॥
सिद्धि पत्त मरुदेवि तवविहिविणु इणि आलंबणि ।
के वि करंति पमाय ति पणि अच्छेरयसम गिणि ।
जिणि कारणि पुव्वंमि जम्मि थावरतरुभीतरि ।
बोरिसंगि बहु अंगि सहिय दुह कम्म विनिज्जरि ।
सुहभावि पावि परिसुक्कमण सरलसार संतोसमय ।
जिणणि नाभिकुलगरघरणि रिसह झाणि निव्वाणि गय ॥ ६२ ॥
लद्धि पत्त पत्ते य बुद्ध सुहसिद्धि समाणइ ।
अच्छेरयसमतुल्ल तुल्ल किवि ते मनि आणइ ।
निहिसंपत्ति स चित्ति धरवि वियसाय ति छंडइ ।
सामग्गी परिहरिय करिय पातग निय दंडइ ।
करकंडुदुमुहनमिनग्गइ निहुचरित्त चिंतिय सुपरि ।
धरि धम्म रम्म उज्जमसहिय मुद्ध माय अपमाय करि ॥ ६३ ॥
ससगभसगनियपुत्तयहिणि सुकुमालिय कुमरी ।
चंपापुरि चारित्त लेइ रूविहिं किर अमरी ।
फिरइ तरुण तस पासि रागि रत्ता गयगमणी ।
रक्खइ बंधव वेउ लेइ तिणि अणसण समणी ।
बहुदिवसि तापि तपि मूरछागुइय जाणि यति परठवी ।
ओसहविसेसि सु जि सज्ज करि सत्थवाहि गेहिणि ठवी ॥ ६४ ॥
सु बट्ठमासपरिवारसार सिद्धंतपिवित्तउ ।
महुरापुरि सिरिमंगुसूरि रसणिदिइं जित्तउ ।

नयरन्नालि उप्पन्न जक्ख बहु दुक्ख निहालइ ।
सुविहियजणपडिबोहकज्जि नियजीह दिखालइ ।
जिप्पइ मुणिंद रसणिंदियइ अणजित्तइ परिसु हुउ ।
जग्गइ जि जोग जुगतिहिं सदा म म म मोहनिद्रां सुउ ॥ ३५ ॥
गिरिसुय ग्रहिउ पुलिंदि पुप्फसुय तवसी सेवइ ।
सुयडा अडवीमज्झि अछइ पक्खोदर वेयइ ।
इक्क भणइ लिउ मारि अवर पुण विणय पयासइ ।
अंतरसंगविसेसि दोस गुण नरनइपासइ ।
इम जाणि निगुणसंगति तिजउ सगुणसंग अणुदिण करउ ।
झगमगइ जेम जगमज्झि जस भवसमुद तक्खणि तरउ ॥ ३६ ॥
सिरिथावचापुत्तसूरि सुकसूरि अणुक्रमि ।
सेलगसूरि पमायपंकि पडियउ अइदुद्दमि ।
गया सीस सवि छंडि एक्क पंथग मुणि रहिउ ।
खामंतइं पगि लागि पव्ववासरि तिणि कहियउ ।
मिपमहुरवयणि सुनिपुणपणइ ठविउ सुद्धसंजमि स गुरू ।
सो सूरि पुण वि चारित्त वरि सित्तुंजय सिद्धउ सधर ॥ ३७ ॥
सेणियनंदण नंदिसेण बारस संवच्छर ।
वीरसीस वय छंडि वेस धरि वसइ समच्छर ।
दस प्रतिबोध्याविणु न लेइ आहार निरंतर ।
इक्क न बुज्झइ भणइ वेस दसमा तुम्हि सुंदर ।
इण वेसवयणि पुण वेसधर चरण वरवि सुर संपजइ ।
इप जस्स सत्ति देसुणतणी अहह सो वि संजम तिजइ ॥ ३८ ॥
वरससहस तव कट्ठ करिय कंडरिय न सुद्धउ ।
अंति दुट्ठपरिणाम कामवश नरयनिबद्धउ ।
अचिरकालि परिपालि सुद्ध संजम संपत्तउ ।
पुंडरीक सव्वट्ठसिद्धि सुहयुद्धिनिरुत्तउ ।
बहु दुक्ख महवि नवि लद्ध सुह अप्प दुक्खि बहुसुख लहिउ ।
विहु बंधव एवड अंतरउ भावभेदि भगवनि कहिउ ॥ ३९ ॥
नयरि कुसुमपुरि राय भाय दुइ मसि सुरप्पह ।
मर्मा न मन्नइ धम्म रम्म मन्नइ विसयासुह ।

तपजपविण सो पत्त नरगि खीजइ दुहतत्तउ ।
करवि सूर दुहचूर सग्गि सत्तमइ स पत्तउ ।
ससि रडइ सूरसुरअग्गलिहिं तणु तच्छिय दुह दिक्खवउ ।
सो भणइ जीय विणु तणु दहिहिं नरयदुक्ख किम रक्खिवउ ॥ ७० ॥
सुग्गइमग्गपईव नाण जे दियइं निरुप्पम ।
तिहं गुरु किं पि अदेय नत्थि जगमज्झि जगुत्तम ।
दिट्ठउ जेम पुलिंदि सिवगजक्खह नियलोयण ।
तिण सरिसउं सुर पत्त करइ भत्तह दिय खोयण ।
केवलइं दाणि तूसइ न गुरु अंतरंगभत्तिहिं वरइ ।
तिणि कारणि बिहुपरि करि विणय जिम बाहिरि तिम अंतरइ ॥७१॥
अंबचोर चंडाल चडिउ अभयडकरि कंपइ ।
दय नामिणी सुविज्ज मज्झ इम सेणिउ जंपइ ।
विणयविवज्जिय विज्जकज्ज करिवइ नवि जग्गइ ।
सिंहासणि बइसारि भारि गुरु करि सो मग्गइ ।
ओ कहइ विज्ज ओ लहइ फल बिहुह कज्ज तक्खणि सरिउ ।
इण कारणि जिणसासणि विणय सुगुरु सीस अणुक्कमि करिउ ॥७२॥
दगसूयरउ तिदंडि नामलित्ती पुरि अच्छइ ।
नापितपासि सु विज्ज लेवि देसंतरि गच्छइ ।
महिमा मोट्टिम पत्त दंड गयणंगणि रहियउ ।
पुच्छिउ नरवरि जाम ताम सचउ नवि कहियउ ।
गुरुलोपि कोपि विज्जा गई गयणदंड गडगडि पडिउ ।
लज्जियउ लोकि हसिउ सयलि इम सु नाणनिन्हवि नडिउ ॥ ७३ ॥
थंभण एक अनेकखुड्डकयडाइनिकत्तउ ।
उज्जेणिहिं कड्ढियउ देसि धम्मारि स पत्तउ ।
त्रिहुं गामहं विचालि करइ तप वेसि त्रिदंडी ।
भगतलोकघरसार मुसइ निसि सु जि पाखंडी ।
अहन्न डिउ हत्थि नरवरतणइ नंयण कड्ढि नडियो घणउ ।
बहु झुरइ अति सोचइ सु चिर निंदइ निपकुडरक्खउ ॥ ७४ ॥
दुद्दरंग दरदेव कुट्ठिरूविहिं पहु वंदइ ।
छींक करइ जव वीर ताम मरि कहि अभिणंदइ ।

सेणियप्रति चिर जीव अभयप्रति जा चड विहुपरि ।
कालसूरप्रति कहइ म मरि म म जीविय अणुसरि ।
मगहेसर पुच्छइ ए कवणु कवण एस परमत्थ पुण ।
जिण भणइ विप्पसेट्ठियचरिय चिहु प्रकारि नरआचरण ॥ ७५ ॥
यरि अंगमीइ मरण सरण जिणधम्म धरिज्जइ ।
जियहिंसा पुण घोर घोरदुहहेउ न किज्जइ ।
कालसूरियह पुत्त सुलस जिम पाव नियारउ ।
परपीडा परिहरइ तरइ संसार असारउ ।
कुलकारण किं पि म लिक्कवउ गुणह रूप गुरुयडि धरउ ।
परलोगमग्ग जाणउं सुपरि कुपरि कुकम्म म आयरउ ॥ ७६ ॥
हेजिइ हित अरिहंत कह वि नवि प्राणि करावइ ।
तं पुण दिइ उपदेस जेण किद्धइ सुम्व आवइ ।
जं सुरवइ सुरवग्गि सग्गि एरावणवाहण ।
जं भरहाहिव रज्जसज्ज भुंजइ सुहसाहण ।
जं जं अवर वि सुरअसुरनरसुक्ख सुक्ख माणइ घणउ ।
तिहुयणह मज्झि तं सयल फल जिणवरउवएसहतणउं ॥ ७७ ॥
खत्तियकुंडि जमालि वीरजामाइ स्वत्तिउ ।
सुदंसणभत्तार सार वयभारपवत्तिउ ।
नवि मन्नइ किज्जंत किड इय आगमवाणी ।
निन्हवि तेण कुदिट्ठि दुट्ठि किय बहु गुणहाणी ।
नियकित्ति मुसिय सुर किव्विसिय मिलिउ मिच्छमइ मोहियउ ।
सयपंच साहु साहुणि सहस ढंकसड्ढि पुण बोहियउ ॥ ७८ ॥
जिम मासाहस पंखि मुखिहिं मा साहस जंपइं ।
थग्गवयणि पइसेवि मंस लिंनउ नवि कंपइ ।
तिम अवरह उवएस दिंति किवि फुडवयणसिरि ।
पणि अप्पणि न करंति रम्म जिणधम्म तणीपरि ।
वेरग्गवाणि नड उचरइ जलहि जालि पाणी गलइ ।
इम कम्मभारि भारिय भणी जाइ भूर भवजलतलइ ॥ ७९ ॥
धम्मदीप जिणराइ आणि दीवंनर दिद्धउ ।
अविरति सयल वि स्वद्ध देसविरते अध लद्धउ ।

पासत्थे पुण खुद्दि खित्ति म्हाइय सहु हारिउ ।
संजमि ए सुभखित्ति सव्व वावीय पद्धारिउ ।
त्रिहु भेदि जीव ते करसणी राजदंडि अप्पउं दहइ ।
सुचिहियमुणि रायपसायवसि सुख सुगालि लच्छी लहइ ॥ ८० ॥
इणिपरि सिरिउयएसमालकहाणय ।
तवसंजमसंतोसविणयविज्जाइ पहाणय ।
सावयसंभरणत्थ अत्थपय छप्पयछंदिहिं ।
रयणसींहसूरीससीस पभणइ आणंदिहिं ।
अरिहंतउवाण अणुदिण उदय धम्ममूल मत्थइ हउं ।
भो भविय भत्तिसत्तिहिं सहल सयल लच्छिलीला लहउ ॥ ८१ ॥
॥ इति श्रीउपदेशमालासर्वकथानकछप्पया ॥

समरारासु

पहिलउ पणमिउ देव आदीसरु सेत्तुजसिहरे ।
अनु अरिहंत सव्वे वि आराहउं बहुभत्तिभरे ॥ १ ॥
तउ सरसति सुमरेवि सारयससहरनिम्मलीय ।
जसु पयकमलपसाए मूरखु माणइ मन रलिय ॥ २ ॥
संघपतिदेसलपुत्रु भणिसु चरिउ समरातणउ ए ।
धम्मिय रोलु निवारि निसुणउ श्रवणि सुहावणउ ए ॥ ३ ॥
भरह सगर दुइ भूप चक्रवति त हूअ अतुलबल ।
पंडव पुहविमचंड तीरथु उधरइ अतिसबल ॥ ४ ॥
जावडतणउ संजोगु हूअउं सु दूसम तप उदए ।
समइ भलेरइ सोइ मंत्रि बाहडदेउ ऊपजए ॥ ५ ॥
हिव पुण नवी य ज वात जिणि दीहाडइ दोहिलए ।
खत्तिय खग्गु न लिंति साहसियह साहसु गलए ॥ ६ ॥
तिणि दिणि दिनु दिखाडु समरसीहि जिणधम्मवणि ।
तसु गुण करउं उद्योउ जिम अंधारइ फटिकमणि ॥ ७ ॥
सारणि अमियतणी य जिणि वहावी मरुमंडलिहिं ।
किउ कृतजुगअवतारु कलिजुगि जीतउ बाहुबले ॥ ८ ॥

ओसवालकुलि चंद्रु उदयउ एउ समानु नही ।
कलिजुगि कालइ पासि चांद्रिणउं सचराचरिहिं ॥ ९ ॥
पाल्हणपुरु सुपसीधु पुन्नवंतलोयह निलउ ।
सोहइ पाल्हविहारु पासभुवणु तहिं पुरतिलउ ॥ १० ॥

भास—हाट चहुटा रूअडा ए मढमंदिरह निवेसु त ।
वाविकूवआरामघण घरपुरसरसपएस त ।
उवएसगच्छह मंडणउ ए गुरु रयणप्पहसूरि त ।
धम्मु प्रकासइं तहिं नयरे पाउ पणासइ दूरि त ॥ १ ॥
तसु पटलच्छीसिरिमउडो गणहरु जसदेवसूरि त ।
हंसवेसि जसु जसु रमए सुरसरीयजलपूरि त ॥ २ ॥
तसु पयकमलमरालुलउ ए कक्कसूरि मुनिराउ त ।
ध्यानधनुषि जिणि भंजिअउ ए मयणमल्लु भडिवाउ त ॥ ३ ॥
सिद्धसूरि तसु सीसवरो किम वन्नउं इक्कजीह त ।
जसु [illegible] सलहिजए [illegible] त ॥ ४ ॥
तसु सीसामणि सोहइ ए देवगुप्तसूरि [illegible] त ।
[illegible] जिम सहसकरो उग्गमनउ जिण दीठु त ॥ ५ ॥
तिह पयपाटअलंकरणु गच्छभारधोरेउ त ।
[illegible] संजमतणउ ए [illegible] पहु त ॥ ६ ॥
संघ तसु [illegible] विचरेउ त ।
[illegible] लीलइ सफल करेउ त ॥ ७ ॥
[illegible] कुलि [illegible] अवतारु त ।
[illegible] नही ए [illegible] पारु त ॥ ८ ॥
[illegible] गुणिहि गंभीरु त ।
[illegible] आगइ जिणधम्मधीरु त ॥ ९ ॥
[illegible] अवतरिउ ए तसु पुत्रु [illegible] त ।
जसु [illegible] ए आराहइ जिणनाहु त ॥ १० ॥
[illegible] संसारि त ।
[illegible] त ॥ ११ ॥
[illegible] त ।
[illegible] त ॥ १२ ॥

द्वितीयभाषा-रतनकुपि कुलि निम्मली य भोलीपुत्तु जाया।
सहजउ साहणु समरसीहु बहुगुणिहि आया ॥ १ ॥
लहूअलगइ सुविचारचतुर सुविवेक सुजाण।
रत्नपरीक्षा रंजवइ राय अनु राण ॥ २ ॥
तउ देसल नियकुलपईव ए पुत्र सभग्र।
रूपवंत अनु सीलवंत परिणाविय कन्न ॥ ३ ॥
गोसलसुवि आवासु कियउ अणहिल्लपुरनयरे।
पुन्न लहइ जिम रयणमाहि नर समुद्र लहरे ॥ ४ ॥
चउरासी जिणि चउहटा परवमहि विहार।
मढ मंदिर उत्तंग थंग अनु पोलि पगार ॥ ५ ॥
तहिं अछइ भूपनिहिं भुवण समस्वणिहि पसत्थो।
विस्वकर्मा विन्नानि करिउ थापिउ नियहत्थो ॥ ६ ॥
अमियसरोवर सहसलिंगु इकु धरणिहिं कुंडलु।
कित्तिखंभु किरि अवतरेवि मागइ आखंडलु ॥ ७ ॥
अज्ज वि दीसइ जत्थ धम्मु कलिकालि अगंजिउ।
आयारिहिं इह नयरलणइ सचराचर रंजिउ ॥ ८ ॥
पातसाहि सुरताणभीपु तहिं राजु करेई।
अलपखानु हींदूअह लोय घणु मानु जु देई ॥ ९ ॥
साहु रायदेसलह पुतु तसु सेवइ पाय।
कला करी रंजविउ खानु बहु देइ पसाय ॥ १० ॥
मीरि मलिकि मानियइ समरु समरथु पभणीजइ।
परउपगारियमाहि लीह जसु पहिली य दीजइ ॥ ११ ॥
जेठसहोदरि सहजपालि जिण मग्गिहि सहजू।
दक्खणमंडलि देवगिरिहि किउ धम्मह वणिजु ॥ १२ ॥
चउवीसजिणालय जिणु ठविउ सिरिपासजिणंदो।
धम्मधुरंधरु रोपियउ धर धम्मह कंदो ॥ १३ ॥
साहणु रहियउ थंभनपरि सायरगंभीरे।
पुण्यपुरिसवरसिरिनिवासु पूरइ परतीरे ॥ १४ ॥
तृतीयभाषा-तिहुणरू ए समरभमाति भारधरापह गंजणउ ए।
भविपह ए करुणारासि भेदुरमनु मोहि पडिउ ए।

समरऊ ए साहसधीरु वाहविलग्गउ बहु अ जण ।
बोलई ए असमवीरू दूसमु जीपइ राउतवट ए ॥ १ ॥
अभिग्रहु ए लियइ अविलंबु जीवियजुव्वणवाहवलि ।
उधरऊ ए आदिजिणबिंबु नेमु न मेल्हउ आपणउ ए ।
भेटिऊ ए तउ पानपातु सिरु धूणइ गुणि रंजियउ ए ॥ २ ॥
वीनती ए लागु रुउ वातु पूछए पहुता केण कज्जे ।
सामिय ए निसुणि अडदासि आसालंवणु अम्हतणउ ए ।
भइली ए हुनिय निरास हू ज भागी य हींदूअतणी ए ।
सामिय ए सोमनयणेहिं देपिउ समरा देइ मानु ॥ ३ ॥
आपिऊ ए सव्वयणेहिं फुरमाणु तीरथमाडिवा ए ।
अहिदर ए मलिकआएसि दीन्ह ले श्रीमुखि आपण ए ।
पतमत ए पानपएसि किउ रलियाइतु घरि संपत्तो ।
पणमई ए जिणहरि राउ समणसंघो तहि वीनविउ ए ॥ ४ ॥
संघिहि ए कियउ पसाउ बुद्धि विमासिय बहूपपरं ।
सासण ए वर सिणगारु वस्तपालो तेजपालो मंत्रे ।
दरिसण ए छह दातारु जिणधर्मनयण वे निम्मला ए ।
आइसी ए रायसुरताण तिणि आणीय फलही य पवर ॥ ५ ॥
दूसम ए तणी य पुणु आण अवसरो कोइ नही तसुतणउ ए ।
इह जुग ए नही य वीसासु मनुमात्रे इय किम छरए ।
तउ तुहु ए पुन्नपकासु करि ऊधरि जिणवरथरसु ॥ ६ ॥
चतुर्थभाषा–संघपतिदेसलु हरपियउ अति धरमि सचेतो ।
पणमइ सिधसुरिपयकमलो समरागरसहितो ।
वीनती अम्हतणी प्रभो अवधारउ एक ।
तुम्ह पसाइ सफल किया अम्हि मनोरहनेक ॥ १ ॥
सेत्रुजतीरथ ऊधरिवा ऊपन्नउ भावो ।
एक्कु तपोधनु आपणउ तुम्हि दियउ सहाउ ।
मदनु पंडितु आइसु लहवि आरासणि पहुचइ ।
सुगुरुवयणु मनमाहि धरिउ गाढउ अति रूचइ ॥ २ ॥
राणेरा तहि राजु करइ महिपालदेउ राणउ ।
जीवदया जगि जाणिजए जो धीरु सपराणउ ।

पातउ नाभिहि मंत्रियरो तसुतणइ सुरज्जे ।
चंद्रकन्हइ चकोरु जिसउ सारइ बहुकज्जे ॥ ३ ॥
राणउ रहियउ आपुणपई पाणिहि उपकंठे ।
टंकिय वाहइ सूत्रहार भांजइ घणगंठ ।
फलहीं आणिय समरवीरि ए अतिबहुजयणा ।
समुद्र विरोलिउ वासुगिहिं जिम लाधा रयणा ॥ ४ ॥
फूआरसि उछवु हुअउ त्रिसींगममइनहरं ।
फलही देषिउ धामियह रंगु माइ न मइरं ।
अभयदानि आगलउ करुणारसचित्तो ।
गोत्ति मेल्हावइ पइरालुअह आपइ बहुवित्तो ॥ ५ ॥
भांडु आव्या भाउघणउ भवियायण पूजइ ।
जिम जिम फलही पूजिजए तिम तिम कलि धूजइ ।
खेला नाचइ नवलपरे घाघरिरवु झमकइ ।
अचरिउ देषिउ धामियह कहु चित्तु न चमकइ ॥ ६ ॥
पालीताणइ नयरि संघु फलही य पठावइ ।
बालचंद्र मुनि वेगि पवरु कमठाउ करावइ ।
किं कप्पूरिहिं घडीय देह पारसायरसारिहिं ॥ ७ ॥
सामियमूरति प्रकट थिय कूप करिउ संसारे ।
मार्गी दीन्ह पठावणी य मनि हरषु न माए ।
देसलऊअह घरिणि सहु रलियातु थाए ॥ ८ ॥
पञ्चमी भाषा-संघु बहुभत्तिहिं पाटि बयसारिउ ।
लगनु गणिउ गणधरिहिं विचारिउ ।
पांसदसाल च्मासण देयए ।
सूरिसेयंवरमुनि मधि संमहे ए ॥ १ ॥
घरि घरसवि करी के वि मग्गाविया ।
के वि धम्मिय हरसि धम्मिय धाइया ।
बहुदिसि पाठविय कुंकुमपत्रिया ।
संघु मिलइ बहुभत्ती य मज्जाइया ॥ २ ॥
सुहगुरुसिरिसुरिवासि अहिसिंचिउ ।
संघपति कल्पतरु अमिय जिम सिंचिउ ।

अष्टमी भाषा—चलउ चलउ सहियडे सेत्तुजि चडिय ए ।
आदिजिणपत्रीठ अम्हि जोइसउं ए ।
माहसुदि चउदसि दूरदेसंतर संघ मिलिया तहिं अति अबाह॥
माणिके मोतिए चउक्कु सुर पूरइ रतनमइ वेहि सोवन जवारा ।
अशोकवृक्ष अनु आम्र पल्लवदलिहि रितुपते रचियले तोरणमाला ॥२
देवकन्या मिलिय धवलमंगल दियइ किंनर गायहि जगतगुरो ।
लगनमहूरतु सुरगुरो साधए पत्रीठ करइ सिधसूरिगुरो ॥ ३ ॥
भुवनपतिव्यंतरजोतिसुर जयउ जयउ करइ समरि रोपिउ ध्रिदु धरमकंदो
दुंदुहि वाजिय देवलोकि तिहुअणु सीचिउ अमियरसे ॥ ४ ॥
देउ महाधज देसलो संघपते ईकोतरु कुल ऊधरए ।
सिहरि चडिउ रंगि रूपि सोवनि धनि चीरि रतनि वृष्टि विरचियले ॥५
रूपमय चमर दुइ छत्त मेघाडंवर चामरजुयल अनु दिव्वतुलि ।
आदिजिणु पूजिउ सहलकंतिहिं कुसुम जिम कनकमयआभरण ॥ ६
आरतिउ धरियले भावलभत्तारिहिं पुव्वपुरिस सगि रंजियले ।
दानमंडपि थिउ समर सिरिहि वरो सोवनसिणगार दियइ पायकजन ॥७
भत्ति पाणी य वरमुनि प्रतिलाभिय अचारिउ वाहइ दुहियदीण ।
चाविउ सुगम थितु सिद्धखेत्रि ईम्रउच्छयु करि ऊतरए ॥ ८ ॥
भोजावतंरगु भलइ महोत्सवि आविउ समरु आवासि गनि ।
तेरहइकहत्तरइ तीरथउद्धारु थउ नंदउ जाव रविससि गयणि ॥ ९ ॥
नवमी भाषा—संघगाउलु करी चारि भले माल्हंतडे पूजिय दरिसण पाय ।
सुणि सुंदरे पूजिय दरिसण पाय ।
सोरठदेस संघु संचरिउ मा० चउंडे रयणि विहाइ ॥ १ ॥
आदिजिणु अमरेलीगढ माल्हं० आविउ देसलजाउ ।
अन्नोमक अन्न जगि मिलए माल्हं० मंडलिकु सोरठराउ ॥ २ ॥
ठामि ठामि उच्छव हुभइ माल्हं० गढि जूनइ संपत्तु ।
तेजलपुरि राउलु आवए माल्हं० सामुहउ संघभगुरत्तु ॥ ३ ॥
महिंदु समरु बिउ मिलिय मोहरे माल्हं० इंदु किरि भलइ गोविंदु ।
तेजि भलंकिउ तेजलपुरे मा० पुरिउ संघआणंदु । सुणि० ॥ ४ ॥
कउमर्लीमंडवाडि चरे माल्हं० तलहटी य गढमाहि ।
उज्जिलगिरि चाल्यिा ए माल्हं० चउविहसंघहमाहि । सुणि० ।

दामोदरु हरि पंचमउ माल्हं० कालमेघो क्षेत्रपालु । सुणि० ।
सुवनरेहा नदी तहिं वहए माल्हं० तरुवरतणउं झमालु ॥ ५ ॥
पाज चडंता धामियइ मा० क्रमि क्रमि सुकूल विलसंति । सुणि० ।
ऊची य चडियए गिरिकडणि मा० नीची य गति पोडंति ॥ ६ ॥
पामिउ जादवरायभुवणु मा० त्रिनि प्रदक्षिण देइ ।
सिवदेविसुतु भेटिउ करिउ मा० ऊतरिया मढमाहि । सुणि० ।
कलस भरेविणु गयंदमए मा० नेमिहिं न्हवणु करेइ ।
पूज महाधज देउ करिउ मा० छत्र चमर मेल्हेइ ॥ ७ ॥
अंबाई अवलोयणसिहरे मा० सांबिपज्जूनि चडंति । सुणि० ।
सहसारामु मनोहरु ए मा० विहसिय सवि वणराइ । सुणि० ।
कोइलसादु सुहावणउ ए मा० निसुणियइ भमरझंकारु । सुणि० ॥८॥
नेमिकुमरतपोवनु ए मा० दुह जिय ठाउं न लहंति । सुणि० ।
इसइ तीरथि तिहुयणदुलभे मा० निसिदिनु दानु दियंति ॥ ९ ॥
समुदविजयरायकुलतिलय मा० चीनतडी अवधारि । सुणि० ।
आरतीमिसि भवियण भणइं मा० चतुगतिफेरडउ वारि । सुणि०॥१०॥
जइ जगु एकु मुहु जोइयए मा० त्रिपति न पामियइ तोइ । सुणि० ।
सामलधीर तउं सार करे मा० वलि वलि दरिसणु देजि । सुणि०॥११॥
रलीयरेवयगिरि ऊतरिउ ए मा० समरडो पुरुपप्रधानु ।
घोडउ सीकिरि सांफलिय मा० राउलु दियइ बहुमानु । सुणि० ॥१२॥

दशमी भाषा-रितु अवतरियउ तहिं जि वसंतो सुरहिकुसुमपरिमल पूरंतो
समरह वाजिय विजयढक्क ।
सागुसेलुसल्लइसच्छाया वेल्लयकुडयकयंबनिकाया
संघसेनु गिरिमाहइ वहए ।
बालीप पूछइं तरुवरनाम वाटइ आवइं नव नव गाम
नयनीझरणरमाउलइं ॥ १ ॥
देवपटणि देवालउ आवइ संघह सरवो सरु पूरावइ
अपूरवपरि जहिं एक हुईअ ।
तहिं आवइ सोमेसरछत्तो गउरवकारणि गरुउ पहूतो
आपणि राणउ मूधराजो ॥ २ ॥
पान फूल कापड बहु दीजइं लूणसमउं कपूरु गणीजइ
जवाधिहिं सिरु लिंपियए ।

ताल तिविल तरविरियां वाजइं ठामि ठामि थाकणा क
पगि पगि पाउल पेषण ए॥
माणुस माणुसि हियउं दलिजइ घोडे वाहिणिगाहु क
हयगय सूझइ नवि ज
दरिसणसउं देवालउ चल्लइ जिणसासणु जगि रंगिहिं म
जगतिहिं आव्या सिवभुवणि॥
देवसोमेसरदरिसणु करेवी कवडियारि जलनिहिं जोएवी
मियमेलइ संघु ऊलि
पहुचंदप्पहपय पणमेवी कुसुमकरंडे पूज रएवी जिणभुवणे
उच्छवु कियउ॥
सिवदेउलि महाधज दीधी सेले पंचे वत्तसमिढी अपूरवु उच्छ
कारवि
जिनवरधरमि प्रभावन कीधी जयतपताका रवितलि बद्धी दी
पयाणउं दीवभणी
कोडिनारिनिवासणदेवी अंबिक अंबारामि नमेवी दीवि
वेलाउलि आविपउ ए॥१

एवमदर्सी भाषा-संघु रयणायरतीरि गहगहए गुहिरगंभीरझुणि।
आविउ दीवनरिंदु सामुहउ ए संघपतिसवहु सुणि॥१॥
हरखिउ हरपालु धीति पहुतउ ए संघु मोलथिकरे।
पभणइं दीवह नारि संघह ए जोअण ऊतावली ए।
भाउलां वाहिन वाहि वेगुलइ ए चलावि प्रिय वेडुली ए॥२॥
दिसउ सुगुरुगुरि ओढउ ए नयणुलां सफल करउ।
निवडणा नेंवि करेसु उतारिसु ए कपूरि ऊआरणा ए।
बेडीय बेडीय जोडि चल्लियऊ ए कीणउं वंधियारो॥३॥
देउ ईथाल्लउमाहि वरठउ ए संघपति संघसहिउ।
लहरि लागइं आगासि मवहतु ए जाइ विमान जिम।
उछरइ नाटकु जोइ नवरंग ए रास लउडारस ए॥४॥
दिवसु हुंई नेमु दीसइं ए नवल्ला धवलहर।
जिहां अच्छइ कुमरविहार झमइऊ ए झमहुला जिणभुवण।
तीर्थंकर नाइ वंदवि वंदिऊ ए सयंभू आदिजिणु।

दीठउ वेणिवच्छराजमंदिरु ए मेदनीउरि धरिउ ।
अपूरवु पेपिउ संघु उत्तारिऊ ए पहली नदि समुद्दला ए ॥ ६ ॥
शद्दशी भापा-अजाहरपरतीरधिहिं पणमिउ पासजिणिंदो ।
ज प्रभावन तहिं करहिं अज्रिउ ए अज्रिउ ए अज्रिउ सफल सुणंदो ॥ १ ॥
गामागरपुरपोलितो चलिउ सेतुजि संपत्तो ।
आदिपुरीपाजह चडिऊ ए थंदिऊ ए थंदिऊ ए थंदिऊ ए मरुदेविपूतो ॥२॥
अगरि कपूरिहिं चंदणिहिं मृगमदि मंडणु कीय ।
कसमीराकुंकुमरसिहिं अंगिहिं ए अंगिहिं ए अंगो अंगि रचीय ।
जाइयउलविहसेवत्रिय पूजिसु नाभिमल्हारो ।
रजनसुफलु पामिऊ ए भरियऊ ए भरियऊ ए भरियऊ सुकृतभंडारो॥३॥
सोहग ऊपरि मंजरिय धीजी य सेतुजि उधारि ।
ठिय ए समरऊ ए समरऊ ए समरु आविउ गुजरात ।
पिपलालीय लोलियणे पुरे राजलोकु रंजेई ।
डे पयाणे संचरए राणपुरे राणपुरे राणपुरे पहुचेई ॥ ४ ॥
पउपाणि न पिलंघु किउ जिमिउ धरीरे गामि ।
होईउ पाडलए नमियऊ ए नमियऊ ए नमियऊ नेमि ए जीवतसामि ।
मंरोसर सफलीयफरणु पूजिउ पासजिणिंदो ।
हु तहिं हरषियउ ए देषिऊ ए देषिऊ ए देषिउ फणिमणिवृंदो ॥ ५ ॥
डुंगरि हरिउ न मोहिं चलिउ मलिउ न गिरवरि गव्वो ।
र आणिउ ए संघपती ए संघपती ए संघपतिपरिहिं अपुव्वो ॥ ६ ॥
सञ्चण सञ्चण मिलीय नहिं अंगिहि अंगु लिपंत ।
ह उल्लडु घणउ ए मोहरू ए मोहरू ए मोहरू कंठि ठवंत ॥ ७ ॥
मंत्रिपुत्रह मीरह मिलिय अनु ववहारियसार ।
पघाविपउ कंठिहिं ए कंठिहिं ए कंठिहिं घातिय जयमाल ।
तुरियपाटलरपरि प तहिं समरउ करइ प्रवेसु ।
पवामणउ ए अभिनवु ए अभिनवु ए अभिनवु पुरनिवासो॥८॥
संपच्छरि इकहत्तरए थापिउ रिसहजिणिंदो ।
मि पहुत पर नंदऊ ए नंदऊ ए नंदऊ जा रविचंदो ॥ ९ ॥
सरइसूरिहि गणहरह नेऊआगच्छनिवासो ।
अंबदेवसूरिहिं रचियऊ ए रचियऊ ए रचियऊ समरारासो ।

एहु रासु जो पढइ गुणइ नाचिउ जिणहरि देइ ।
श्रवणि सुणइ सो वयठऊ ए तीरथ ए तीरथ ए तीरथजात्रफलु लेई ॥ १०

इति श्रीसंघपतिसमरसिंहरासः ॥

सिरिथूलिभद्दफागु ।

पणमिय पासजिणंदपय अनु सरसइ समरेवी ।
थूलिभद्दमुणिवइ भणिसु फागुबंधि गुण केवी ॥ १ ॥
अह सोहगसुंदररूववंतु गुणमणिभंडारो ।
कंचण जिम झलकंतकंति संजमसिरिहारो ।
थूलिभद्दमुणिराउ जाम महियलि वोहंतउ ।
नयररायपाडलियमाहि पहुतउ विहरंतउ ॥ २ ॥
वरिसालइ चउमासमाहि साहू गहगहिया ।
लियइ अभिग्गह गुरह पासि नियगुणमहमहिया ।
अज्ञविजयसंभूयसूरि गुरु वय मोकलावइ ।
तसु आएसि मुणीस कोसवेसाघरि आवइ ॥ ३ ॥
मंदिरतोरणि आवियउ मुणिवरु पिखेवी ।
चमकिय चित्तिहि दासडिय वेगि जाइ वधायी ।
वेसा अतिहि उतावलि य हारिहि लहकंती
आविय मुणिवररायपासि करयल जोडंती ॥ ४ ॥
भास—धम्मलासु मुणिवइ भणिसु चित्रसाली मंगेवी ।
रहियउ सीहकिसोर जिम धीरिम हियइ धरेवी ॥ ५ ॥
झिरिमिरि झिरिमिरि झिरिमिरि ए मेहा वरिसंति ।
खलहल खलहल खलहल ए वाहला वहंति ।
झबझब झबझब झबझब ए बीजुलिय झबकइ ।
थरहर थरहर थरहर ए विरहिणिमणु कंपइ ॥ ६ ॥
महुरगंभीरसरेण मेह जिम जिम गाजंते ।
पंचबाण निय कुसुमबाण तिम तिम साजंते ।
जिम जिम केतकि महमहंत परिमल विहसावइ ।
तिम तिम कामि य चरण लग्गि नियरमणि मनावइ ॥ ७ ॥

सीयलकोमलसुरहि वाय जिम जिम वायंते ।
माणमडप्फर माणणि य तिम तिम नाचंते ।
जिम जिम जलभरभरिय मेह गयणंगणि मिलिया ।
तिम तिम कामीतणा नयण नीरिहि झलहलिया ॥ ८ ॥

भास—मेहारवभरउलटि य जिम जिम नाचइ मोर ।
तिम तिम माणिणि खलभलइ साहीना जिम चोर ॥ ९ ॥

अह सिंगारु करेइ वेस मोटइ मनउलटि ।
रइयरंगि बहुरंगि चंगि चंदणरसउग्गटि ।
चंपयकेतकिजाइकुसुम सिरि खुंप भरेइ ।
अतिआछउ सुकमाल चीरु पहिरणि पहिरेइ ॥ १० ॥

लहलह लहलह लहलह ए उरि मोतियहारो ।
रणरण रणरण रणरण ए पगि नेउरसारो ।
झगमग झगमग झगमग ए कानिहि वरकुंडल ।
झलहल झलहल झलहल ए आभरणहं मंडल ॥ ११ ॥

मयणखग्ग जिम लहलहंत जसु वेणीदंडो ।
सरलउ तरलउ सामलउ रोमावलिदंडो ।
तुंग पयोहर उल्लसइ सिंगारथवक्का ।
कुसुमबाणि निय अमियकुंभ किर थापणि मुक्का ॥ १२ ॥

—काजलि अंजिवि नयणजुय सिरि संथउ फाडेइ ।
बोरीयावडिकांचुलिय पुण उरमंडलि ताडेइ ॥ १३ ॥

कन्नजुयल जसु लहलहंत किर मयणहिंडोला ।
चंचल चपल तरंगचंग जसु नयणकचोला ।
सोहइ जासु कपोलपालि जणु गालिमसूरा ।
कोमल विमलु सुकंठु जासु वाजइ संखतूरा ॥ १४ ॥

लवणिमरसभरकूवडिय जसु नाहि य रेहइ ।
मयणराय किर विजयखंभ जसु ऊरू सोहइ ।
जसु नहपल्लव कामदेवअंकुस जिम राजइ ।
रिमिझिमि रिमिझिमि ए पायकमलि घाघरिय सुवाजइ ॥ १५ ॥

जोयनविलसंतदेह नवनेहगहिल्ली ।
मलहलहरिहि मयमयंत रइकेलिपहिल्ली ।

अहरबिंब परवालखंड वरचंपावन्नी ।
नयणसलूणी य हावभाववहुगुणसंपुन्नी ॥ १६ ॥
भास—इय सिणगार करेवि वर जब आवी मुणिपासि ।
जोएवा कउतिगि मिलिय सुरकिंनर आकासि ॥ १७ ॥
अह नयणकडक्खहं आहणए वांकउ जोवंती ।
हाव भाव सिणगार भंगि नवनवि य करंति ।
तह वि न भीजइ मुणिपवरो तउ वेस बोलावइ ।
तवणुतुल्ल तुह देह नाह मह तणु संतावइ ॥ १८ ॥
बारहवरिसहंतणउ नेहु किणि कारणि छंडिउ ।
एवडु निठुरपणउ कंइ मूंसिउ तुम्हि मंडिउ ।
थूलिभद्द पभणेइ वेस अह खेदु न कीजइ ।
लोहिहिं घडियउ हियउ मज्झ तुह वयणि न भीजइ ॥ १९
मह विलवंतिय उवरि नाह अणुराग धरीजइ ।
एरिसु पावसु कालु सयलु मूंसिउ माणीजइ ।
मुणिवइ जंपइ वेस सिद्धिरमणी परिणेवा ।
मणु लीणउ संजमसिरीहिसुं भोग रमेवा ॥ २० ॥
भास—भणइ कोस साचउ कियउ नवलइ राचइ लोउ ।
मूं मिल्हिवि संजमसिरिहिं जउ रातउ मुणिराउ ॥ २१ ॥
उवसमरसभरपूरियउ रिसिराउ भणेइ ।
चिंतामणि परिहरवि कवणु पत्थरु गिह्णेइ ।
तिम संजमसिरि परियएवि बहुधम्मसमुज्जल ।
आलिंगइ तुह कोस कवणु पसरंतमहाबल ॥ २२ ॥
पहिलउ हिवडा कोस कहइ जुव्वणफलु लीजइ ।
तयणंतरि संजमसिरीहिं सुह सुहिण रमीजइ ।
मुणि बोलइ जि मइ लियउ तं लियउ ज होइ ।
कवणु सु अच्छइ भुवणतले जो मह मणु मोहइ ॥ २३ ॥
भास—इणपरि कोसा अवगणिय थूलिभद्दमुणिराइ ।
तसु धीरिम अवधारिकरि चमकिय चित्ति सुहाइ ॥ २४ ॥
अइबलवंतु [illegible] मोहराउ जिणि नाणि निधाडिउ ।

ईहं सहू को एक मानि रंको अनु राओ ॥ ४ ॥
सामिय वंदिउ वद्धमाण सेणीयं पूछीइं ।
जइ पसनचंद हिव करेइ काल कींछे ऊपजइ ।
मन जाणेविण पसनचंद सामी बोलीजइ ।
नरगावासइ सातमए नींछइं ऊपजइ ॥ ५ ॥
बीजी पूछइं मणुय होइ बीजो अणउत्तर ।
दुंदुहि वाजी देवकीय चालीय तिहिं सुरवर ।
सेणिउ पूछइ सामिसाल कांहां जाईजइ ।
केवलमहिमा पसनचंद देवे कीजीजइ ॥ ६ ॥
सेणिउ मनि चिंताचडिओ सामी वलि पूछइ ।
जं प्रभु तम्हे बोलीयउं तं अम्हे न बूझिउं ।
सेणिय तम्हि बूझियउं तअं तिसउं त होए ।
मणपरिणामह विसमगति जीवहं पुण होइ ॥ ७ ॥
केवलनाणउ भरहखेति केतूं वरतेसिइ ।
सामी दाषीउ विज्जुमालियउ छेहु होसिइ ।
चउसट्ठि देवे परियरिउ चउदेवे सहीउ ।
अतिसइं दीसइ देहकंति सेणीचिति चडीउ ॥ ८ ॥
देवहं नवि हुइ एहु नाणु यउ किम होएसिइ ।
आजूना दीह सातमए इणि नयरि चवेसिइ ।
किंकारण पुण एहकंति किंरूपह अतिसउ ।
कयणह धम्महतणइ भावियउ देवअइसउ ॥ ९ ॥
ठवणि—महाविदेहतणइ विजय वीतसोय नयरी ।
पदमरथ नामेण राउ वनमाला घरणी ।
तास ऊयरि ऊपन्न पुत्तु सुरलोयहहूंतु ।
पचइ नामिइं सिवकुमार बहुगुणिहिं संजुत्तउ ॥ १० ॥
पुव्वभवंतरतणइ नेहि सागरमुणि पहुतु ।
आवीउ वंदण सिवकुमार बहुभत्तिजुत्तउ ।
हउं जाणउं नू मुणिहिं नाह कींछे मइं दीठउ ।
एह जन्मइ महग्गभवि मुझ भाइ य हूंतउ ॥ ११ ॥
उहापोह करीह जाम पाछिलउ भव देषइ ।

जा मई मूंकी सुरह रिद्धि या कीणई लेसई ।
तु चिंताविउ सिवकुमार अथिरउ संसारो ।
भवनिप्रासण लेइसिउं अम्हि संजमभारो ॥ १२ ॥
माइ न मेल्हइं एकपूत सो मुनिहिं थाई ।
दढधम्मेण सावएण जायवि बोलावीउ ।
पारि पारि दढधम्म भणइ अम्ह भणीउ कीजइ ।
दुल्लभ वेडी मणुयजम्म जलनिहि रपीजइ ॥ १३ ॥
कहइ धम्म सो मुणिहि जाम तसु वयण मनेई ।
बिहुं उपवासहं पारणइ ए आंबिल पारेई ।
फासुयवेसण भत्तपाण दढधम्मो आणइ ।
माहि थीउ अंतेउरहं सो सील ज पालइ ॥ १४ ॥
नवकरवालीतीपधार करम सवि खूडइ ।
निहणइ मोहकंदप्पराउ भवपरीयण मोडइ ।
बारई वरसहंतणइ अंति आऊखूं पूरीजइ ।
पंचमदेवलोकि सिवकुमार सो देव ऊपजइ ॥ १५ ॥
कयणह नारिहितणइ उयरि एह जीव चवेसिइ ।
कयणह वापहतणइ कुलि एउ मंडण होसिइ ।
उसभदत्तसेठिहि घरणि धारणिउरि नंदण ।
होसिइ नामिहं जंबुसामि तिहूयणि आणंदण ॥ १६ ॥
ऊठीउ देव अणाढिउ हरषिइं नाचेई ।
धनु धनु अम्हतणउं कुल एसु पुत्त होसिइ ।
चविउ विमाणह बंभलोय धारणिउरि आविउ ।
सुमिणप्रभाविहं उसभदत्त अंगेहि न माईउ ॥ १७ ॥
जायउ पुत्तु पहाण जाम दसदिसि उदयंतउ ।
वडइ नामिहिं जंबुसामि गुणगहण करंतु ।
अठवरीसउ हूउ जाम गुरुपासि पहुतु ।
ब्रह्मचारि सो लियइ नीम भववासविरत्तउ ॥ १८ ॥
जोवणवेसह पहुतु जाम कन्ना मग्गावइ ।
बीजा पूया पाठवए तस विचारा वप ।
मन देजिउं तम्हि अम्ह देसु अम्हि इमउं करेशउं ।

सांसहं परणी मइइ जाम सीघई व्रत लेसिउं ॥ १९ ॥
माय मुहंर्धीय तणइं वयणि परिणिवउ मयार ।
आठइ कन्या एकवार परिणीय घरि आयार ।
आठइ परणी मृगनयणी सूत्रचगइ यइठउ ।
पंचसएचोरेहंसिउं प्रभवउ घरि पइठउ ॥ २० ॥
नीद्र अणावीय मोगणीय आभरण लीयंता ।
ते सवि अछइं थंभीया डगमग जोयंता ।
प्रभवउ भणइ हो जंबुसामि एक माठि ज कीजइ ।
विहुं विद्यावइइं एक विद्य थंभणीय ज दीजइ ॥ २१ ॥
हिव हुं कहि नवि ज लेवि गुण किमउं कम्मा ।
आठइ परिणी ससियवणी सीघइं व्रत लेमा ।
रूपवंत अणुरत्त रमणि एउ एम चएसिइ ।
अणहूंतासुहतणी य आस मुह्म जीव करेसिइ ॥ २२ ॥
एवडु अंतर नरहं होइ प्रभवउ चिंतेई ।
संवेगरसि जउ गयउं मन प्रभवउ पूछेई ।
सिद्धिरमणिऊमाहीया ए तम्हि संजम लेसिउ ।
करुणइं विलवइं माइबप्प किम किम मेल्हेसिउ ॥ २३ ॥
इंदियाल नवि जाणीइ ए को किम होइसिइ ।
अढार नात्रां एकभवि जंबूस्वामि कहेई ।
पितर तम्हारा जंबुसामि किम तृपति लहेशइं ।
पिंड पडइ लोपहंतणइ ए ऊभा जोसिइं ॥ २४ ॥
याप मरवि भईसु हुऊ पुत्रजन्मि हणीजइ ।
इणपरि प्रभवा पितरतृप्ति तिणि भांवरि कीजइ ।
अणहूंतासुहतणी य आस हूं तउं छांडेसिउ ।
तिण करसणि जिम कलत्र भणइ अवतरना करेशिउ ॥ २५ ॥
तम्ह रूपिहिं हउं लोभ करउं देपि मणहर रूयडउं ।
हत्थिकडेवर काग जिम भवसायर निवडउं ।
वीजी कलत्र कहेवि नाह जइ अम्ह छंडेसिउं ।
तिणि वानरि जिम पच्छुताव बहु चींति धरेसिउं ॥ २६ ॥
बिंदुसमाणउं विसयसुक्ख आदर किम कीजइ ।

इंगालचाहग जेम तुम्हि तृस किम न छीपइ ।
धीजी कलत्र भणइवि नाह जउ अम्ह छांडेसिउ ।
तिणि जंबुकि जिम साणहार बहुखेद करेशउ ॥ २७ ॥
ऊतर पडि ऊतर यहू य संखेवि कहीजइं ।
विलखी हुईं ते सव्वि बाल जंबूसामि न बूझइं ।
आसातरुवर सुफ्ल जाम अम्हि इशउं करेशउं ।
नेमिहिंसिउं राइमइ जिम वयगहण करेशउं ॥ २८ ॥
आठइ कलत्रह बूहवीय पंचसयसिउं प्रभवउ ।
माइ बाप बेउ भणइं नाम अम्ह साधुसरीसउ ।
ठवणि —प्रह विहसइ सुविहाण प्रभवु विनवइ जंबुसामि ।
सजनलोक मोकलावि तम्हिसिउं संजम लेसिउं ॥ २९ ॥
त्वण एक पडपाणवि राय मोकलावण चालीय ।
तु सुहडसमूह करेवि भुइं कंपइं भडभडवइं ॥ ३० ॥
जस भय प्रसकइ राउ जस भय नींद्र न वयरीयहं ।
एसउ प्रभवउ जाइ नरनारी जोयण मिलीय ।
पहुतु रायदुवारि पडिहारिइं बोलावीउ ।
वेगिइं राउ भेटावि अम्हि अछउं उत्सुकमणा ए ॥ ३१ ॥
पुत्ततणउ विह्न राय तुम्ह दरिसणि ऊमाहीउ ओ ।
कारण जाणीउ राय वेगिहिं सो मेल्हावीउ ओ ।
बेठि न खंडइ राउ प्रभवउ देषी आयतउ ।
साचउ ए भडिवाउ पुरुषह आकृति जाणीइ ए ॥ ३२ ॥
रूपगुणे संपन्न रायरमणिमन चोरतु ओ ।
सोहइ पूनिमचंद जइव्रय कोणी प्रणमीउ ।
नुतउ अद्धसीय शरीर जइ कोइ जणणीजाइउ ।
नयणे छूटुं नीर संवेगजलहरि वरिसिउ ।
सामी खमि अपराध अम्हे लोक संतावीया ए ॥ ३३ ॥
पडियउ बोलइ राउ कोणी मनि आणंदियउ ।
धन्न पनुती माइ इसिउ पुत्र जिणि जाईउ ओ ।
तो मोकलावी राउ चोरपल्ली सासंचरए ।
सजनह कहीइं एउ अम्हे संजम लेइशउं ॥ ३४ ॥

किण कारणि वइराग तं कारण अम्ह वोलीइ ए।
मेल्ही अढइ वाल कणयकोडि नवाणवइ ए।
अनइ रिद्धि वहूत तिहिं पुण पार न जाणीयए।
जंबूसामिचरित्त महिमंडलि हुउं अच्छरीय ॥ ३५ ॥
इणि कारणि वयराग तृण जिम दीठउ मेल्हतउ ओ।
अम्ह सोइ जि सामि तम्हे भलइं अछजिउ ओ।
मोहनरिंदशउं झूझ संजमकित्तिइं झूझसिउं ओ ॥ ३६ ॥
ठवणि—प्रभवउ पंचसएण अढइयहूयरमाइवप्पो।
सविकहं ए रूठउ जाइ नीयघरहूंतु नींसरइ ए।
चालीउ ए सिवपुरिसाथ सारथवय तिहिं जंबुसामि।
तिहुयणी ए जयजयकार सोहम देपीउ जंबुसामि।
कंचण ए रयणिहिं दाण जिम घण वरसइ भाद्रवए।
सयतऊ ए ईह गोलोक भवियजणसंवेगकरो ॥ ३७ ॥
ठवणि—कसकेरी पिइ माइ पुत्र कलत्र धन्न धण।
देसी कुडिसारिच्छ जिण जिम जंबू परिहरए।
अनइ लोक वहूत व्रत लेवा तिहिं चालीउ।
वंदिय जिणभवणाइं सोहम्मसामिपासि गयउ ॥ ३८ ॥
भवसायर उत्तारि जम्मण मरणह वीह तउ ओ।
पंचमहव्वयभार मेरुसमाणउ अंगमइ ए।
अनु तेतउ परिवार सोहमसामिहिं दिक्खीउ ओ।
हूउं केवलनाण संजमराज ह पालतां ए ॥ ३९ ॥
वीरजिणिंदह तीथि केवलि हुउ पाछिलउ।
प्रभवउ यइसारीउ पाटि सिद्धिं पहुतु जंबुस्वामि।
जंबूसामिचरित पढइं गुणइं जे संभलइं।
सिद्धिसुक्ख अणंत ते नर लीलाहिं पामिसिइं ॥ ४० ॥
महिंदसूरिगुरुसीस धम्म भणइ हो धामीऊ ह।
चिंतउ रातिदिवसि जे सिद्धिहिं ऊमाहीया ह।
वारहवरमसएहिं कवितु नीपनूं छासठए।
सोलह विज्जाएवि दूरिय पणासउ सयलसंघ ॥ ४१ ॥

इति श्रीजंबूसामिरासः ॥

सप्तक्षेत्रिरासु

सवि अरिहंत नमेयी सिद्ध सूरि उवझाय ।
पनरकर्मभूमिसाहू तीह पणमिय पाय ॥ १ ॥
जिणसासणहमाहि जो सारो चउदह पूरवतणउ समुधारो ।
समरिउ पंचपरमिट्ठि नवकारो सप्तक्षेत्रि हिव कहउ विचारो ॥ २ ॥
धुनु धुनु ते जि संसारे जीहं जिणवरु स्वामी ।
गुरु सुसाहु जिणभणिउं धम्मु सुगइगामी ॥ ३ ॥
चारि अंगि दुलहु मणुजम्मु अनी अ विशेषिहि जिणवरधम्मु ।
सम्मत रयणु चिति नियसइ जीह सोहग ऊपरि मंजरि तीह ॥ ४ ॥
पुणु जिणसासणु दुलहउं जीव संभलि कथनु निरुपमु ।
नाणुपहाणु एकु जि जिनवरधम्मु ॥ ५ ॥
भरहखित्ति खट्टखंडहं थिप्ति केवलनाणि जिणवर जंपंति ।
वैताढ्यपरहां त्रिन्नि खंड होइ तहि धरमनामु निवरतन तोइ ॥ ६ ॥
उत्या त्रिहु खंडि थिप्ति केवलि इम आपइ ।
तीहमांहि दुनि पंडने पडिया पापइ ॥ ७ ॥
मज्झिम पंड इकु वइरी मंडिउ तेउ त्रिहुभागि पाछइ पडिउं ।
चउथउ भाग धरमनइ लागे तेउ जोईजइ सयमइ भागे ॥ ८ ॥
ते अ नयाणवइ भाग साहू मिथ्यातिहि जडिउं ।
थाकतउं कुमतिकुबोधिकुगुरुगाहि पडिउं ॥ ९ ॥
थोडा जीव येई दीसंते जे जिणभणिअं मनिहि करंति ।
हिव तिहुपणिहि साफ समिकतु पामिउ जीवि जिनभणिउ नयतसु ॥१०॥
वार धरत तइं पामिउ जे जिणवरि वुत्ता ।
सुगइनिबंधण सत्ता जीव मुगति दीयंता ॥ ११ ॥
प्राणातिपातव्रतु पहिलउं होइ बीअउ सत्यवचनु जीव जोई ।
त्रीजइ व्रति परधनपरिहारो चउथइ शीलतणउ सचारो ॥ १२ ॥
परिग्रहतणउं प्रमाणु व्रतु पांचमइ कीजइ ।
इणपरि भवह समुद्दो जीव निश्चय तरीजइ ॥ १३ ॥
छट्ठउं व्रतु दिसितणउ प्रमाणु भोगुवभोगव्रत सातमइ जाणु ।
अनरथव्रतु दंड आठमउं होइ नवमउं व्रत सामायकु तोइ ॥ १४ ॥

देसावगासी दसमुं व्रतु नथी मूलु ।
पोषधव्रतु इग्यारमउ संजमसमतूलु ॥ १५ ॥
व्रतु बारमउं अतिथिसंविभागुउ तोइ मुकतिनयर न न मागो ।
जे ईणइ मारगि चालइ संसारे घनु सकियारथ ते नरनारे ॥ १६ ॥
समकितमूल व्रतु बारइ गहियधरमि पालेवउ ।
सतक्षेत्रि जिनभणिया तिहं वित्तु वावेवउ ॥ १७ ॥
सतक्षेत्रि जिन कहिया महामुनि वितु वावेजिउ विवहपरे ।
जिनवचनु आराधीउ अथकमु साधिउ लहइ पारु संसारुसरे ॥ १८ ॥
सतक्षेत्रि जिनसासणिहिं सयली कहीजइं ।
अथिरु रिधि घनु द्रव्यु बीजउ तहि जि वावीजइ ।
तेहिं क्षेत्रि वावेवणा थानकि लाभइ देवलोको ।
कणनो थाहरु मुगतिफलो पामउ निसंदेहो ॥ १९ ॥
पहिलउं क्षेत्र सु जिणह भुवण करावउ चंगू ।
जांणे महिमा करइ सहु श्रीगउविहसंघू ।
मूलगभारउगूढमंडपुउकुंभउकोसहिउ ।
आगइ कीजइ रंगमंडपु जो पुस्तकि कहिउ ॥ २० ॥
तहि आलइ बलाणगु कीजइ आवेरउ ।
तिम जिनभवनह जालिमाहिं दीसइ ओकेरउं ।
इसांगतोरणु [illegible] पाहिं अतिनीकउ ।
कंठइ नानाविधि कवि सारु सारु तहि दीसतु नहिउ ॥ २१
[illegible] कराव [illegible] कीजइ अतिरूडां ।
[illegible] मूर्ति जिनदंसणि माहिं [illegible] ।
[illegible] पूजा [illegible] ।
[illegible] ॥ २२ ॥
[illegible] कीजइ अति [illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] कीजइ ।
[illegible] कीजइ ॥ २३ ॥
[illegible] ।
[illegible] ।

कवणु रूप वीतरागतणु जोइ कवणु विशेषु ।
अठ प्रतिहारि ज जिणहतणइ वृक्ष होइ असोकू ॥ २४ ॥
भामंडलुसुरकुसुमवृष्टिसीहासणुछत्रू ।
भेरिचमरदेवदुंदुभिहिण जोइ कवणु प्रभुत्तू ।
ए धिति एमो वीतराग मेल्ही अवर न होई ।
सुरादिक जिनसेव करइं नवि सगलइं जोई ॥ २५ ॥
तउ जिनजीर्णउद्धारू भवि जीव विशेषिहिं करीयइ ।
भागउ लागउ जिणह भुवणि तेउ तोइ समुद्धरियइ ।
लींपिउ धउलीउ भीगु देइ चीत्रामु लिपीजइ ।
इणपरि भुवणु समारीय जन्मह फलु लीजइ ॥ २६ ॥
अनीउ जु काइं किंपि ठामु जिणभुवण सीदाइ ।
तं निश्चिइं करावीयए बहुफलु बोलाइ ।
आपणि सामिउ वीतरागु ईणपरि भणेइ ।
जीर्णोद्धारहतणा पुण्य तेह अंत न होइ ॥ २७ ॥
बीजं खेत्रु सुजिनह बिंबु ते इहां विचारो ।
मणिमय रयण सुवर्णमए बिंब रूपम कारो ।
हिव जिनभुवणह गृहचैत्यदेवरा छ कहीसइ ।
कीजइ कणयभिंगार कलस जे नीर भरीसइ ॥ २८ ॥
तउ सीलमइ करावीयइ जिनभवन ठवीजइ ।
पारइ पीतलमइ भलां भिहचैति पूजीजइ ।
घरि देवालाइं करावि नीकाइ मणोहर ।
जीके तिहुयणसरण सामि पूजीजइ जिणवर ॥ २९ ॥
सुगंधि नीरि सनाघु करइ जिण जोणि आणंदिहिं ।
ते संसारह कसमलह नवि छीपइ बिंदिय ।
अंगलूहणे सूक्ष्म करउ सुफरां बहुमूलां ।
नियनियसक्ति करावियइ कीजे देवंगतूलां ॥ ३० ॥
कीजइ ओरसु रूयडा सिरखंड घसेवा ।
कपूरवट्ट वाटीइ कपूरु जिनस्वीमुखि देवा ।
मूंकइ जिणभुयणिहिं घोति अतिनीकी धूपी ।
धालाकुंची पूंजणीइ पीगाणी कूंपी ॥ ३१ ॥

अतिसुगंधिहिं सिरखंडिहिं कपूरिहिं आंगी ।
कीजइ सामी वीतराग प्रभु नवनवभंगी ।
कस्तूरिहिं कुंकुमिहिं तिलउ निलाडिहिं सामी ।
ते पुण चितपति करइ भली अतिनीकइ धामी ॥ ३२ ॥
तउ आभरण चडावियइ सोवणमय घडिया ।
हीरे माणिकि मोतीए बहुरयणे जडिया ।
अतिरूयडउं आभरणउ भलउं कीजइ संपूरउ ।
नीकउं सिहरउं पूठिउं हूतलि अनइ मसूरउ ॥ ३३ ॥
कानिहिं कुंडल सिरि मुकुटु किरि ऊगिउ भाणूं ।
जाणे तिहूयणि सयल लोक अभिनवउं विहाणूं ।
उरह माल कंठि सांकलउं मुक्तावलिहार ।
नयणि निहालिन वीतरागु रूयडउ सुरसार ॥ ३४ ॥
बाहुजुयलि बेउ बहिरखा अतिनीका सोहई ।
दीठुउं श्रीवत्सु सारूयार भवियण मणि मोहइ ।
सोनाकेरी पालठी कीजइ जिनपत्ते ।
सोहइ बीजउरउं रूयडउं सामीजिणहत्थे ॥ ३५ ॥
इणि विवेकिहिं बहु य विशेषिहिं जिणवरपूज सलक्खणी य ।
करउ मनरंगिहिं नयनवभंगिहिं श्रीसंघनयणासुहामणी य ॥३६॥
एतो अ जोइ आभरणातणी पूजा नीपनी ।
हिव आरंभिसु जिणह अंगि सुरहां कुसमनी ।
कीजइ कुसमे चंगेरीयए पूज कारणि रूयडी ।
वाधरीइ दीठु देवकाजि अग्गइ छाजी छयडी ॥ ३७ ॥
रायचंपु केतकी जाइ सेवत्री परिमल ।
बउलि सिरीयालउ बेअलु अनु करणी पाडल ।
नीलउत्री विचि पूजमाहिं सोहइ अतिचंगी ।
विनयनि दीसइ रूयडे तिणि नवनवभंगी ॥ ३८ ॥
नाकउ कणयक पूजमाहिं घरणकि सोहंती ।
परिमलु पसरइ कुसुमजाति पाछइ विहसंती ।
कुंदु अनइ मुचकुंदु वालु जूइं परिजाते ।
एसे कुसुमि करउ पूज तुम्हि निरुपणपत्ते ॥ ३९ ॥

सुरहउ मरुयउ मावर्ग्गा अनइ कल्हार ।
समुगयइ मोहइ वीतराग सामी सुरसार ।
नीलउर्घ्ग्गा नागवेलि पानमांहि जा सोहइ ।
इणपरि पूजइ सामिमाल्ह नरनारी भव्व ॥ ४० ॥
एहि रामणागयइ पूज मोइ मींकी सोहंती ।
तउ नक्षत्रहमणा माल दीपाइ चंगी य ।
तेत्तीयइ माहि भुयण जिणबिंवहचेरी ।
आणी कुसुमे पूजियइ ते समि संलेवी ॥ ४१ ॥
समोसरणु जो पूजीयए जो सिद्धिपयारू ।
विहु पन्नि दीसइ वीतरागु जहि तिहुयणसारू ।
तउ पूजा मीयरी पूठि धूपउटजउ लीजइ ।
वीजणिय ऊवेवितु गुरु नहि घंटी वाजइ ॥ ४२ ॥
धूप अगुरु सानिपारंमि डावडी जि कीजइ ।
दंडासणे अतिरूयडे जिणभुयणु पुंजीजइ ।
आरेरिहि मंजूस भली अग्गय चउकोवट ।
दीइउ आम्ने करउ भली य मंगलीक आठ य ॥ ४३ ॥
पद्ममाणु परवलसु अनइ भहासणु छत्रू ।
दप्पणु नंदावरतु तहि साथिउ श्रीवत्सू ।
अठ मंगलीक तीण पाटि भरियइ जिनआगइ ।
इणपरि जं भन येषाइ ए मं लेखइ लागइ ॥ ४४ ॥
दीवा कीजइ जिनभुवणि छत्रत्रउ दीजइ ।
चमर ढलंते वीतराग तेहि धनु वेचीजइ ।
ते उलोच कारावियइ जिणभुवणमज्झारे ।
यान्नोटा मरवर अ लंव कीजइ जिनवारे ॥ ४५ ॥
तोरण चंदुरवाली वारि सापि जिणभुवणि ।
पूजा जोइ सहु कोइ आवइ तीणि खिणि ।
पूजा जोइवा जिणह सुयणि तोइ सुहगुरु आवइ ।
तउ संघिहि आग्रहु करीउ तीठे रहाविय ॥ ४६ ॥
पडपउ वेला एक प्रभु अहां उच्छयु होसिइ ।
संघवयणु मानेवि सुगुरु निसि सिखं पइसइं ।

तिणि वेलां वइसणां पाटि जोइ पाटल्ला।
चउकीवटि वइसंति सुगुरु तउ भावइ भल्ला ॥ ४७॥
वइसइ सहूइ श्रमणसंघ सावय गुणवंता।
जोयइ उच्छवु जिनह भुवणि मनि हरप धरंता।
तीछे तालारस पडइ बहु भाट पढंता।
अनइ लकुटारस जोईई खेला नाचंता ॥ ४८ ॥
सविहु सरीषा सिणगार सवि तेवड तेवडा।
नाचइ धामीय रंभरे तउ भावइ रूडा।
सुललित वाणी मधुरि सादि जिणगुण गायंता।
तालमानु छंदगीत मेलु वाजिंत्र वाजंता ॥ ४९ ॥
तिविलां झालरि भेरु करडि कंसालां वाजइं।
पंचशब्द मंगलीकहेतु जिणभुवणइं छाजइ।
पंचशब्द वाजंति भाडु अंबर वहिरंती।
इणपरि उच्छवु जिणभुवणि श्रीसंघु करंतउ ॥ ५० ॥
तउ आरत्ती परुगुणउं कीउं आरती पटऊपरि।
ऊठिउ संघपति विधिहि सहिउ तउ साहीउ विहुकरि।
नीर लुण उतारियए कुसुम उतारी।
संघपति ऊठी सेसि भरइं सइहत्थिहि माडी।
संघपति आरती लिया हुइ जउ वार घडेरी।
आरती जोगी थांभली अ आणउ गरूएरी ॥ ५१ ॥
पाछइ जिणगुण गाइ पढइ सहू पालउ लोक।
श्रीसंघु तीह अ दानु दियइं जीह जेसा जोगू।
उतारीइ आरतीअ तोइ संघपति सइ हरष्यिउ।
रोमांचीसारीरु तहि जिणदंसणु देखीउ ॥ ५२ ॥
मंगलीकु उतारीयए घंट वाजइ सरूइं।
श्रीसंघु करइ प्रभावना जिणसासणि गरूइं।
तउ विधि वांदियउ वीतराग श्रीसंघु उतारीउ।
इणपरि सुकृतभंडारु तोइ भव्यजीविहि भरियउ ॥ ५३ ॥
जे जिन भुवणतणां कृत्य ईह छेडइ कहिया।
ते गृहचैत्य करावियइ सविशेषिहि सहिया।

अनि अ ज काई कोइ ठामु मूं हूइं वीसरियउं।
तेउ तुम्हि भविय करावि जि अ सहूइ सांभरियउं ॥ ५४ ॥
उछपुं जिनभुवणभि हरपि निधमणि करइ संघु जयवंतु।
नितु हिव श्रीजउ क्षेत्रु कहिसु पवित्रु सुणउ जीव जे जिणभणितु॥५५॥
श्रीजउ क्षेत्रु सु संभलउ ए परलोयणे जं भणिउं वीयराइ।
गुणगंभीर सो जिणह वयणु मृगलोयणे तसु नवि ऊपम काइ ॥ ५६ ॥
वचन इकेका मूलु नही वरलोयणे जं बोलइ भगवंतु।
त्रिहु भुवणे चूडामणि य मृगलोयणे सहू जाणइ अरिहंतु ॥५७॥
पढ कवण व्याप जिनवचनतणउ वर० बुज्झइ लोकु अलोकु।
सउ जि सिद्धंत ज सलहीअइ ए मृग० देअइ सिद्धिसंजोगु॥५८॥
गणधर करइ जं पुव्वधर वर० सुयकेवलिहि करंतु।
दसपूरवधर जं करइ मृग० तं भणियउ गइ सिद्धितु ॥ ५९ ॥
त्रिहु भुवणहतणउ जाणियइ वर० आगममाहि विचारु।
चउदपूरव इग्यार अंग मृग० करइ गोतमु सुतिहारु ॥ ६० ॥
सूत्रहार तहि निउछणा ए वर० जिणि जाणिउ एउ सूत्र।
त्रिपदी आपी य वीरनाथिइ मृग० आपउं गोतम पूतु ॥ ६१ ॥
केवलनाण वुच्छिति गयउं वर० गया सवि पूरवधर।
जे हुंता गुरु प्रज्ञघणाउं मृग० गया सु ते मुनिवरा ॥ ६२ ॥
अल्पप्रज्ञह नवि धाहरए वर० जिणवयणुं निरुपमु।
तीणि कारणि श्रीसंघ मिलीय मृग० पोथे ठवीउ आगमु ॥ ६३ ॥
भक्षाभक्ष सो बुज्झियए वर० अस्तो गम्मागंमु।
कृत्याकृत्य परीछियए मृग० जाणीयइ धम्माधम्मुं ॥ ६४ ॥
धन जीवी लाहउ लिउ ए वर० बुज्झियइ एहू विचारु।
श्रीसिद्धंतु लिखाविपए मृग० जोउ त्रिहुभुवणह सारु ॥ ६५ ॥
श्रीजउ क्षेत्रु इस पावीयए वर० चित्ति संवेगु धरेउ।
केवीउ वित्त लिखावियए मृग० श्रीसिद्धान्त जणउ ॥ ६६ ॥
वाहूदंड पोथा कराउए वर० पोथीय नोकी य तोइ।
ज्ञानलगइ सवि लाभ हुइ मृग० एह विचार तूं जोइ ॥ ६७ ॥
पाठां दोरी वींटणां वर० वर सिद्धांतह भत्ति।
पानीदोरा उत्तरीय मृगलोयणे पोथीय पोथीय सत्ति ॥ ६८ ॥

बीजउ क्षेत्रु इम वावउ निरुपम लियउ लाभु छूंतातणउ ।
जिम अट्ठकम्म गंजीउ भवदुह भंजीउ सिद्धिनयरि लेसिइ मुणउ॥६
हिव श्रीश्रमणसंघभत्ति करउ जीव तुम्हि यथासत्ति ।
पहिलउ कीजइ तोइ पावयणा अनी य विशेषिहि आयरियठवणा
इणपरि श्रमणुक्षेत्रु वावीजइ निश्चय भवसागरु तरीजइ ।
जे जिनवरि मुनि कहिया आगमि क्रियासार अनइ खरतर संजमि॥७
पंचमहव्वयभारु धरंता दस अनु च्यारि उपगरण वहंता ।
नव कल्पिइ विहार करंता ते मुनि भणियइ चारित्तवंता ॥ ७२ ॥
जे मुनि पंच समिति छइ समिता त्रिहुहि गुत्तिहि जे अछइ गुप्ता।
सीलंग सहसअढार वहंता ते मुनि भणियइ उपसमवंता ॥ ७३ ॥
जे मुनि निम्मल निरहंकार सदाचार दीसइ सुविचार ।
जे धुरि जूता गणगच्छभारा ते मुनि भणिया गुणह भंडारा ॥ ७४ ॥
ईणपरि भल्ला क्षेत्र विशेपि दियउ दानु तुम्हि भवि हरखि ।
जिम तु छूटउ भवना भार पामउ सिवसुखु निरुपमसारु ॥ ७५ ॥
जे जिनआण सदा छइ रत्त वावीस परीसह सहइ अपमत्त ।
जिनआदेसु धरइ सिरिऊपरि ते जि महामुनि नमीयइ सुरवरि ॥७६॥
बईतालीसदोपसुविसुद्धउ लियइ आहारु जे जिणवरि दिट्ठउ ।
इंदियविपयव्यापि नवि गूचइ तवि नीमि संजमि खण वि न मूचइ ॥७७॥
किसुं घणउं हउं कहउ विचारो मुनिरयणगुण न लहउं पारो ।
अनुव्रतु चालइ जे जिनआण ते मुनि भणीयइ मेरुसमाण ॥ ७८ ॥
प्रसंसीइ मुनि जिहि गुणि सहिया ते गुण जिणवरि श्रमणी कहिया।
एकु विशेषु पुण श्रमणी दीसइ वहइ उपगरण तोइ पंचवीसइ ॥ ७९ ॥
चालइ खड्गधार तोइ ऊपरि सीलवंत ति नमीइं सुरवरि ।
महासती जे छइ अपमत्त धारा भणइ हूं तेहि पवित्त ॥ ८० ॥
जीह जिनआण हियइ परिणमी ते श्रमणी तोह मेरह समी ।
जे सिद्धी जिणआण करंती धनु धनु श्रमणी ते महासती ॥ ८१ ॥
जिणसासणु जेहि य इम उज्वालिउ कसिमल पावपंकु पखालिउ ।
एउ साहू अनइ श्रमणी खित्त वाविन धामी हुईउ सवित्त ॥ ८२ ॥
जा हियडां तूं संपति अच्छइ इसीय वराप न पामिसि पछइ ।
जउ भलखेत्रिहि वित्त न वाविसि पाछइ परभवि किसउ लुणाविसि॥८३॥

परात्र दत्तौ विनु वाविसि साक ऊगिसि तउ मनु काइ फलवारु ।
जउ भावश्रेष्ठि पराणहं वाविसि तउ इक्कुगुणइ अणंतगुणं पाविसि ॥८४॥
ए भण्डं क्षेत्रं जिनवरि कहिया पावे धर्म्मा भावणसहिया ।
तउ थीजे अनुमोदनापाणी जिम हुइ सफली गय निरवाणी ॥ ८५ ॥
ईणपरि पाषीजइ मुनिगेपु दीजइ भक्त पानु गुणंतू ।
विषादानुं जउ दीजइ साकु जिणु भणइ तेह पुन्य नहीं पारु ॥ ८६ ॥
औषधआदि सहु सूझतउ तं तं दीजइं नियघरिहुंतउं ।
भनिउ ज्ञ काइं मुनि उपगरइ तं गहतूं पहरउं करइ ॥ ८७ ॥
जं जं मुनि जोअइ सूझतउं तं तं दीजइं नियघरहुंतउ ।
गुरु आवंता कीजइ अभिगमणउ दीजइ भक्ति षाभवंदनउ ॥ ८८ ॥
विनउ वेयावचु भलीउ विदोपिउ कीजइ भलीउ महासुनि देखीउ ।
पर्युपासि महा कीजइ घणी य जिम जिम जिनवरि आगमि भणीय॥८९॥
एह ज परि श्रमणी जाणेवी करउं भक्ति तुम्हि हरिस्य धरेवी ।
जं धुय महासुनि दीजइ तं तं श्रमणी कीजइ ॥ ९० ॥
आगइ सांइ पूर्विहि सुणीअइ धनु धनु सारथवाह कहीजइ ।
घीउ विहिराविउ जिणि मुणिंदउ तिणि कलि हूयउ पढम जिणंदू ॥९१॥
हथिणाउरि नयरि श्रेयंसिहि पाराविउ रिपुभु इक्षुरससिहि ।
तिणि कलि तिण भवि केवलु ज्ञानु दिइन भविकु मुनि इणपरि दानु॥९२॥
वीर जिणेसर छट्ठा मास चंदण पारावइ कोमास ।
तीणि दानि शिव संपति पामी दियउ दानु तुम्हि अनुवत धामी ॥९३॥
जोइन संगमि कीउं मुनि पारावीउ खीर खांड घीउ ।
तिणि कलि तु सर्वार्थसिद्धि पामी पाछइ होसिइ सिवसुहगामी ॥ ९४ ॥
इउ भट्टउ खेतू वावउ वितू अतिफलीअइ संवेगचित्तू ।
सिवसुह संपत्ती देइन भत्ति सामिसालु आगमि भणित्ति ॥ ९५ ॥

हिव सांइ श्रावकतणउं क्षेत्रु भवी कहीसइ ।
जउ जिणसासणतणी भूमि अतिभलउं फलीसिइ ।
किसउ सुश्रावक जाणिवउ जिणसासणभितरि ।
श्रीवीतरागतणी य आण मानइ सिरऊपरि ॥ ९६ ॥
समकितमूल बार वरत पालइ नरनारि ।
निवसइ हियडइ वीतरागु एक जि सुरसारु ।

कामदेव जिम चलइ नहीं वीतरागह धर्म ।
वीरनाहु जिणवरु दिगइ तसुनी ऊपम्म ॥ ९७ ॥
सदाचारु सुविचारु कुसलु अनइ निरहंकारु ।
शीलवंत निकलंक अनइ दीनगणआधार ।
जिनह वचनि तिम सातधातु जीह श्रावक भेदी ।
जाणे तीह गर्भवासवेलि मूलहुंति छेदी ॥ ९८ ॥
जाणइ ऊचितु सहू काय साचउ विवहार ।
त्रिधा सुद्धि मनमाहि वसइ इकु निश्चउ सारु ।
उत्सर्ग अनइ अपवाद एह जाणइ सविसेषू ।
भणियइ श्रावकतणी भावीय मूलिइ सा जीह एहु विवेक ॥९९
जे पुण श्रावकतणा भविय कहीयइ जिणसासणि ।
ते गुणु जिण भणइ श्राविया जाणेवा नियमा ॥ १०० ॥
त्रिधा सुद्धि वीतराग वसइ मनभीतरि जीह ।
सुलहउ सिवपुरतणउ वासु तो श्रावक तीह ।
पढइ गुणइ जिणवयणु सुणइ संवेगि संपूरिय ।
सील सनाहि पहिरिइ क्रमऊपरि सूरी ॥ १०१ ॥
ईहं तु श्रावकतणउ क्षेत्रु वावु सवि दीस ।
जे तुम्हि भवियउ अच्छइ काइ धर्मतणी जगीस ।
जिम भरयेसरि वावी रिसहेसरनंदणि ।
गृहवासऊपरि ज्ञानु जासु पसरीउ तिहुयणि ॥ १०२ ॥
तिम तुम्हि वावेउ भलीपरि भविउ इउ खित्तु ।
लहिसउ फल निरवाणलयरि तिम तिहां वहुतु ।
पहिलूं कीजइ महाविनउं गुणश्रावक जाणी ।
पाय पखालीय सहहाथि लेउ कुंकुम वाणी ॥ १०३ ॥
पाछइ भोजनुं भलीयभक्ति सविवेकिहि सहियउ ।
दीजइ श्रावकश्राविकां एउ आगमि कहिउ ।
ऊपरि उगटि फूल पान कापड अनुमानिथ ।
दीजइ निजभक्ति भलां गरूयइ बहुमानि ॥ १०४ ॥
भरयेसर जिम श्रावकह दीजइ आवासे ।
लीणा जे जिनवयणि अछइ घणगुणह निवास ।

ईह सातइ क्षेत्र इम बोलीया आगमअनुसारे ।
पुण तुम्हे चावीयं भलीयपरि चित्त आणारे ॥ ११३ ॥
न्यायनीति चितु लिउं तीउ भानकि थानें ।
जिणसासणि वेचीतु फुलि कमल सु नहानें ।
संघसमुदाइ सहू कोइ तीरथ वंदानें ।
देवजात्र गुरुजात्र करीइ तउ भलउ भणानें ॥ ११४ ॥
इम चितु सु वेचउ धम्म सु संचउ अप्पं जीव म वंचसुउ ।
वली न लहिसउ मस्तावु एसउ करउ सफलु भव माणसउ ॥ ११५ ॥
सातक्षेत्र इम बोलिया पुण एकु कहीसिइ ।
कर जोडी श्रीसंघपासि अविणउ मागीसइ ।
कांईउ ऊणं आगउं बोलिउं उत्सूत्र ।
ते बोल्या मिच्छा दुकडं श्रीसंघविदीतुं ॥ ११६ ॥
मूं मूरष तोइ ए कुण मात्र पुण सुगुरुपसाऊ ।
अनइ ज त्रिभुवनसामि वसइ हियडइ जगनाहो ।
तीणि प्रमाणिइ सातक्षेत्र इम कीधऊ रासो ।
श्रीसंघु दुरियह अपहरउ सामी जिणपासो ॥ ११७ ॥
संवत तेरसत्तावीसए माहमसवाडइ ।
गुरुवारि आवी य दसमि पहिलइ पखवाडइ ।
तहि पूरु हूऊ रासु सिव सुख निहाणूं ।
जिण चउवीसह भवीयणह करिसिइ कल्याणूं ॥ ११८ ॥
जां सिसि रवि गयणंगणिहि ऊगइ महिमंडलि ।
ता वरतउ एउ रासु भविय जिणसासणि ।
निम्मल ज ग्रह नक्षत्र तारिका व्यापइं ।
गयचंतु श्रीसंघ अनइ जिणसासणु ॥ ११९ ॥

इति सप्तक्षेत्ररासः समाप्तः ।

कछूलीरासः

जिम दुरीउविहंडणु रोलनिवारणु तिहुयणमंडणु पणमवि सामीउ पासजिणु।
ग्गुरिहिं पंसा वीजासाहह धंनिसु रासो धमीय रोलु निवारीउ।
प महीयलि जाणउं अठारसउ देसु यपाणउं गोउलि धत्ति रमाउलउ ॥
नम परमार राजु करइं नहिंछे सविचार आबूगिरिवरु तहिं पवरो।
हीं आदिजिणंदो अचलेसरु सिरिमासिरि वंदो तसु तलि नयरी य वखीयए।
ाह कम्मणमूली कछूली किरि लंकविसाली सरमयवावि मणोहरी य ॥
नम्हि नयरी य नम्हि नयरी य वसइं वहू लोय।
चिंतामणि जिम कुच्छीयहं दीइं दानु सविवेय हरिसि य।
सवइं सोलि ववहरइं कूडकपडु नवि ते य जाणइं।
गलीउं जलु धाढी पीइ धम्मकम्मि अणुरत्त।
एकजीह किम वर्णीइ कछूली सु पवित्त ॥
लउ जिसु कविलासो गुरुमंडपु पुतलीयविणासो पासभूयणु रलीयामणउं।
मणि आणंदु आणइ जसहडनंदणु तं परिमाणह सतरि भेदि संजमु परिपालइ।
ारिपहसुरि गुण गाजइ एगंतर उपवास करेइ बीजा दिण आंबिल पारेइ।
देसण आवइ रयणिहिं अप्पसंति गुरु वंदीइ कविलकोटि श्रीय-सुरि विहरंतइं।
ेयां तुरंतइं सइ नर आवीय पंचसयाइं समिकति नंदइं वहू य वयारह।
छाहडनंदणु वहु गुणवंतउ दीस्व लीइ संसारविरत्तउ।
लापणछंदपरमाणपरिरूणु आगमधम्मवियारवियरूणु।
छत्रीसी गुरुगुणि जुत्तउ जाणीउ नियपदि ठविउ निरूतउ।

माणिकपहुसूरि नामू श्रीयसूरिप्रतीछीउ कच्छूलीपुरि पासि भूयलि।
सावयलोय करइं तसु भत्ती नवनवधम्ममहूसवजुत्ती।
श्रीयसूरि आरासणिअठाही अणसणविहि पहूतउ सुरनाहि।
निवीय आंबिलि सोसीय नियकाया माणिकपहुसूरि वंदु...
विणठदेहु जस धवलइ राणी पायपखालणि हुई य पहाणी।
माणिकसूरि जे कीध जिणधम्मपभावण इकमुहि ते किम वन्नउ

पणानव

कालु आसन्नु जाणेवि माणिकसूरि नयरिकछुलि जाणवि गुणमणिगिरि।
सेठि वासलसुउ वादिगयकेसरी विरससंसारसरिनाहतारणतरी।
संघु मेलवि सिरिपासजिणमंदिरे वेगि नियपाटि गुरु ठविउ अइसइ परे।
उदयसिंहसूरि कीउ नामि नाचंती ए नारिगण गच्छभरु सयलु समपीजए।
सूरु जिम भवियकमलाइं विहसंतओ नयरि चड्डावली नाथ संपत्तओ॥
वन्न चत्तारि परवाणि जो रंजए राउलो धंधलोदेउ मणि चमकए।
कोइ कम्माली पाऊयारूढओ गयणि खापरिथीई भणइ हउं वाईओ।
पंडिते बंभणे तापसे हारियं राउलोधंधलोदेविहिं चिंतियं।
वादिहिं जीतउं नयरो नवि कोउ हरावइ उदयसूरि जइ होए अम्ह मागु रहावए।
वस्त—जित्त नयरि य जित्त नयरि य सयलमुणिसीह।
नीरंतइं नीरु पडो गरूयदंडडंबरु करंतइं।
धंधलु राउलु विन्नवइ सामिसाल पइ मझि संतइं।
बंभण तपसीय पंडीया जं त न बंधई वाल।
सु गुरु कम्मालिउ निव्वणीउ अम्ह अप्पउ वरमाल॥
धंधलजिणहरि सवि मिलिय राणालोय असेस।
उदयसूरि मंत्रिहि सहीउ नियसइ ए नियसइ ए निवसइ वरहरि पाडि॥
मल्लिपमाणी हरावीउ मंत्रिहिं ए मंत्रिहिं ए मंत्रिहिं वादुकमठो॥
सेयंवर तउं हिव रहिजे जे गुरुसिद्धिहिं चंडो।
विसहर आवतु परिपलि जे लंपीउ ए लंपीउ ए लंपीउं सुपयंडो॥
तउ गुरि मुद्दंतां मिल्हिकरि होइ गरडु पणेण।
धाईउ नीयउ भंगुरउ गिलीउ ए गिलीउ ए गिलीउ छालभुयंगो॥
पाउरिद्धि वि संमुहीय हरडरंतु धाउ वायो।
जोवगहार सवि पन्नलीय डोयवइ ए डोयवइ ए डोयवइ पहीउ दायो॥

तउ गुरि मूकीउ रयहरणु कीयउ सीहु करालो।
वाघह जं ता दूरि थीउ हरिसीउ ए हरिसीउ ए हरिसीउ नयरु सयालो॥
इत्थंतरि मुणि गयणठिय तसु सिरि पाडीय ठीव।
हुउ कमालीउ कालमुहो लोकिहिं ए लोकिहिं ए लोकिहिं याईय बूंब॥
छंडीउ माणु कवालधरो धाईउ वंदइ पाय।
खमि खमि सामि पसाउ करी जीतउं ए जीतउं ए जीतउ तइं मुणिराय॥
वस्तु—ताव संधीउ ताव संधीउ ठीव मंतेण।
गणहरि करि कम्मालीयह भिम्वभरीउ अप्पीउ मुहत्तिण।
रामिहिं जिम वायसह इग्गु निमुत्त सु हरीउ सत्तीण।
धारावरसि कयंतसमि भिडीउ डिंभीउ ताम।
प्रतपउ कोडि वरीस जिनउदयसूरिरवि जाम॥
चड्डावलिहिं विहरीउ प्रभु पहुतउ मेवाडि।
पासु नमंसीउ नागद्रहे समोसरीउ आहाडि॥
जालु कुद्दालिय नीसरणी दीयउ पारउ पंटि।
वादीय ढोडरु पइ धरए पहुत्तउ पमणउ पेंटि॥
केवलिभुकति न जिणु भणए नारिहिं सिद्धि सजाणि।
उदयसूरि पमणउ पलीउ जयत ल रायअथाणि॥
केवलिभुकति म भ्रंति करे नारि जंति ध्रुव सिद्धि।
तिसमयसिद्धा वज्जि जीय लीइं आहारु विसुद्ध॥
वीच वीर दीठंतु दीउ जिणु नंदिमुणिदेवि।
गयकुंभथलि आरूहीय पढमसिद्ध मरुदेवि॥
विवरणु पिंडविसुद्धि कीउ धमविहिग्रंथु प्रसिद्धु।
थीयपवंदणदीवीय रचीय गणहरु भूअणि प्रसिद्धु॥
अम्हहं साजणसेठे छम्मासहं कालो।
वसतिणि ऊपरि ऊपनउ पदि ठाविजि वालो॥
तेरहुरोत्तरवरिसे अप्पउं साधेइं।
चड्डावलि दिविहो जगि लीह लिहावी॥
कछूली जाएवि परमकल सु गच्छभारधरो।
पंचम वरिस वहंति सजणनंदणु दीखीउ।
देवाएसु छहेवि गोठीय सत्तमे वरिस छहो।

चउदीसि मेलीउ संघु आरीठवणउं विविहपरं ।
गोतमसामिहिं मंत्रु आपाम्रीजइ दिणी दीहए ।
जोगवहाणु वहेवि अंग इग्यारह सो पढए ।
त संजमि रणि जीतु सयरह चुकउ पंचसरो ॥
गूजरधर मेवाडि मालव ऊजेणी वह य ।
सावय कीप उवयार संघपभावण तहिं घणी य ॥
साम्रीसइ आपाडि लखमण मयधरसाहुसूओ ।
छयणीनयरमल्लारि आरिठवणउं भीमि किओ ॥
कमलसूरि नियपाटि सइं हथि प्रज्ञासुरि ठवीओ ।
पमीउ पमावीउ जीवु अणसणि अप्पा सुधु कीओ ॥
पणि पहुत्तउ सुरलोइ गणहरु गंगाजलविमलो ।
तासु सीसु चिरकालु प्रतपउ प्रज्ञातिलकसूरं ॥
जिणसासणिनह्चंदु सुहगुरु भवीयहं कलपतरो ।
ता जगे जयवंत उम्हाउ जां जगि ऊगइ सहसकरो ।
तेरमिसठइ रासु फोरिंडावडि निम्मिउ ।
जिणहरि दितसुणंतं मणवंछिय सवि पूरयउ ॥

फट्टीरासः समाप्तः ॥

सालिभद्दकक्क

भलि भंजणु कम्मारियल वीरनाहु पणमेवि ।
पउमु भणइ कक्कारिण सालिभद्दगुण केइ ॥ १ ॥
रुच्य वच्छ कुवलयनयण सालिभद्द सुकमाल ।
भरा पभणइ देव तुह्य कह थिउ इत्तिगयार ॥ २ ॥
रायग्गामपचीरनिहि समवसरणि ठिउ सामि ।
अज्जु माइ मइं वंदियउ वीरनाहु सिवगामि ॥ ३ ॥
भरइं कहु ता पुण कहि कउ दंसण किय वीरि ।
क्खनु अम्मु वम्पागिरउ कंचणगोरसरीरि ॥ ४ ॥
भारमनुइद आमन्दउ माइ कहिउ संवाद ।
मंजमनवहणाहेला मनु किमइ न लब्भइ पाद ॥ ५ ॥

गयममत्त वीरियपवर जे जगि पुरिसपहाण ।
सालिभद्द भद्दा भणइ संजमु सोहइ ताण ॥ ६ ॥
गारवयज्जिउ विन्नवउं काइउ मग्गउं माइ ।
जइ मोकलउ तउ व्रतु लियउं तुम्हह पाय पसाइं ॥ ७ ॥
घणकुंकुमचंदणरसिण तुह तणु वासिउ वच्छ ।
यपह परीसह किम सहिसि मुणि गंगाजलसच्छ ॥ ८ ॥
घाणइ पीलिय पंचसइं खंदगसूरिहि सीस ।
साहु माइ दुस्सहु सहइं एरिस धम्म जिगीस ॥ ९ ॥
नवि वउ लिज्जइ तरुणपणि सालिभद्द सुकुमाल ।
महु कुलमंडण कुलतिलय कुलपईव कुलवाल ॥ १० ॥
नाउं गव्वियहिं कुलतणइं पाविज्जइ भवछेउ ।
माइ मरीचि भव भमिउ वद्धमाणजिणुदेउ ॥ ११ ॥
वरणु लेसिजइ पुत्त तुहु नंदण नीयपवीण ।
रोअंती भद्दा भणइं मइं किम मेल्हिसि दीण ॥ १२ ॥
चारुचक्किबलदेव तह वासुदेव बलवंत ।
माइ तडि ढ्रिय परियणह कड्ढिउ लेइ कयंतु ॥ १३ ॥
छण मइलंछणसमवयण तुह भज्जा बत्तीस ।
ते विलयंती पेमभरि किम करिसि कुलईस ॥ १४ ॥
छारु जेम उडुइ सयलु अंतेउरु घरसारू ।
माइ जीवु जउ संचरइ छंडेयिणु दंढारू ॥ १५ ॥
जणणि भणइ जां बालपणु तां पुत्तह पडिबंधु ।
तारुन्नइ वुल्लाविअउ वहु उप्पाडइ कंधु ॥ १६ ॥
जाणिउ देह असारयलु भरहिं मूकउ मोहु ।
ताव माइ तसु विहिडियउं केवलनाण निरोहु ॥ १७ ॥
झलकंतउ कंचणघडिउ सत्तभूमिपासाउ ।
विहवह कोडाकोडि घण कहि कोइ उणउ ठाउ ॥ १८ ॥
झाणानलि जिणि कम्मवणु बालिउ गहिउं नाणु ।
वीरनाहु महु हियं सरणि रिद्धि रमणि अपमाणु ॥ १९ ॥
नरवइ सेणिउ तुम्ह पहु सुरगोभहु सुताउ ।
निच्चु नयलं आभरणु कहि को चिंत्ति विसाउ ॥ २० ॥

नाहक्कु सेणिउ तुम्ह मह्नु जइ किरि कह्रिइउ माइ ।
ता घणु कंचणु गेहवलु खण वि न चित्ति सुहाइ;॥ २१ ॥
टलटलेसि धम्मत्थ पुण धम्मगहिल्ला बाल ।
धम्म करेवा मह्नु समउ तुह्नु घणुरक्कण वाल ॥ २२ ॥
टालिसि चरण म माइ मइं देइ महावयसिक्क ।
वद्धमाणजिणवरकिरिहिं पुन्निहिं लब्भइ दिक्क ॥ २३ ॥
ठणकइ पुत्त सु चित्ति मह्नु पुत्तविहूणिय नारि ।
विह्वह मुचइ दुह्नु सहइ दोणी परघरवारि ॥ २४ ॥
ठामि ठामि जिउ हिंडिइउ भव चउरासीलक्क ।
माइ जि सहिया नरयदुह्नु ताह कु जाणइ संख ॥ २५ ॥
डरपिसि सुणियइ सीहसरि निसुणिसि सिवफिक्कार ।
भुक्खिइंउ तिसिइउ वच्छ तुह किम हिंडिसि नरसार ॥ २६ ॥
डालिहि चडियउ डालिसउ माइ म हल्लावेउ ।
पच्छइ कहि हउं चरणु कहि वद्धमाणुजिणदेउ ॥ २७ ॥
ढलइं चमर वर पुत्त तुह्नु सीसि धरिज्जइ छत्तु ।
मणिसीहासणि वइठणउं किणि कारणि वइचित्तु ॥ २८ ॥
ढाउ घिलग्गउ माइ मह्नु सिवपुरि रज्जहरेसि ।
थोलावउ डिउ वीरजिणु रहिसु न भयह किलेसि ॥ २९ ॥
नवउं अंतेउरु नवउं घरु नवजोवणु नवरंगु ।
मालिभगु नयरुणयतणु ढल करि चरणपसंगु ॥ ३० ॥
नाणु रसायणु करिसु हउं कम्मिभणदाहेण ।
निणि आऊरिसु माइ तणु जरा न दुक्कइ जेण ॥ ३१ ॥
तरुअरतलि आवासु मुणि भिरकइ भोगणु पाणु ।
गुमंडलि आमणु सयणु वच्छ चरणु दुहठाणु ॥ ३२ ॥
पालउ भंजिवि परसरइ माइ गेहि जमराउ ।
छुटइ यान्तु न युतु जणु पडइ अचिंतिउ घाउ ॥ ३३ ॥
धन्न डूंगर पाहण मयण कक्कर कंट तुसार ।
पागइयब्भिइ गुरि महिउ हिंडिसि केम कुमार ॥ ३४ ॥
धाइररहि न मजु मणु माइ कहिउ तउ सम्मु ।
वीरनाहु जिणु ववहरउ लेमु भरणु भणु धम्मु ॥ ३५ ॥

दहविह धम्मु करेसि किम किम सोसिसि निय अंगु ।
वच्छ तहं ता दोहिलउं होसिइ तुह सीलंगु ॥ ३६ ॥
दाणसीलतवभावणह अणु न सोसिउ जेहिं ।
माइ मणूभवु दुल्लहउ आलिहि हारिउ तेहिं ॥ ३७ ॥
धम्मु किद्दउ जिम रिसहजिणि तिम किज्जइ सुअ इत्थु ।
पहिलउं साखिहिं पसरिउ अंति पयासिउ तित्थु ॥ ३८ ॥
धाडउ जमरायहतणउ पडइ अचिंतिउ माइ ।
कड्डिउ लिज्जइ जीवु तिणि ग्रुंय न वाहर काइं ॥ ३९ ॥
नयकप्पूरिहिं पूरिया नंदण कोमल केस ।
केतगिवालइं वासिया किम उद्धरिसि असेस ॥ ४० ॥
नारायणबंधवु निसुणि तहिं दिणि दिक्खिउ वालु ।
सीसु अग्गि दुस्सहु सहइ माइ सु गयसुकुमालु ॥ ४१ ॥
पइ सुअ तइं पहरियां रसियउं दिव्व अहारु ।
सुअ उव्वासिहिं सोसिया केम करेसि विहारु ॥ ४२ ॥
पालिसु पंच महव्वइं वारस अंग पढेसुं ।
वीरनाहिसुं माइ हउं नयकप्पिहि विहरेसु ॥ ४३ ॥
फणिरायह सिरि पुत्त मणि मुल्लेण य वहुमुल्लु ।
सा गिण्हंता पाणहर संजमभरु तस तुल्लु ॥ ४४ ॥
काढिज्जइ करवत्तु सिरि पाइज्जइ कत्थीरु ।
माइ दुक्कु नारय सुणिउ महु उल्लसइ सरीरु ॥ ४५ ॥
वत्तीसइं पल्लंकि तउं सयणु करइ नितु जाइ ।
डूंगरि कासुग्गि करिसि किम वलि किज्जउं तह काय ॥ ४६ ॥
वार मास कासग्गि रहिउ वाहूवलि मुणिराउ ।
नाणह कारणि तिणि सहिउ सीअ उुअ जलु वाउ ॥ ४७ ॥
भमिसि विहारिहिं भारिअओ नंदण तुं सुकुमालु ।
वीर जिणंदह चरणु पुणु मुणि वायवउं कालु ॥ ४८ ॥
भारु माइ मुक्किय वहइ रासहवसहपमुक्क ।
आरंकुसकसि ताडियइं ताहं कु जाणइ दुक्कु ॥ ४९ ॥
मयलंछण जिम तारयहं सयलहं किल भत्तारु ।
तं वत्तीसहं वहुअरहं एक्कु देव आधारु ॥ ५० ॥

माइ महामुणि वीरजिणु कुलगुरु मह संताणि।
तसु मइं अप्पं अप्पिउं जिम सुहु होइ निगाणि॥ ५१॥
यइ तउं संजमु लेसि सुअ मेल्हिवि सयलु सिणेहु।
ता गोभइ अभागिइउ हा विणु छुइउ गेहु॥ ५२॥
याइयनाइगु नेमिजिणु गुणसोहग्गनिवासु।
माइ सिद्धिपट्टणि गयउ मेल्हेविणु गिहवासु॥ ५३॥
रहि रहि नंदण वयणु सुणि मा मा मइं संतावि।
तुह विणु नितु कुण पूरिसइ मुक्काहरणइ वावि॥ ५४॥
राहडि पूरिय माइ तइं मह्वकेरा सविचार।
दिक्क दियावह जिणभणिय जा तियलोअह सार॥ ५५॥
लइकइंसउं संजमु लियए नंदसेणु मुणिराउ।
सो संजमुप्पव्वइपढिउ सुअ भोगह कम्मपसाय॥ ५६॥
लाहइं विणिजु करेसु हउं छेहउ माइ चएसु।
ईणि असारि देहडि य संजमु सारु गहेसु॥ ५७॥
वच्छ ति नारी दुक्खनिहि जाहं न कंतु न पुत्तु।
मह्वत्तइं नंदण जाइयइं हिव आविउं निरुत्तु॥ ५८॥
वार स माइ सलक्खणीय तं सुहुत्तु सुपवित्तु।
पक्ष ति वंधव जणइलण चरणु लेइजइ पुत्त॥ ५९॥
सहसाकारिहिं गहियवउ सुमइ कंडरिएण।
नंदण तेण य नरइदुह पामिय भद्दवएण॥ ६०॥
सारउं लाडउं मिलिए मुह माइ कहिउ तउ सम्भु।
वीरजाइ किउ वबइ ओ लेसु चरणु घणु रम्मु॥ ६१॥
पलइ पणोरह पूजिसइं सज्जण होसिइ सोसु।
नंदण धाइसि समणु एउ मह कम्महं दोसु॥ ६२॥
पाससारु वेयणपमुहवाहि माइ तणु मूलु।
जीवु तेहिं पंथोलियइ उड्डइ जिम लहु तूलु॥ ६३॥
समल देह कप्पद समल रत्तिदिवस गुरुआण।
होइसिइं तुं भद्दा भणइ परआइत्त पराण॥ ६४॥

सालिभद्दु जंपइ जणणि ए महु कहिउ जिणेण ।
संजमविणु भवभयहरणु माणु न किज्जइ केण ॥ ६५ ॥
दुस्सतरोअंता पारुणउ ताम हसंता होउ ।
सालिभद्द संजमु लियइ महु बुज्झिअइ पमोहु ॥ ६६ ॥
हारमउडकुंडलकलिउ चडिऊ पुरिसविमाणि ।
धीरपासि पहुतउ कुमरु जण दिज्जंतइं दाणि ॥ ६७ ॥
क्षमासमणि भरातणइं दिक्खिउ जिणिहि कुमारु ।
सालिभद्द बहु तवु करइ आगमु पढइ अपारु ॥ ६८ ॥
क्षामेविणु जिण मुनिसहिउ अणसणु गहिउ उवधु ।
सव्वट्ठह सिद्धिहि गयउ सालिभद्द तहिं धन्नु ॥ ६९ ॥
महाविदेहिं सु मुणि गहवि केवलनाणु लहेवि ।
सासयसुक्ख वि पाविसहि भवियह धम्मु कहेवि ॥ ७० ॥
इह कहियउ फक्कड कुलउ इकहत्तरि कडुयाह ।
भवियउ संजमु मणि धरउ पढहु गुणहु निसुणेहु ॥ ७१ ॥

सालिभद्दकाक समाम.

दूहामातृका

भले भलेविणु जगतगुरु पणमउं जगह पहाणु ।
जासु पसाइं मूढ जिय पावइ निम्मलु नाणु ॥ १ ॥
ॐकारिहि उधरउ परमिट्ठिहि नवकारु ।
सियमंगलु कल्लाणकरो जासु वि नामुचारु ॥ २ ॥
नवनिहि धम्मिहि संपडए सक्कलक्खहरिरिद्धि ।
धम्मु इक्क करि धीर जिव सइ कर आवइ सिद्धि ॥ ३ ॥
मणगयवरु झाणुंकुसिण ताणिउ आणउ ठाउं ।
जइ भंजेसइ सीलवणु करिसइ सिवफलहाणि ॥ ४ ॥
सिज्झइ तसु सवि कज्जड जसु हियडइ अरिहंतु ।
चिंतामणिसारिच्छ जिय एहु महाफलु मंतु ॥ ५ ॥
धंधइ पडियउ जीव तुहुं खणि खणि तुट्टइ आउ ।
दुग्गइ कोइ न रक्खिसइ सयणु न बंधवु ताउ ॥ ६ ॥

मिलियउ धम्मियसाथडउ उज्जिलमग्गि वहेइ ॥ ७ ॥
इह वइयाणइ चउहटइ दीसइ सीहविमाणु ।
रंनडुलइ बोलावी अंमुलअग्गेवाणि ॥ ८ ॥
इय वइयाणइ जि हुइइ हियडउं रइ न करेइ ।
दिवि दिवि वंदइ नेमिजिणु चडियउ गिरिसिहरेहिं ॥ ९ ॥
पाइ चहुटइ कक्करीउ उन्हालइ लू वाइं ।
जे कायर ते वलिया जे साहसिय ते जाइं ॥ १० ॥
साहिलडा सरवरतलिहिं उग्गिउ दवणछोडु ।
उजिलि जंते धंमिए गुंथिउ नेमिहिं मउडु ॥ ११ ॥
सहजिगपुरि घोलेविणु गंगिलपुरहिं पहुत्तु ।
माडी कहिजि संदेसडउ अंनु जिणेजे पुत्तु ॥ १२ ॥
जइ लखमीघरु बोलियं पेखिवि वडु य पलास ।
तउ हियडउं निवरु थिउं मुक्क कुडुंबह आस ॥ १३ ॥
विसमिय दोत्तडि नइ घणिय डुंगर नत्थि च्छेऊ ।
हियडउं नेमि समप्पियउं जं भावइ तिंव नेऊ ॥ १४ ॥
करवंदियालं वोलियउं अणंतपुरू जहिं ठाइं ।
दिन्नउ तहिं आवासडउ हियउं विअर्द्धि थाइं ॥ १५ ॥
नालियरीडुंगरितडिहिं बहुघोराउलिठाइं ।
धम्मियडा वोलिउ गिया अमुलतणइ सहाइं ॥ १६ ॥
भालडागडुसुनउ अविघडउं वसेइ ।
धम्मिय कियउ वीसावउ सुरघारडीघरेहिं ॥ १७ ॥
ओ दीसइ उद्दुंधलउ सो डुंगरु गिरनार ।
जहिं अच्छइ आवासियउ सामिउ नेमिकुमारु ॥ १८ ॥
मंगूखंभि न मणु रहिउ अंनु वहडेउ दिट्ठु ।
खडहड अंगु पखालियं गोवाडलिहि पहुट्टु ॥ १९ ॥
भाद्रनई जह वोलिउ नाचइ धंमिउ लोउ ।
उजिलि दीवउ वोहियउ सुरठडिय हुउ जोउ ॥ २० ॥
खंडइ देउलि जउ गिया सांकलि वोलिवि ।
धंमिय कियउ आवासडउ वंचूसरितलि नेई ॥ २१ ॥
ऊजिलमग्गि वहंता रज्ज लागइ जसु अंगि ।

वलि किज्जउं तसु धम्मियह इंदु पसंसइ सग्गि ॥ २२ ॥
जे मलि मइला पहियडा ते मइला म भणेजे ।
पावमली जे मइलिया ते मइला ह सुणेजे ॥ २३ ॥
एउ वाउह लोडउं कोटउं तलि गिरिनारु ।
ओ दीसइ चवणथली धवलियतुंगपगार ॥ २४ ॥
घर पुर देउल धवलिया धज धवली दीसंति ।
धंमी सा चवणथली ऊजिलितलि निवसंती ॥ २५ ॥
चउणथली मेलेविणु जउ लागउ गढमग्गि ।
तउ धंमिउ आणंदियउ हरिसु न माइउ अंगि ॥ २६ ॥
रिसहजिणेसरु वंदियउ गढि आवासु करेवी ।
नाचइ धंमिउ हरसियउ हियडइ नेमि धरेवी ॥ २७ ॥
गढु घोली जउ चालीयउ तउ मणि पूरिय आस ।
वलि किज्जउ हउं जंघडिय जोयण वूढ पंचास ॥ २८ ॥
टोलह उपरि मागडउ सो लंघणउ न जाइ ।
पाउ खिसियउ विसमउ पडइ हियं विभडइं धाई ॥ २९ ॥
अंचणवाणी नइ वहइ दिट्ठु दमोदरु देउ ।
अंजणसिलहिं जि अंजिया धन्न ति नयणा वेउ ॥ ३० ॥
तरवक्खणइ पलांवडे रूडउ मागु जंघेवि ।
कालमेघु जोहारियउ वन्त्रापदि जाएवी ॥ ३१ ॥
अंबाजंबूराइणिहिं बहु वणराइ विचित्त ।
अंचिलिए करवंदिएहिं वंसजालि सुपवित्त ॥ ३२ ॥
नीझरपाणिउ खलहलइ वानर करहिं बुक्कार ।
कोइलसदु सुहावणउ महि डुंगरि गिरिनारि ॥ ३३ ॥
जउ मइं दिट्ठी पाजडी उंच दिट्ठु पहाडु ।
तउ धंमिउ आणंदियउ लद्ध सिवपुरि ठाउ ॥ ३४ ॥
हियडा जंघउ जे वहइं ता ऊजिति चडेजे ।
पाणिउ पीउ गइंदपइ दुक्ख जलंजलि देजे ॥ ३५ ॥
गिरिचाइं छंडोडियउ पाय धाहर न लहंति ।
कडि मोडइं कडि थकी हियडउं सोसइ जंति ॥ ३६ ॥
जाय न पंथलि पट्ठिया लखुपत्तीपाण ।

मिलियउ धम्मियसाथडउ उज्जिलमग्गि वहेइं ॥ ७ ॥
इह वडवाणइ चउहटइ दीसइ सोहविमाणु ।
रंनडुलइ वोलावी अंमुलअग्गेवाणि ॥ ८ ॥
इय वडवाणइ जि हट्टइ हियडउं रइ न करेइ ।
दिवि दिवि वंदइ नेमिजिणु चडियउ गिरिसिहरेहिं ॥ ९ ॥
पाइ चहुट्टइ कक्करीउ उन्हालइ लू वाइं ।
जे कायर ते वलिया जे साहसिय ते जाइं ॥ १० ॥
साहिलडा सरवरतलिहिं उग्गिउ दवणछोडु ।
उजिलि जंते धंमिए गुंथिउ नेमिहिं मउडू ॥ ११ ॥
सहजिगपुरि वोलेविणु गंगिलपुरहिं पहुत्तु ।
माडी कहिजि संदेसडउ अंनु जिणेजे पुत्तु ॥ १२ ॥
जइ लखमीधरु वोलियं पेखिवि वड्ड य पलास ।
तउ हियडउं निवरु थिउं मुक्क कुडुंवह आस ॥ १३ ॥
विसमिय दोत्तडि नइ घणिय डुंगर नत्थि च्छेऊ ।
हियडउं नेमि समप्पियउं जं भावइ तिंव नेऊ ॥ १४ ॥
करवंदियालं वोलियउं अणंतपुरू जहिं ठाइं ।
दिन्नउ तहि आवासडउ हियउं विअर्ढि धाइं ॥ १५ ॥
नालियरीडुंगरितडिहिं वहुचोराउलिठाइं ।
धम्मियडा वोलिउ गिया असुलतणइ सहाइं ॥ १६ ॥
भालडागडुसुंनउ अवियडउं वसेइ ।
धम्मिय कियउ वीसावउ सुरधारडीघरेहिं ॥ १७ ॥
ओ दीसइ उद्धधलउ सो डुंगरु गिरनार ।
जहिं अच्छइ आवासियउ सामिउ नेमिकुमारु ॥ १८ ॥
मंगूखंभि न मणु रहिउ अंनु वहदेउ दिट्ठु ।
खडहड अंगु पखोलियं गोवाडलिहि पहुट्ठु ॥ १९ ॥
भाद्रनईं जह वोलिउ नाचइ धंमिउ लोउ ।
उजिलि दीवउ वोहियउ सुरठडिय हउ जोउ ॥ २० ॥
खंढइ देउलि जउ गिया सांकलि वोलिवि ।
धंमिय कियउ आवासडउ पंचूसरितलि नेइं ॥ २१ ॥
ऊजिलमग्गि वहंता रज्ञु लागइ जसु अंगि ।

वलि किञ्चउं तसु धमियह इंदु पसंसइ सग्गि ॥ २२ ॥
जे मलि मइला पहियडा ते मइला म भणेजे ।
पावमली जे मइलिया ते मइला ह सुणेजे ॥ २३ ॥
एउ धाउह लोडउं कोटउं तलि गिरिनारु ।
ओ दीसइ वयणथली धवलियतुंगपयार ॥ २४ ॥
घर पुर देउल धवलिया भज धवली दीसंति ।
धंमी सा वयणथली ऊजिलितलि निवसंती ॥ २५ ॥
वउणथली मेलेविणु जउ लागउ गडमग्गि ।
तउ धंमिउ आणंदियउ हरिसु न माइउ अंगि ॥ २६ ॥
रिसहजिणेसरु वंदियउ गढि आवासु करेवी ।
नाचइ धंमिउ हरसियउ हियडइ नेमि धरेवी ॥ २७ ॥
गढु वोली जउ चालीयउ तउ मणि पूरिय आस ।
वलि किञ्चउ हउं जंघडिय जोयण वूढ पंचास ॥ २८ ॥
टोलह उपरि मागडउ सो लंघणउ न जाइ ।
पाउ खिसियउ विसमउ पडइ हियं विअडइं थाई ॥ २९ ॥
अंचणयाणी नइ वहइ दिठु दमोदरु देउ ।
अंजणसिलहिं जि अंजिया धन्न ति नयणा वेउ ॥ ३० ॥
नरयस्तणइ पलांवडे रूडउ मागु जंवेवि ।
कालमेघु जोहारियउ वस्त्रापदि जाएवी ॥ ३१ ॥
अंबाजंबूराइणिहिं वहु वणराइ विचित्त ।
अंचिलिए करवंदिएहिं वंसजालि सुपवित्त ॥ ३२ ॥
नीझरपाणिउ खलहलइ वानर करहिं वुकार ।
कोइलसदु सुहावणउ तहिं डुंगरि गिरिनारि ॥ ३३ ॥
जउ मइं दिट्ठी पाजडी उंच दिठु चडाऊ ।
तउ धंमिउ आणंदियउ लद्ध सिवपुरि ठाउ ॥ ३४ ॥
हियडा जंपउ जे वहइं ता ऊजिलि चडेजे ।
पाणिउ पीउ गइंदवइ दुख जलंजलि देजे ॥ ३५ ॥
गिरिवाई झंझोडियउ पाय थाहर न लहंति ।
कडि थ्रोडइं कडि थकी हियडउं सोसह जंति ॥ ३६ ॥
जाव न पंथलि चढ्ढिया लखुपत्तीपाण ।

तांय कि लब्भहिं चिंतिया हियडा जगराणा ॥ ३७ ॥
डुंगरडा अघो फरिं लग्गउ सीयलि वाउ ।
हूय पुणं नवदेहुडी अंगुलि कियउ पसाऊ ॥ ३८ ॥

चर्चरिका समाप्ता

मातृकाचउपइ

त्रिभुवनसरणु सुमरि जगनाहु जिम फिटइ भवदयं दुहदाहु ।
जिणि अरि आठ करम निर्दलीय नमो जिन जिम भवि नावऊ वलिय ॥१॥
आंचली–सवि अरिहंत नमिवि सिद्ध सूरि उज्झावय साहू गुणभूरि ।
माईपवावनअक्षरसार चउपईबंधि पढिउं सुविचारु ॥ १ ॥
भले भणेविणु भणीअइ भलउं तिहूयणमाहि सारु एतलउं ।
जिनु जिनवचनु जगह आधारु इतीउ मूकिउ अवरु अस्सारु ॥२॥
मीडउं पडिउं भवनागमा जउ समिकत्ति लीणु आतमा ।
जिनह वयणि करिजे निहु ठाउ हृदय रहवि तिहुयणनाहु ॥ ३ ॥
लीह म लंघिसि जिणवरिभणी जो रिधि वंच्छह सिवसुहतणी ।
चहुंगति फीटइ फेरउ वडउ पाच्छइ जाइउ सिवगढि चडउ ॥ ४ ॥
लीहं बीजी वे उपरि करे देवु गुरु हीयडइ संभरे ।
क्षणु एकु मन करिसि प्रमादु जिम तुम्हि पामउ मुक्तिसवादु ॥५॥
ॐकारि सुमरि अरिहंतु जो अठकमहं कालु कियंतु ।
अनु सिवसुक्तणउ दातारु मनह म मेल्हिसि तिहूयणसारु ॥ ६ ॥
नव निहाण ते पामइं तिम जीह जिणवयणु हियइ परिणमइ ।
सिवसंपत्ति तीहहकडी जीह जिणआण हियइंसउं जडी ॥ ७ ॥
मनु चंचलु जे अविचलु करइं जिणह आण सिरऊपरि धरइं ।
हृणइं कसाय इंदीय संवरइं ते सिवनयरि सुखि संचरइं ॥ ८ ॥
सिद्धउं काजु सहू तीहतणउं जेहि जीवि कीधउं जिणवरभणिउं ।
छेदिउ आठकरमनी वेलि गया मुक्ति हुई पेलावेलि ॥ ९ ॥
वंधइं पडिया दीह मन ममउ अप्पारामि जिणवरिसउं रमउ ।
भयह ताप नवि लागइं अंगि उडु वडुफलु पामउ सिवसंगि ॥ १० ॥

अनुव्रतु जिनह आण मनि धरे उपसमु विवेकु संवरु करे ।
अरिवग्गु अंतरंगु निग्रहे इणि परि जीव सुकृतु संग्रहे ॥ ११ ॥
आलिहिं अलीउ म झंपिसि किमइ जे जिनुवयणु हियइं तूं गमइ ।
करमुबंधु पडतउ वीतवे भापासमि वि सहजि अनुभवे ॥ १२ ॥
इणि संसारि दुपभंडारि लहन जीव काय धम ऊमारि ।
वीतरागि जं आगमि कहीउ करे लइ जि धणु भावनसहीउ ॥ १३ ॥
ईमइ म कारसि कूडउ सोसु सोचइ जिनह वयणि करि तोसु ।
जोइउ आगमतणउ विचारु पाच्छइ भरिन परतभंडारु ॥ १४ ॥
उप्पलदलउप्परि जिम नीरु ते सउं चंचलु जीव सरीरु ।
धणु कणु रयणु सहणु तिम सहू दीसइ धम्मु एक्कु थर रहू ॥ १५ ॥
उपरि देखि दैव न तु हाधु तेरहि तिहुयणि कांइ न मनातु ।
नासीउ पइसिजान जिनसरणि जिम न पामीअह जंमणमरणि ॥ १६ ॥
रिद्धिहितणउ लाभु इम लेजि सामिहिं येनि धीतु चायेजि ।
उपर सिंचे भावनानीरि पगमरु नांही जिम माहरइ सौरि ॥ १७ ॥
रीणु दीणु ते चउगति भमइ जे जिन वीतरागु नवि नमइ ।
नोहो काइ धरमवासना ते नही जाइं गुणिअभामना ॥ १८ ॥
लिपावीइ सुतु सीख्यु तेह लाभ नथि लाभइ अंतु ।
ज्ञानतणउ गुण एपडु कांइ वीतराग तु ज्ञानलगु होइ ॥ १९ ॥
लीलअमत संसारु तरेसि जइ जीव जिनधमु पवतुणु लेसि ।
सुगुरनी जाम विलगीउ करी जान जीव भवमाहइ तरी ॥ २० ॥
एवहु परि पामिसि भवपारु जइ समिकत पर अंगीकारु ।
वीरनाधु कहइ आगमि सोइ विणु समिकत सिद्धि नवि होइ ॥ २१ ॥
ए अ वचनु जोइ जिणवरतणुं तहि ऊपमा किसी हउं भणउं ।
जिणइं वइण न ऊपम काइ त्रिभुवनतणी सुद्धि जेइ माहि ॥ २२ ॥
ओछइं पडीउ वापु जे करिसि तउ संसारु अनंतउ फिरिसि ।
जोईउ वणु सिखंत विचारु करिसि धम्मु तउ पामिसि पारु ॥ २३ ॥
ओपवु परे जीव जिनि भणिउं अछइ [illegible] अठवरमहत्तणउं ।
वाहिजि ओपदि कांई तु धाइ परमोवधविणु दुखु न जाइ ॥ २४ ॥
अंतु न लाभइं इह संसार कांइ तु जीव होइ व विचार ।
एकु जु धमु करे सपाइ लेउ मेल्हइ सिवअरीमाहि ॥ २५ ॥

अनुदिनु भत्ति करे जिनराय पूजि त्रिकाल तासु पहुपाय।
मानपतु दोहिलइं पामेसि पाच्छइ जिनपति काहा नमेसि ॥ २६ ॥
कपटिहिं मायां वंचइं लोकु ते नवि लहइं सिद्धिसंजोगु।
भमडइं जीव चतुंगतिहिं मज्झारि इणपरि भव पूरइं संसारि ॥ २७
खजइ जगु एउ कालकु अंति एह एतला नही काइ भ्रंति।
जिणह वइणु विछिजा इकमणउ भउ फीटिसइ कितांतहतणउ ॥ २८
गब्भवासि जो दिलउं आण तउ तउं माने जिनवरआण।
फेडइ दुपु सहू जिनराउ तउ सिवनइरि अ पावइ ठाउ ॥ २९ ॥
घरिं घरु हिंडिसि जीव अणाहु जइ न नमिसि जिनु तिहूअणनाहु।
जिनुयमविणु सुपु नहीं संसारि अवर टमालि दीस मन हारि ॥ ३०
इथइं सरिसु धम्मु जइ करिसि तउ भंडोरु परत नउ भरिसि।
जे पणु लागिसि लोकप्रवाहि रडभड हुइसइ चुहुंगतिमाहि ॥ ३१ ॥
चक्रवति षट्‌पंडह धणी हंती रिद्धि तीहंनइ घणी।
जो रिद्धिहिं परितापु होउ त वंसु संभमु निरगि नवि जंत ॥ ३२ ॥
छपिद जीव करेजे रप जइ तुम्हि जिणसासणि छउ दप।
आनमयतु जीव सचि गणे धम्मह तउं सारु इउ सुणे ॥ ३३ ॥
जगगुरु जगरपणु जगनाहु जगबंधवु जगसथवाहु।
जगतारणु जिउ जगआधारु जिणविणु अवरि नही भवपारु ॥ ३४ ॥
जवइ पानु जिम नरुअरि पनु जइ मनमाहि वसइ इकु जिनु।
गाजुलसंपुलि कांइ करेसि जिनि एकलइं मुकति पामेसि ॥ ३५ ॥
वमिदिसु पंचप्रमिष्ठि सुमरेजि इणपरि असुसुं करमु पपेजि।
सुभउं करमु पावजे घणउं जिम सुपु लहइ सिवनगरीनणउं ॥ ३६ ॥
टलइ मेरु जो परवतराजु जो रवि पच्छिम ऊगइं आजु।
जो सागर मिल्हइ मज्जार तोइ जिनभामिउं अलीउ न थाइ ॥ ३७ ॥
टगांमि तणे कुगुरि कुबोधि जिनकमवहा लेजे सोधि।
गुजरयानी आमृतणी रिति मंगवइ सुष्किननी घणी ॥ ३८ ॥
इमांइ कलमूअंगमि लोकु तेह नवि लागइं ओपवजोगु।
वंतराग मंत्रवादी य किणउं विसु पसरइ अटकरमइतणउं ॥ ३९ ॥
इन्दिर पामइ रेवे राउ धनकणजीवन करिनि म गाउ।
जम्मसुहु देव इंदीभत्नु करे धमु परहरीउ टमानु ॥ ४० ॥

पवणवपरि भग्गऊ भवचारु सामीअ करिउ अम्हारी य सार ।
असरणसरणु तुहुं जि जगनाह भवि पडंत अम्ह देजे बाहु ॥ ४१ ॥
तनु धनु जीवीउ जौवनु जोइ रिद्धि समिद्धि सहअणु सहू कोइ ।
दिवस पांच मेलावउ होइ पाछइ वलीउ न दीसइ कोइ ॥ ४२ ॥
थरथर कंपइं काइरचित्त देपीउ मुनिवर माहासत्त ।
धीरा सत्तवंत जे जाण पालइं दीपसहीउ जिणआण ॥ ४३ ॥
दमि इंदिअ दुग्गइदूआर लूसीउ लिअइं सुमितु सविचार ।
जे न जिणिसि जिणवयणविचारि देसिइं दूपु बहुसंसारि ॥ ४४ ॥
धरमध्यांनि करि निमलु चितु जिम हुइ जीव जनमु सुपवितु ।
धमिहि सिवह सीपसंपत्ति धमिहि वलीउ न भवि उतपत्ति ॥ ४५ ॥
नर नीतु नमो नीमि जिणनाहु आठकरम जिणि दिन्ही दाउ ।
मोहराउ रिणि भंजीउ करी लीलहं लई सामि सिवपुरी ॥ ४६ ॥
पढइ गुणइ धरकाणइं सुतु पुणु बुझइं नही तोइ ततु ।
रागु द्वेषु मनभीतरि धरइं ईमइ वेग्वविडंवउ करइं ॥ ४७ ॥
फलइ करमु परभवहतणउं जइ सिछिरहि जीउ हीडइ घणउं ।
दुषु सुपु सहू पइ लागम आवइ सिरिजिउं सरिसु आतमा ॥ ४८ ॥
वलि कीउ जीवीउ तीहं संसारि जे दिन गमइ पापव्यापारि ।
सफलु जनमु तीहं नरनारि जे जिनधमि द्रिढ चित्तमहारि ॥ ४९ ॥
भवि भमु वोलइं जीव अनंत जाणइं नही वइणु अरिहंत ।
न मुणइं अंतरु पावह पुनु तीहं सोकल कांइ सिरिज्या फांन ॥ ५० ॥
मइणु जि मारइं ते जगि सूर जे मारीयइं मइणि ते भूर ।
धीरा सुभट सतु ऊटवइ मारीउ मयणु नाउं नीठवइं ॥ ५१ ॥
य करइं तप्पु नीमु संजमु तीहं दुर्गतिनउ नही कोइ गंमु ।
जीहं स रांईउ हुइं जिनधंमु विलसइं मुकतिसोपु निरुपंमु ॥ ५२ ॥
रहिसिइं पूत कलत घरबारु रहिसिइ सइणु सह परिवारु ।
रहिसिइ धणुकणुरइणुभंडारु जीउ एकलउ जाइ निधारु ॥ ५३ ॥
लइ जिनदीप मूकि संसारु आठकरम दहीउ करि च्छारु ।
निरुपमु सुपु सिवनइरीतणउं लहिसि जीव आगमि जिनभणिउ ॥५४॥
वचनव्यापु जोइ जिणवरतणउ अरथ गंभीरु अच्छइ तहि घणउ ।
जो साइरि जलबिंदहं पारु तउ लभइ सिद्धंतविचारु ॥ ५५ ॥

दारउपरि मूढा मन पेलि जिनधम्मु लाधउ पाइ म ठेली।
निरुअचिंतामणि जिनधम्मु करीन जीव भाजइ भवभ्रंमु ॥ ६॥
दिनि दिनि आउ गलंतउ देपि भवि पडंतु अपुं म ऊवेपि।
करि न धम्मु जं केवलिकहीउ जा सिवपुरि लेपउं विसहीउ ॥ ७॥
मइलि जीउ भवगूलति करइ कम्म्म वुहुरादाणी घणु धरइ।
जं कम्मनिगउ नहो ए ऊपाक भवगोतिहिं दुखु सहिसि अपार ॥ ८॥
हरिगु विगइ करिसि मन कोइ जइ जीव आपद संपदं होइ।
[illegible] पुव्वभवकिउं नं भोगवै कोइ अणकिउं ॥ ९ ॥
[illegible] दुरति मनुष गिरिकंदरा भमइ पतुकर।
[illegible] न करी धम्मु जिणि रिधि संपजइ ॥ १०॥
[illegible] जाणि म करिसि जीव परमनी काणि।
[illegible] आगम्मु जिनिस्युरु एकु जिणधम्मु ॥ ११ ॥
[illegible] अरिहंत जे अच्छइं सिवलच्छीकंत।
[illegible] सासुणा पार ॥ १२ ॥
[illegible] आगम्मु जे [illegible] अच्छइ निरुपम्मु।
[illegible] करउ सोइ जि जिनेंदु ॥ १३ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ १४ ॥

[illegible]

सम्यक्त्वमाईचउपइ

[illegible] ॥ १ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ २ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥

सिद्धिसुरकु जगि महु को लहइ दृढसमिकतु जइ हियडइ रहइ ।
दृढ समिकतु श्रेणिकराय होइ प्रथम तिथंकरु होसइ सोइ ॥ ५ ॥
धन ति गुरपारधउ करंति गुरु विणु समिकतु किमइ न हुंति ।
गुरुगु एकु समिकतु करसेइ पुदगल अरधमाहि सिद्धि चिनेइ ॥ ६ ॥
अच्छइ मोहघरटु इणि ममइ समिकतु रयणु न लाभइ किमइ ।
कुगुरु सुगुरु अंतरु न [illegible] करइ इणि कारणि चउगति जिउ फिरइ ॥ ७ ॥
आगमवयणु पंचमइ अरइ केवलनाणु प्रभव हुइ परइ ।
इसइ कालि समकितदृढचित्त ते नर जाणे जगह पवित्त ॥ ८ ॥
इणि भवि परभवि सुरकु लहेउ सतगुरुतणउं वयणु पालेहु ।
वीतराग जउ वंदिसि पाय ऊडइ पापु होइ निम्मल काय ॥ ९ ॥
इंदियालु जगि दीसइ लोइ बालपृच्छु न हु छुटइ कोइ ।
परमसंवलु जइ सरिसउ लेइ पार गया तउ सुरकु माणेइ ॥ १० ॥
ऊगमनइ जे नर दीसंति चउंजणकंधि चडिया ते जंति ।
सुकिय कुकिय बे सरिसा चलइं सजनमीत वोलावी वलइं ॥ ११ ॥
ओसरि पाधिगइ लाभु न हुंति सजलु होइ बीजइ चूकंति ।
सुधउं दानु मुनिहि जो देइ संगमतणउ लाभु सो लेइ ॥ १२ ॥
रिद्धिहिलतणउ लाभु जगि लेहु दस दीधे तुम्हि धनु वावेहु ।
दीन्हादानह नासु न जोइ सुपात्रि दीन्हइ बहुफलु होइ ॥ १३ ॥
रीतिहि दानह नथी विचार उचितु दानु दीजइ सविचार ।
कृसनभपसिउ जउ ग्वदु धारंति पात्रविसेपिहि पीरु स दिंति ॥ १४ ॥
लिहिएं जगि लोढइ सउ कोइ कुपात्रु विसहरसाढसु होइ ।
खीरु आणि जउ मुखि घातियइ पात्रविसेपिहि तसु विसु थियइ ॥ १५ ॥
लीह न लंघउं सतगुरतणी किया करउं जा आगमि भणी ।
विधिमारगु मानउं सविचार जाणउं जइ छूटउं संसार ॥ १६ ॥
एहु करेवउं नर संसारि त्रिण्हि वार जउ चडिउ विहारि ।
वीतराग जउ भणिउ करेसु दस आसातन नितु टालेसु ॥ १७ ॥
ऐ वार मेल्हिउ जिणु पूजेसु रयणिहि रमणिगमणु वारेसु ।
न्हवणु तं दिजहि निसिभरि रहई तं विहिमंदिरु सतगुरु कहइ ॥ १८ ॥
जो दीसइ मंदिरु जगि सारु धम्मरयणकेरउ भंडारु ।
चउरासी आसातन नितु टालेसु मंदिरि दिवसह वलि होएसु ॥ १९ ॥

ओया दीसइं बहुत गमार धंमहतणी न पूछइं सार।
जिण गुरि दीठइ दूरिहिं जंति तुलछ माणुसुजंमु आलि गमंति॥२०॥
अंतरु विधि अविधिहिं जाणंति मंदिर पइठ निसिहिं न करंति।
तालारासु रयणि न हु देइ लउडारसु मूलह वारेइ॥ २१॥
अइसउ मंदिरु जगि प्रवहणु होइ धंमिउ लोउ चडइ सुह कोइ।
पंचप्रमिहिंनी जापउ करउ संसारसमुद्र जिम लीलइं तरउ॥ २२॥
कहियइ थूलिभद्द मुणिराउ मयण चरड भंजइ भडिवाउ।
छ विगइ सो जनु चित्रसाली रहइ जगहमाहि थूलिभद्द लीह लहइ॥२३॥
खडभड रापि न इणि संसारि जुगप्रधान जोइ धंमु विचारि।
सुद्धउ धरमु करिसि जइ किमइ जंमणमरणह छूटिसि तिमइ॥ २४॥
गलइ आउ जिम अंजलिनीरु सीलु जु पालइ सो नर धीरु।
कपिलनारि पेलइ विन्नाणि सीलु सुदरसणतणउं वखाणि ॥ २५॥
घडतउ फोडतउ वार न लाइ कम्मतणी विसमी गति काइ।
जं जं करमु करइ तं होइ लपमणि दससिरु जीतउ जोइ॥ २६॥
निच्छइ साहसिउ वज्रकुमारु इंदु पसंसइ जो दयसारु।
सुर बे आविया जउ सत पडइ कुमरु पारेवासउं घडि चडइ॥ २७॥
चल्लइ सयलवाहणु नरनाहु वीरवंदन हुउ अतिघणुं भाउ।
दसाणभद्दु अतिगरवु करेइ इंदिहिं जीतउ रिषि दाखेइ॥ २८॥
छंडइ राजु रिद्धि पणमाहिं इंदि जीतउ तं न सुहाइ।
वीरपासि संजमुभरु लेइ इंदिहिं हारिउ चलण नमेइ॥ २९॥
जनमु वयरसामिउ त्तिमसमइ छ मास रोयतउ रहइ न किमइ।
धणगिरि विहरतु पहुतउ घरेइ साति पुतु हिव झोली धरेइ॥ ३०॥
झटकइ तउ झोली घातियउ भारि गुरुह लेउ समपिउ।
गुरुपभणइ पउ तिणि आपेहु कुमरह आवी सार करेहु॥ ३१॥
निच्छइ जुगप्रधान जिउ होइ इह गुणवन्नणु सकइ न कोइ।
पालणइ सूतउ श्रवणि सुणेइ इगारअंम तउ आणावेइ॥ ३२॥
टलइ न पावज कुमरह किमइ मायडी झगडउ मांडियउ तिमइ।
राज विदीतु पूतु हउं लेसु मंदिर नेनउ परिणावेसु॥ ३३॥
ठक्कर मिलिया उत्राटउ करइं कुमरु अणावी तउ विचि धरइं।
वणफल रमणा सा ढोएइ धणगिरि रजोहरणु दापेइ॥ ३४॥

इगएगातउ मनु रहइ न किमइ मागडी भवि भवि लाभइ तिमइ ।
सुगुरुमेलावउ दुलहउ हुंति पंचमहाव्रत सीहगिरि दिंति ॥ ३५ ॥
दादसु धीयउं वालकुमारि सीहगिरि तउ हालियउ विहारि ।
सीस भणइं अम्ह वयण कु देइ वयरह मुनि तुम्ह काजु करेइ ॥ ३६ ॥
न गणउं अवररसीस जयसीह सीहगिरितणा सीस तुइ लीह ।
अभिनवदीपितु वयण कु देइ सीहगिरितणउं वयणु मानेइ ॥ ३७ ॥
सगु संजमु किउ परिस्सहस्सु जीवदया पालिय गुणह निवासु ।
अंतकालि अटसणि पइंनि कंडरीकु सातमिपहं जंति ॥ ३८ ॥
पुंडरीकु परिससहसु कीउ रज्जु विउ घडिपहं तउ सारिउ कज्जु ।
पायज ले गुरु संमुहउ थाइ पंचविमाणे पुंडरीकु जाइ ॥ ३९ ॥
दस दिसि पसरिउ जगि जसवाउ नवअंगविवरणकरणु गुरुराउ ।
थंभणि थप्पिउ पासजिणंदु पणमहु सुहगुरु अभयमुणिंदु ॥ ४० ॥
धनु सु जिणवल्लहु परताणि नाणरयणकेरी छइ खाणि ।
यहतालीसरतुहु पिंडु विहरेइ थिविपु मंदिरु जगि प्रगटु करेइ ॥ ४१ ॥
नर निसुणहु सतगुर परताणु अंतस बूझउ थिउ सु जाणु ।
कुगुरवाणि मउ विसु उतरेइ सुगुरुवाणि जउ अमिउ झरेइ ॥ ४२ ॥
परिणइ अट्ठ नारि करि लेइ बूझवणइ यइठउ कथा कहेइ ।
प्रभवु चोरु मंदिरि पइसेइ अवसुयणनिंद सयलजण देइ ॥ ४३ ॥
कहउ जंबुकुमरु इम भणइ थिया जुमहोच्छवु प्रभवु न गणइ ।
जंबुकुमरु जउ इसउ भणंति सवि थंभिया टगमग जोयंति ॥ ४४ ॥
पंचय अम्हसउं साटि करेज थिउं विद्यावदह इक थंभणी देज ।
कुमरु भणइ विद्या किसउं करेसु रिद्धि परिहरी महहं व्रतु लेसु ॥ ४५ ॥
भणइ प्रभवु नवजोवण नारि परणिय पुह्नवसिण संसारि ।
कामभोग भोगवि इणि समइ जोवण गइ व्रतु लेजे तिमइ ॥ ४६ ॥
मपणु घरड सो मइं वसि किउ मोहराउ पाडिउ नाथियउ ।
मधुबिंदसाहस इसु संसारु निसुणि प्रभव तुहु जोइ विचारु ॥ ४७ ॥
जगु पिंडाणु सयलु धरतेइ तह विणु पितरह पिंडु कु देइ ।
महेसरदत्तकथा जउ कहइ प्रभवुउ सांभलिउ मनमाहि रहइ ॥ ४८ ॥
रतिपति जाणउं तइं वसि कियउ नागलणउं संबंधु किम थियउ ।
अठारह नात्राकथा कहंति प्रभवु सांभली तउ बूझंति ॥ ४९ ॥

लहणउ लाभइ इह जगमाहि जंबुसामिघरि रिद्धि न माइ।
हूंती रिद्धि कुमरु परिहरइ प्रभवु पराई लेवा फिरइ ॥ ५० ॥
वयणु कहइ पुणु नीजइ वाइ जंबुकुमर तुहु परिणिउं काइं।
बालकुमारउ तउं व्रतु लियत नियनियमंदिरि अट्ठय रहत ॥ ५१ ॥
सांभलि प्रभव ज काइउं हुंत जइ घरि रह त संसारि पडंत।
कथा कहिउ प्रतिबोधेसु नारि वलिउ न आवइं इणि संसारि ॥ ५२ ॥
पडभड केही रिद्धिहितणी नवाणवइ कोडि सोना छइं घणी।
जीमणइ हाथिहिं तउ हउं देसु मणवंछिय मागण पूरेसु ॥ ५३ ॥
सा सिबकाजउ प्रगुणी करइ दानु दियंतउ तउं नीसरइ।
माय बापु अहनारि चडंति पंचसयसहितु प्रभवु वइसंति ॥ ५४ ॥
हल्लिय सिबिका गाजे रली वज्जिय ढक्क बुक्क काहली।
सिबिका उत्तरिउ चलण नमंति सुहमसामि सइं हथि व्रतु दिंति ॥ ५५ ॥
लंघिउ सायरु जउ व्रतु लिउ पंचमगतिप्रस्थानउ कियउ।
जंबुसामिउच्छवु देखेइ बहुतु लोकु जाइउ व्रतु लेइ ॥ ५६ ॥
खयउं पापु जउ पावज लई घरसंसारचिंत तउ गई।
मनि जीतइ इंद्रिय वसि थाइं करम जिणिय नर सिद्धिहिं जाइं ॥ ५७ ॥
मंगलु पहिलउ सोहमसामि बीजउ मंगलु जंबूसामि।
अगणिउ मंगलु प्रभव भणंति चउत्थउ मंगलु नारिहिं हुंति ॥ ५८ ॥
गणियइ जुगवरु सोहमसामि बीजडउ जुगवरु जंबूसामि।
त्रीजउ जुगवरु प्रभवु भणंति सिज्जंभवु चउथउ जाणंति ॥ ५९ ॥
लंछणि सीह गोयमु पुच्छंति जुगप्रधान जगि केता हुंति।
विसहस चउं आगला कहेइ छेहिलउ दुपसहु तउ जाणेइ ॥ ६० ॥
मंनउं जुगवरु जिणेसरसूरि पावु पणासइ दरिसण दूरि।
संदेह म करहु जिम समकितु रहइ भवि भवि बोधिबीजु जिउ लहइ ॥ ६१ ॥
इसामिसि चउपईबंधु कियउ माइंतणउ छेहु मइ नियउ।
ऊगउ आगलउ किंपि भणेउ जगडु भणइ संघु सयलु खमेउ ॥ ६२ ॥
आनंदउ समुदायरि रहइ नंदउ विहिमंदिरु कवि कहइ।
नंदउ जिणेसरसूरि मुणिंदु जा रवि ऊगइ ऊगइ चंदु ॥ ६३ ॥
माइंतणउ अम्बरू थुरि कियउ चडसठिचउपइया बंधु थियउ।
सुणइ मनि जे नर निसुणंति अणंतसुक्खु सिद्धिहिं पावंति ॥ ६४ ॥

सम्यक्त्वमाईचउपइ सम्पूर्णा.

श्रीनेमिनाथफागु

सिद्धि जेहिं सइ वर वरिय ते तित्थयर नमेवी ।
फागुबंधि पहुनेमिजिणगुण गाएसउं केवी ॥ १ ॥
अह नवजुव्वण नेमिकुमरु जादवकुलधवलो
काजलसामल सलवलउ सुललियमुहकमलो ।
समुदविजयसिवदेविपूतु सोहगसिंगारो
जरासिंधुभडभंगभीमु बलि रूवि अप्पारो ॥ २ ॥
गहिरसद्दि हरिसंखु जेण पूरिय उद्दंडो
हरि हरि जिम हिंडोलियउ भुयदंडपयंडो ।
तेयपरिक्कमि आगलउ पुणि नारिविरत्तउ
सामि सुलक्खणसामलउ सिवसिरिअणुरत्तउ ॥ ३ ॥
हरिहलहरसउं नेमिपहु खेलइ मास वसंतो ।
हावि भावि भिज्जइ नही य भामिणिमाहि भमंतो ॥ ४ ॥
अह खेलइ खडोखलिय नीरि पुणु मयणि नमावइ
हरिअंतेउरमाहि रमइ पुणि नाहु न रावइ ।
नयणसलूणउ लडसडंतु जउ तीरिहिं आविउ
माइ बापि बंधविहिं मांड वीवाह मनाविउ ॥ ५ ॥
घरि घरि उत्सव वारयए राउल गहगहए
तोरण बंदुरवाल कलस धयवड लहलहए ।
कन्हडि मागिय उग्गसेणधूय राजल लाधा
नेमिकुमारहीय वाल अट्ठभवनेहनिबद्धा ॥ ६ ॥
राइमएसम तिहु भुयणि अवर न अत्थइ नारे ।
मोहणविल्लि नवल्लडीय उप्पनीय संसारे ॥ ७ ॥
अह सामलकोमल केशपास किरि मोरकलाउ ।
अद्धचंदसमु भालु मयणु पोसइ भडवाउ ।
वंकुडियालीय भुंहडियहं भरि भुवणु भमाडइ
लाडी लोयणलहकुडलइ सुर सग्गह पाडइ ॥ ८ ॥
किरि सिसिबिंब कपोल कन्नहिंडोल फुरंता
नासा वंसा गरुडचंचु दाडिमफल दंता ।

अहर पवाल तिरेह कंठुराजलसर रूडउ
जाणु वीणु रणरणइं जाणु कोइलटहकडलउ ॥ ९ ॥
सरलतरल भुयवल्लरिय सिहण पीणघणतुंग ।
उदरदेसि लंकाउली य सोहइ तिवलतुरंगु ॥ १० ॥
अह कोमल विमल नियंबबिंब किरि गंगापुलिणा
करिकर ऊरि हरिण जंघ पल्लव करचरणा ।
मलपति चालति वेलहीय हंसला हरावइ
संझारागु अकालि बालु नहकिरणि करावइ ॥ ११ ॥
सहजिहिं लडहीय रायमए सुलखण सुकमाला
घणउं घणेरउं गहगहए नवजुव्वण बाला ।
भंभरभोली नेमिजिणवीवाह सुणेई
नेहगहिल्ली गोरडी हियडइ विहसेई ॥ १२ ॥
सावणसुकिलछट्ठि दिणि वावीसमउ जिणंदो
चल्लइ राजलपरिणयण कामिणिनयणाणंदो ॥ १३ ॥
अह सेयतुंगतरलतुरइ रहरहिं चडइ कुमारो
कन्निहिं कुंडल सीसि मउड गलि नवसरहारो ।
चंदणि ऊगटि चंदधवलकापडि सिणगारो
केवडियालउ खुंपु भरवि वंकुडउ अतिफारो ॥ १४ ॥
धरहिं छत्तु विन्नु चमर चालहिं मृगनयणी
लूणु उत्तारिहिं वरबहिणी हरिसुज्जलवयणी ।
चहुपरि धरसइ दसारकोडि जादवभूपाला
हयगयरहपायकचक्कसीकिरिहिं झमाला ॥ १५ ॥
मंगल गायहिं गोरडीय भट्टह जयजयकारो
उग्गसेणघरनारि वरो पहुतउ नेमिकुमारो ॥ १६ ॥
अह महिय पयंपय हल सहि ए तुह वल्लहउ आवइ
मालिअटालिहिं चडिउ लोउ मण नयणु सुहावइ ।
गउखि वईठी रायमए नेमिनाहु निरखइ
पमइपमाणिहिं चंचलिहिं लोअणिहिं फरक्खइं ॥ १७ ॥
किम किम राजलदेविनणउ सिणगारु भणेवउ ।
चंपइगोरी अइधोइ अंगि चंदनुलेवउ ।

नेउरु भराविउ जाइकुसुमि कसतूरी सारी
सीमंतइ सिंदूररेह मोतीसरि सारि ॥ १८ ॥
नवरंगि कुंकुमि तिलय किय रयणतिलउ तसु भाले ।
मोतीकुंडल कन्नि थिय बिंबालिय करजाले ॥ १९ ॥
नरतिय कज्जलरेह नयणि मुहकमलि तंबोलो
नागोदरकंठलउ कंठि अनु हार विरोलो ।
मरगदजादर कंचुयउ फुडफुल्लहं माला
करि कंकण मणिवलयचूड खलकावइ वाला ॥ २० ॥
रुणुझुणु ए रुणुझुणु ए रुणुझुणु ए कडि घघरियाली
रिमिझिमि रिमिझिमि रिमिझिमि ए पयनेउरजुयली ।
नहि आलत्तउ वलवलउ सेअंसुयकिमिसि
अंखडियाली रायमइ प्रिउ जोअइ मनरसि ॥ २१ ॥
पाटउ भरिउ जीवडहं टलवलंत कुरलंत ।
अहुठकोडिरूं उल्लसिय देषइ राजलकंतो ॥ २२ ॥
अह पूछइ राजलकंतु कांइ पसुबंधणु दीसइ
सारहि बोलइ सामिसाल तुह गोरवु हुस्यइ ।
जीव मेल्हावइ नेमिकुमरु सरणागइ पालइ
धिगु संसारु असारु इस्यउं इम भणि रहु वालइ ॥ २३ ॥
समुदविजय सिवदेवि रामु केसवु मनावइ
नइपवाह जिम गयउ नेमि भवभमणु न भावइ ।
धरणि धसक्कइ पडइ देवि राजल विहलंघल
रोअइ रिज्झइ वेसु रूवु बहु मन्नइ निष्फलु ॥ २४ ॥
उग्रसेणधूय इम भणइ दूपहिं दाझइ देहो
कां विरतउ कंत तुहं नयणिहिं लाइवि नेहो ॥ २५ ॥
आसा पूरइ त्रिहुयणह सू म करि हयासी
दय करि दय करि देव तुम्ह हउं अछउं दासी ।
सामि म पालइ पडिवन्नउं तउ कासु कहीजइ
मयगलु उवट संचरए किणि कानि गहीजइ ॥ २६ ॥
नेमि न मन्नइ नेहु देइ संवच्छरदाणूं
ऊजलगिरि संजम लियउ हुय केवलनाणूं ।

राजलदेविसउं सिद्धि गयउ सो देउ थुणीजइ
मलहारिहिं रायसिहरसूरि किउ फागु रमीजइ ॥ २७ ॥
इति श्रीनेमिनाथफागु.

प्राचीनगद्यसङ्ग्रहः

आराधना

(संवत् १३३० मां लखेला ताडपत्रमांथी)

ज्ञानाचारि पुस्तकपुस्तिकासंपुटसंपुटिकाटीपणांकवलीऊतरीठवणीपा दोरीप्रभृतिज्ञानोपकरणअवज्ञा, अकालिपठन अतिचार विपरीतकथनु उत भ्रमरूपणु अश्रद्धानप्रभृतिकु आलोयहु । दर्शनाचारि देवद्रव्यु भक्षि उपेक्षितु प्रज्ञाहीनत्तु जिनभुवनआशातना अधोयति देवपूजा गुरुद्र ग्रहणु गुरुनिंदा द्रव्यलिंगिएसउं संसर्गु विंबआशातना स्थापनाचार्यआश तना शंका आकांक्षा विचिकित्सा मिथ्यादृष्टिप्रसंसा मिथ्यादृष्टिपरिचउ पांच अतिचार आलोयउं । चारि आचारि प्राणातिपात मृषावाद अदत्ताद मैथुनपरिग्रह ए पांच अणुव्रत दिग्विरति भोगपरिभोगविरति अनर्थदं विरति ए तिन्नि गुणव्रत । सामायिकु देसावकासिकु पौषधु अतिथिसंविभा ए च्यारि सिक्षाव्रत; ईहतणइ विषइ जु कोइ अतिचारु आसेवियउ सु आलोयहं । तपाचारि अनशन ऊनोदरिता वृत्तिसंक्षेपु रसत्यागु कायक्ले संलीनता षड्विधबाह्यतपतणइ विषइ प्रायश्चित्तु विनउ वैयावृत्यु स्वाध्या कायोत्सर्ग षड्विधआभ्यंतरतपतणइ विषइ जु अतीचारु सु हुं आलोयहुं वीर्याचारि संतइ बलि संतइ वीर्यि जु धर्म्मानुष्ठानि उद्यमु नहीं किपउं हुं आलोयहुं । सम्यक्त्वप्रतिपत्ति करहु, अरिहंतु देवता सुसाधु गुरु जिनप्र णीत धर्म्मु सम्यक्त्वदंडकु ऊचरहु, सागारप्रत्याख्यानु ऊचरहु चऊहु सरणि पइसरहु । परमेश्वरअरहंतसरणि सकलकर्मनिर्मुक्तसिद्धसरणि संसारपारा वारसमुत्तरणयानपात्रमहासत्त्वसाधुसरणि सकलपापपटलकवलनकलाकलितु केवलिप्रणीतधर्म्मुसरणि सिद्ध संघगण केवलि श्रुत आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु व्रतिणी श्रावक श्राविका इह ज काइ आशातना की हुंती ता मिच्छा मि दुक्कडं । पुढविकाइ जीव आउकाइ जीव तेउकाइ जीव वाउका जीव वनस्पइकाइ जीव बेइंदिय त्रेंदिय चउरिंद्रिय जलचर स्थलचर खेचर

त्रि जंतु माहं मिच्छा मि दुक्कडं। पनर कर्मभूमि जि मनुष्य त्रीस अकर्मभूमि जि मनुष्य तीहं मिच्छा मि दुक्कडं। छप्पनअंतरद्वीपतणा मनुष्य तीहं मिच्छा मि दुक्कडं। सातनरकतणा नारकि दशविध भवनपति अष्टविध व्यंतर पंचविध जोइसी। द्विविध वैमानिकदेवा किं बहुना। दृष्ट अदृष्ट ज्ञात अज्ञात सुभ असुभ स्वजन परजन मित्र शत्रु प्रत्यक्षि परोक्षि जे केइ जीव चउरासी लक्षयोनि ऊपना चतुर्गतिकि संसारि भ्रमंता मइं दुमिया पंचिया संहिया संघट्टिया हणिया निंदिया किलामिया दामिया पाडिया चूकिया भवि भवांतरि भवसति भवसहस्रि भवलक्षि भवकोटि मनि वचनि काइं तीह सवेहइं मिच्छा मि दुक्कडं। अढार पापस्थान वोसिरावइ इहु सर्व्वु प्राणातिपातु सर्व्वु मृषावादु सर्व्वु अदत्तादानु सर्व्वु मैथुनु सर्व्वु परिग्रहु सर्व्वु क्रोधु सर्व्वु मानु सर्व्वु माया सर्व्वु लोभु पेमु द्वेषु कलहु अभ्याख्यानु रति अरति पैशुन्यु मिथ्यादर्शनशल्यु परपरिवादु अढार पापस्थान त्रिविधिहिं मनि वचनि काइ करणि करावणि अनुमति परिहरउ। अतीतु निंदउ वर्तमानु संवरउ अनागतु पाचखउ। पंचपरमेष्ठिनमस्कारु जिनशासनिसारु चतुर्दशापूर्वसमुद्धारु संपादितसकलकल्याणसंभारु विहितदुरितापहारु क्षुद्रोपद्रवपर्वतवज्रप्रहारु लीलादलितसंसारु सु तुम्हि अनुसरहु, जिणि कारणि चतुर्दशपूर्वधर चतुर्दशपूर्वसंबंधिउ ध्यानु परित्यजिउ। पंचपरमेष्ठिनमस्कारु स्मरहि, तउ तुम्हि विशेषि स्मरेयउ, अनइ परमेश्वरि तीर्थंकरदेवि इसउ भणुं भणियउ अच्छइ, अनइं संसारतणउ प्रतिभउ म करिसउ, अनइ पंचनमस्कारु इहलोकि परलोकि संपादियइ ॥ आराधना समाप्तेति ॥

यदक्षरं परिभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
क्षन्तव्यं तद्बुधैः सर्वं कस्य न स्खलते मनः ॥
संवत् १३३० वर्षे आश्विनसुदि ५ गुरावद्येह आशापल्याम् ॥

अतिचार

(संवत् १३४० ना अरसामां लखायेला जणाता ताडपत्रमांथी)

कालवेला पढउं, विनयहीणु बहुमानहीणु उपधानहीणु गुरुनिह्नव अनेराकन्हइं पढउं, अनेरइं कहइं व्यंजनकूडु अर्थकूडु तदुभयकूडु कूडउ अक्षरु कानइ मात्रि आगलउ ओछउ देववंदणवांदणइ पडिक्कमणइ सज्झाउ करतां

पढतां गुणतां हूउ हुयइ, अधिकू कहइं हुइ, गुरु अनुं नेउ कृतां कर्यां
ज्ञानोपकरण पाटी पोथी कमली सांपुडं सांपुडी आशातन पगु लागउ
लागउं पढतां प्रद्वेष मच्छरु अंतराइउ हुउं कीधउ हुइ, तथा ज्ञानद्रव्यु भ
उपेक्षितु प्रज्ञापराधि विणास्यु विणासितउं ऊवेक्ष्यउं हुंतो सक्ति सारसंभा
कीधियइ, अनेरइ ज्ञानाचारितउ कोइ अतीचारु हुउ सुक्ष्मबादरु मनि व
काइ पक्षदिवसमांहि तेह सवहि मिच्छा मि दुक्कडं ॥

सातमइ भोगोपभोगव्रति सचित्तद्रव्यविगइ ल्यासलाइ पाणही प
फोफलि वहसणि आसणि सयणि न्हाणअइ अंगोहलि फलि फूलि भंज
आच्छादनि जु कोइ अतिचारु हुयउ पक्षदिवसमांहि

बारि भेदि तपु छहि भेदि बाह्य अणसण इत्यादि उपवास आंबि
नीविय एकासणु पुरिमड्ढ व्यासणं यथाशक्ति तपु, तथा ऊनोदरितपु वृत्ति
संखेवु। रसत्यागु कायकिलेसु, संलेखना कीधी नहि, तथा प्रत्याख्यान एक
सणां विपुरिमड्ढ साढपोरिसि पोरिसिभंगु अतीचारु नीविय आंबि
उपवासि कीधइ विरासइं सचित्त पाणीउ पीधउं हुयइ पक्षदिवसमांहि

प्रतिषिद्ध जीवहिंसादिकतणइ करणि कृत्य देवपूजा धर्मानुष्ठानतण
अकरणि जि जिनवचनतणइ अश्रद्धानि विपरीतप्ररूपणा एवं बहुप्रका
जु कोइ अतीचारु हुयउ पक्षदिवसमांहि ॥

सर्वतीर्थनमस्कारस्तवन

(संवत् १३५८ मां लखायेला कागळना पुस्तकमांथी)

पहिलउं त्रिकालु अतीत अनागत वर्त्तमान चहुत्तरि तीर्थंकर सर्वपाप-
क्षयंकर हउं नमस्करउं।

तदनंतरु पांचे भरते पांचे ऐरवते पांच महाविदेहे सत्तरिसउ उत्कृष्ट-
कालि विहरमाण हउं नमस्करउं।

तउ पहिलइ सौधर्म्मि देवलोकि बत्रीस लाख, बीजइ ईसानि देवलोकि
अट्ठावीस लाख, त्रीजइ सनतकुमारि देवलोकि बारलाख, चउत्थइ माहेंद्र-
देवलोकि आठ लाख, पांचमइ ब्रह्मदेवलोकि च्यारि लाख, छट्ठइ लांतकि

वलोकि पंचास सहस, सातमइ शुक्रदेवलोकि च्यालीस सहस, आठमइ सहस्रारि देवलोकि छ सहस, नवमइ आणति देवलोकि विसइ, दसमइ प्राणतं देवलोकि विसइ, इग्यारमइ आरणि देवलोकि वारमइ अच्युतदेवलोकि वेहु दउढु दउढु सउ, अनइ हेठिले त्रिहु ग्रैवेयके इग्यारोत्तर सउ, माहिले त्रिहु ग्रैवेयके सत्तोत्तर सउ, ऊपहले त्रिहु ग्रैवेयकि एकु सउ, पंच पंचोत्तरविमानें, एवंकारइ स्वर्गलोकि चउरासी लाख सत्ताणवइ सहस त्रेवीस आगला जिनभुवन वांदउं । अनंतरु भुवनपतिमज्झे असुरकुमारमज्झे चउसट्ठि लाख, नागकुमारमज्झे चउरासी लाख, सुवन्नकुमारमज्झे वहत्तरि लाख, वायकुमारमज्झे छन्नवइ लाख, दीवकुमार दिसाकुमार अहिट्ठकुमार विज्जुकुमार थुणियकुमार अग्गिकुमार छहं मध्यभागे छहत्तरि छहत्तरि लाख, एवंकारइ पाताललोकि सातकोडि वहत्तरिलाख जिनमंदिर स्तवउं । अथ मनुष्यलोकि नंदीसर वरि दीपि बावन्न, च्यारि कुंडलवलि, च्यारि रुचकि वलि, च्यारि मानुषोत्तरि पर्वति, च्यारि इक्षार पर्वति, पंच्यासी पांचे मेरे, वीस गजदंत पर्वति, दस कुरुपर्वति, त्रीस सेलसिहरे, असीव क्षारसेलसिहरे, सरिसउ वैताढ्यपर्वति, एवं च्यारि सइ त्रिसट्ठि जिणालइपडिमं, एवं आठ कोडि छप्पन्न लाख सत्ताणवइ सहस च्यारि सइ छिपासिया तिपलुके शाश्वतानि महामंदिर त्रिकाल तीह नमस्कारु करउं ॥

सर्वतीर्थनमस्कारस्तवनम् ।

नवकारव्याख्यानम्

नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ माहरउ नमस्कारु अरिहंत हुउ । किसा जि अरिहंत; रागद्वेषरूपिआ अरि वयरी जेहि हणिया, अथवा चतुष्पष्टि इंद्रसंबंधिनी पूजा महिमा अरिहइ; जि उत्पन्नदिव्यविमलकेवलज्ञान, चउत्रीस अतिशयि समन्वित, अष्टमहाप्रातिहार्यशोभायमान महाविदेहि क्षेत्रि विहरमान तीह अरिहंत भगवंत माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ १ ॥

नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ महारउ नमस्कारु सिद्ध हुउ । किसा जि सिद्ध; दुष्टाष्टकर्मक्षउ करिउ, जि मोक्षि गया । आठ कर्म किसा भणियइ । ज्ञानावरणीउ १ दरिसणावरणीउ २ वेदनीउ ३ मोहनीउ ४ आयु ५ नामु ६ गोत्रु ७ अंतराउ ८ ईह आठकर्मक्षउ करिउ जि सिद्धि गया । किसी ज सिद्धि; लोकनणइ अग्रविभागि पंचत्तालीस लक्षयोजनप्रमाणि जिसउं उत्ताणु छत्रु

तिसइ आकारि ज सिद्धिसिला, अमलनिर्मल जलसंकास जु अजराम
स्थानु, तेह ऊपरि योजनसंबंधियइ चउवीसमइ विभागि जि सिद्ध अ
सुखलीण ति सिद्ध भणियइ। तीह सिद्ध माहरउ नमस्कारु हउ ॥ २ ॥

नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ माहरउ नमस्कारु आचार्य हुउ। किसा
आचार्य; पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणियइ। किसउ पं
विधु आचारु। ज्ञानाचारु, दर्शनाचारु, चारित्राचारु, तपाचारु, वी
चारु, एउ पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणिइ। ती
आचार्य माहरउ नमस्कारु हउ ॥ ३ ॥

नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ माहरउ नमस्कारु उपाध्याय हुउ। कि
जि उपाध्याय; द्वादशांगी जि पढइ पढावइ। किसी ज द्वादशांगी; आ
रांगु १ सुयगडु २ ठाणांगु ३ समवाउ ४ विवाहपन्नत्ति ५ ज्ञाताधर्म्मकथा
उपासगदसा ७ अंतगडदसा ८ अणुत्तरोववाइयदसा ९ पण्हवागरणु
विपाकश्रुतु ११ दृष्टिवादु १२ ए बार आंग जि पढइ पढावइ ति उपाध्या
भणियइ। तीह उपाध्याय माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ४ ॥

नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ ईणि लोकि जि केई अछइ साधु। एउ लो
ए किसउ भणियइ। अठाई द्वीपसमुद्र पनर कर्म्मभूमि। जि किसी; पांच भ
पांच ऐरवत पांच महाविदेह क्षेत्र, ईह पनर कर्म्मभूमिमाहि जि केई अछ
साधु। किसा जि साधु; रत्नत्रउ जि साधइ। किसउ रत्नत्रउ; ज्ञानु दर्श
चारित्रु एउ रत्नत्रउ जि साधइ ति साधु भणियइ। तीह साधु पंचम
व्रतपरिपालक। पंचमहाव्रत किसा भणियइ। प्राणातिपातु १ मृषावादु
अदत्तादानु ३ मैथुनु ४ परिग्रहु ५ रात्रीभोजनु। जि वियर्ज्जइ ति सा
भणियइ। तीह साधु सर्वही माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ५ ॥

एसो पंच नमोकारो ॥ ६ ॥ एउ पंच परमेष्ठिनमस्कारु। पंचपरमेष्ठि
किसा। जि पूर्वोक्तभणिया अरिहंत १ सिद्ध २ आचार्य ३ उपाध्याय
साधु ५ इह पंचपरमेष्ठिनमस्कारु भावि क्रियमाणु हूंतउं किसउं करइ ॥ ६ ॥

सव्वपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ सर्वपापप्रणाशकारियउ हुइ। ईणि अ
चतुर्गतिकि संसारि भवभ्रमणु करतइ हूंतइ जि अशुभकर्म उपार्ज्या पा
मु ईणि पंचपरमेष्ठिनमस्कारि महामंत्रि स्मरीतइ हूंतइ क्षउ हुइ ॥ ७ ॥

मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥ ८ ॥ ईणि संसारि दधिचंदन
दूर्वादिक मंगलीक भणियइ। तीह मंगलीक सर्वहीमाहि प्रथमु मंगलु एहु

ईणि कारणि सुभटरायंआदि पहिलउं सुमरेवउं, जिव ति कार्य पहुतणइ प्रभावइ सुसिद्धिभणी पुहुचइ । पउ नमस्कार अतीतअनागतवर्त्तमानचउवीसी-आदिजिनोपासनार, सु तुम्हे विशेषइइ हिवडानणइ प्रस्तावि अर्थयुक्तु चोपु ध्यानपणु गुणेवउ पढेवउ । तु किसउ ।

जिणसासणस्स सारो चउदसपुव्वाण जो समुद्धारो ।
जस्स मणे नवकारो संसारो तस्स किं कुणइ ॥
अनइ एहु नमस्कार स्मरणा इहलोकतणा भय नासइ ।

यदुक्तं—भरवियगिरिरन्नमज्झे भयं पणासेइ चिंतिओ संतो ।
रक्खइ भवियसयाइं माया जह पुत्तभंडाइं ॥
वाहिजलजलणतक्करहरिकरिसंगामविसहरभयाइं ।
नासंति तक्खणेणं जिणनवकारप्पभावेणं ॥
हियइगुहाए नवकारकेसरी जाण संठिओ निच्चं ।
कम्मट्टगंठिदोघट्टघट्टयं ताण परिनट्ठं ॥

नमस्कारस्य स्वरूपं भण्यते । ईणि नवकारि नव पद पांच अधिकार सत्त-सट्ठि अक्षर, तीह्माहि छ भारी इकसठि लघु । इसउं नमस्कारतणउं माहात्म्यु ।

एसो मंगलनिलओ भयविलओ सयलसंतिसुहजणओ ।
नवकारपरममंतो मंतियमित्तो सुहं देउ ॥
अप्पुव्वो कप्पतरू एसो चिंतामणी य अप्पुव्वो ।
जो झाइ सयलकालं सो पावइ सिवसुहं विउलं ॥

नवकारव्याख्यानं समाप्तम् ॥

अतिचार.

संवत् १३६९ मां लखेला ताडपत्रमांथी.

तउ तुम्हि ज्ञानाचार दरिसणाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार पंचविधआचारविषइया अतीचार आलोउ । ज्ञानाचारि कालवेला पढिउ गुणिउ विनयहीनु बहुमानहीनु उपधानहीनु गुरुनिन्हवु अनेरीकन्हइ पढिउं अनेरउ कहिउ । व्यंजनकूट अक्षरकूट कानइ मात्र आगलउ ओछउ देववंदणइ पडिक्कमणइ सज्झाओ करतां पढतां गुणतां हुओ हुइ, अर्थकूट तदुभयकूट, ज्ञानोपकरणि पाटी पोथी ठवणी कमली सांपडा सांपडी पति आसातना पगु लागउ थुकु लागउ पढतां गुणतां प्रद्वेषु मच्छरु अंतराइ हूउ कीधउं

हुइ भवसगलाहइमांहि तेह मिच्छा मि दुक्कडं। मृपावादि सहसात्कारि आलु अभ्याख्यानु दीधउं, रहसमंत्रभेदु कीधइ, मृपोपदेसु दीधउ, कूडउ लेखु लिखिउ, कूडी साखि थापणि मोसउ, कुणहइसउ राडि भेडि कलहु विढाविउ, जु कोइ अतिचारु मृपावादि व्रति भवसगलाइमाहि हुउ त्रिविधि त्रिविधि मिच्छा मि दुक्कडं। अदत्तादानि विराहउं छानउं फोडउं लीधउं दीधउं वावरिउं घरि वाहिरि खेत्रि खलइ पाडइ पाडोसि अणमोकलाविउ चोरीच्छाइं घा प्रति प्रयोगु कीधउ, नवउं पुराणउ रसु विरसु सजीवु निजीवु मेलिउं, कूं तूल कूडइ थापि कूडउ कहिउ हुइ, अतीचारु अदत्तादानि व्रति भवसगला मांहि हुउ तेह सवहइ मिच्छा मि दुक्कडं। मैथुनव्रति लहुडपणि आपणा विरा सील खंडया सिउणइ सिउणांतरि, दृष्टिविपर्यासु, आठमि चउदसितणा नी मभंगु, अनंगक्रीडा परविवाहकरणु तिव्रभिलापु धरिउ हुइ, अनेरा जु घ अतिचारु मैथुनव्रति भवसगलाइमांहि हुअउ तेह सवहइ त्रिविधि त्रिविधि मिच्छा मि दुक्कडं। इव हियामाहिं सम्यक्त्व धरउ। अरिहंत देवता, सुसाधु गुरु, जिणप्रणीतु धर्मु, सम्यक्त्वदंडकु ऊचरउ। हिव अठार पापस्थानक वो सिरावउ। सर्वू प्राणातिपात, सर्वू मृपावाद, सर्वू अदत्तादान, सर्वू मैथुन, सर्वू परिग्रहु, सर्वू क्रोधु, सर्वू मानु, सर्वू माया, सर्वू लोभु, रागु, द्वेषु, कलहु, अभ्याख्यानु, पैशुन्यु, रति, अरति, परपरिवादु, मायामृपावादु, मिथ्यात्वदर्शनशल्यु ए अढारपापस्थान मोक्षमार्गसंसर्गविघनसमान त्रिविधि त्रिविधि वोसिराउ, अतीतु निंदउ, अनागतु पचखउ, वर्तमानु संवरु। सागारप्रत्याख्यानु।

खमिउं खमाविउं मइं खमिउ छव्विह जीवनिकाय।
सिद्धह दिन्न लोयणा नइ मह वइरु न पावु॥

हिव दुष्कृतगरिहा करउं। जु अणादि संसारमाहि हींडतइ हुतइ इणि जीवि मिथ्यात्वु प्रवर्ताविउ। कुतीर्थु संस्थापिउ, कुमार्ग प्ररूपिउ, सन्मार्ग अपलापिउ। हिवु ऋवानि मेल्हि सरीरु कुटुंबु जु पापि प्रवर्तिउ, ति अधिकरण हलरु मन्न घरट घरटी न्यांसां कटारी अरहट पायटा कूप तलाव घणां कराव्यां अनुमोद्या, ते सवे त्रिविधि त्रिविधि वोसिरावउ। देवस्थानि प्रतिष्ठा पूजा महिमा प्रभावना कीधी, तीर्थजात्रा रथजात्रा कीधी, पुस्तक लिखाव्यां, साधर्मिकवाछल्य कीधां, तप नीयम देववंदन वांदणां सामायिक अनेराइ धर्मानुष्ठाननइ विषइ जु ऊजमु कीधउ सु अम्हारउ सफलु हुओ। इति भावनापूर्वकु अनुमोदउ

पृथ्वीचन्द्रचरित्र

(वाग्विलास)

या विश्वकल्पवल्लीवल्लीलया कल्पितप्रदा ।
प्रदत्तां वाग्विलासं मे सा नित्यं जैनभारती ॥ १ ॥
धर्मश्चिन्तामणिः श्रेष्ठो धर्मः कल्पद्रुमः परः ।
धर्मः कामदुघा धेनुर्धर्मः सर्वफलप्रदः ॥ २ ॥

पुण्यलगइ पृथ्वीपीठि प्रसिद्धि, पुण्यलगइ मनवांछितसिद्धि; पुण्यलगइ
लबुद्धि, पुण्यलगइ घरि ऋद्धिवृद्धि; पुण्यलगइ शरीर नीरोग, पुण्यलगइ अभं-
भोग; पुण्यलगइ कुटुंबपरिवारतणा संयोग, पुण्यलगइ पलाणीयइं तुरंग, पुण्य-
इ नवनवा रंग; पुण्यलगइ घरि गजघटा, चालतां दीजइं चंदनछटा; पुण्य-
गइ निरुपम रूप, अलक्ष्य स्वरूप; पुण्यलगइ वसिवा प्रधान आवास, तुरंगम-
णी लास, पूजइं मन चींतवी आस; पुण्यलगइ आनंददायिनी मूर्त्ति, अद्भुत
स्फूर्त्ति; पुण्यलगइ भला आहार, अद्भुत शृंगार; पुण्यलगइ सर्वत्र बहुमान, पर्णुं
किस्युं कहीयइ पामीयइ केवलज्ञान।

एह पुण्यऊपरि राजाधिराज पृथ्वीचन्द्रतणउ कथासंबंध भणीयइ। ता
ईणइं राजुप्रमाणि रत्नप्रभापृथ्वीपीठि असंख्याता द्वीप समुद्र वर्त्तइं। तीह
माहि पहिलउ जंबूद्वीप लक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ। तेह पाखलि लवणसमुद्र
बिलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ। तेहपरइं धातकीखंडद्वीप च्यारिलक्षयोजनप्रमाण
जाणिवउ। तेह पाखलि कालोदधि समुद्र आठलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ। तेह
परइं पुष्करवरद्वीप सोललक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ। तेह पाखलि पुष्करव-
रसमुद्र बत्रीसलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ। आगलि वारुणिद्वीप ६४ लक्षयो-
जनप्रमाण जाणिवउ। तेह पाखलि वारुणीसमुद्र एककोडि २८ लक्षयोजनप्रमाण
जाणिवउ। ईणिपरि ठाण बिमणा द्वीप समुद्र जाणिवउ। क्षयण क्षयण। क्षीर-
द्वीप क्षीरसमुद्र घृतद्वीप घृतसमुद्र इक्षुद्वीप इक्षुसमुद्र नंदीसरद्वीप नंदीस-
रसमुद्र अरुणद्वीप अरुणसमुद्र अरुणवरद्वीप अरुणवरसमुद्र अरुणवरावभास-
द्वीप अरुणवरावभाससमुद्र इत्यादिक द्वीपसमुद्र असंख्यात। तेहमाहि पहिलु
जे जंबूद्वीप, तेहनी नाभिइं मेरुपर्वत जिसिउ प्रदीप, तेहनुं दक्षिण उत्तरइं
सातक्षेत्र चऊद महानदी छ वर्षधर पर्वत वर्त्तइं।

किसा ते क्षेत्र। भरतक्षेत्र १ हैमवतक्षेत्र २ हरिवर्षक्षेत्र ३ महाविदेहक्षेत्र ४
रम्यकक्षेत्र ५ ऐरण्यवतक्षेत्र ६ ऐरवतक्षेत्र ७। किसी महानदी। गंगा १ सिंधु २
रोहिताशा नदी ३ रोहिता ४ हरिकांता नदी ५ हरिसलिला नदी ६ सीतोदा ७
सीतानदी ८ नारीकांता ९ नरकांता १० रूप्यकूला नदी ११ सुवर्णकूला नदी १२
रक्तवती १३ रक्तानदी १४। किस्या किस्या वर्षधर। हिमवंतपर्वत १ महा-
हिमवंत २ निषध ३ नीलवंत ४ रुक्मीपर्वत ५ शिखरीपर्वत ६। हिव जे कहि
भरतक्षेत्र तेहमाहि २५ योजनप्रमाण वैताढ्यपर्वत ३२ सहस्र देश। ...
साढा पंचवीसदेश आर्य, थाकता अनार्य जाणिवा।
सयलदेश जाणिवा। ते कुण कुण काश्मीरदेश १ कीर २ कांबेर ३ कांबोज ४
कमल ५ उत्कल ६ करहाट ७ कुरु ८ काण ९ कथ १० कौशक ११ कोसल १२
केशी १३ कास्त १४ कारूप १५ कछ १६ कर्णाट १७ कीकट १८ कंकि १९
कौलगिरि २० कामरूप २१ कूंकण २२ कुंतल २३ कालिंग २४ करकूट २५
करकंठ २६ केरल २७ पस २८ पर्पर २९ पेट ३० गौड ३१ अंग ३२ गौप्य ३३
गांगक ३४ चौड ३५ चिह्लिर ३६ चैत्य ३७ जालंधर ३८ टंकण ३९ कोडि-
याण ४० डाहल ४१ तुंग ४२ ताजिक ४३ तोसल ४४ दशार्ण ४५ दंडक ४६
देवसभ ४७ नेपाल ४८ नर्त्तक ४९ पंचाल ५० पह्लव ५१ पुण्ड्र ५२ पांडु ५३
प्रत्यग्रथ ५४ अर्बुद ५५ वभ्रु ५६ वंभीर ५७ भट्टीय ५८ माहिष्मक ५९ महो-
दय ६० मुरुंड ६१ मुरल ६२ मेद ६३ मरु ६४ मुद्गर ६५ मंकन ६६ मल्लवर्त्त ६७
महाराष्ट्र ६८ यवन ६९ रोम ७० राटक ७१ लाट ७२ ब्रह्मोत्तर ७३ ब्रह्मावर्त्त
७४ ब्राह्मणवाहक ७५ विदेह ७६ वंग ७७ वैराट ७८ वनवास ७९ वनायुज ८०
वाल्हीक ८१ वल्लव ८२ अवंति ८३ वह्लि ८४ शक ८५ सिंहल ८६ सुम्ह ८७
सूर्पर ८८ सौवीर ८९ सुराष्ट्र ९० सुहड ९१ अस्मक ९२ हूण ९३ हर्मोक ९४
हर्मोज ९५ हंस ९६ हुहुक ९७ हेरक ९८ एवं देश अट्ठाणू अनइ आदन हाबस
सुगदिसुं घनगिरि सीकोत्तर चोलनाट पांड्य तालीउ त्रिहूति भोट महाभोट
चीण महाचीण वंगाल पुरसाण मगध वच्छ गाजणाप्रमुप अनेक देश वर्त्तइं।

तीहमाहि वपाणीयइ मरहट्ठदेस। जीणइ देसि ग्राम, अत्यंत अभिराम;
भलां नगर, जिहां न मागीयइं कर। दुर्ग, जिस्यां हुइ स्वर्ग; धान्य, न नीप-
जइ सामान्य; आगर, सोनारूपातणा सागर। जेह देसमाहि नदी वहइं, लोक
सुषइं निर्वहइं। इसिउ देश, पुण्यतणउ निवेश, गरूअउ प्रदेश। तीणि देसि
पइट्ठाणपुर पाटण वर्त्तइं; जिहां अन्याय न वर्त्तइं। जीणइं नगरि कउसीसे करी
सदाकार पापलि पोढउ प्राकार; उदार, प्रतोली द्वार; पातालभणी धाई, महा-

पाईं, समुद्र जेहतु भाई; जे लिइ कैलासपर्वतसिउं वाद, इस्या सर्वज्ञदेव-
प्रासाद; करइं उल्लास, लक्षेश्वरीकोटीध्वजतणा आवास; आनंदइं मन,
ई राजभवन; ऊपरि अपंड, सुवर्णमय दंड, ध्वजपटल लहलहइं प्रचंड।
पाटणमाहि अनेक आश्चर्य वापरइं, चउरासी चउहटां कलकलाट करइं।
स्यां ते चउहटां। सोनीहटी १ नाणावटहटी २ जवहरीहटी ३ सोगंधीयाहटी
फोफलिया ५ सूथिया ६ पडसूत्रिया ७ घीया ८ तेलहरा ९ दंतारा १०
लीयार ११ मणीयारहटी १२ दोसी १३ नेस्ती १४ गांधी १५ कपासी १६
डीया १७ फडीहटी १८ एरंडिया १९ रसणीया २० प्रवालीया २१ त्रांबहटा
२ सांपहडा २३ पीतलगरा २४ सोनार २५ सीसाहडा २६ मोतीप्रोयां २७
ालघी २८ मीणारा २९ फुंआरा ३० चूनारा ३१ तूनारा ३२ कूटारा ३३
ूलीयारा ३४ परीयटा ३५ पांची ३६ मोची ३७ सुई ३८ लोहटिया ३९
ोडारा ४० घीत्राहरा ४१ सतूआरा ४२ कागलीया ४३ मद्यपहटी ४४ वेश्या
४५ पणगोला ४६ गांछा ४७ भाडभुंजा ४८ वीवाहडा ४९ त्रांबडीया ५०
भइंसापत ५१ मलिन नापित ५२ चोपा नापित ५३ पाटीवणा ५४ त्रांगडीया
५५ वाहीत्रा ५६ काठवीठीया ५७ चोपावीठीया ५८ सूपडीया ५९ साथरीया
६० तेरमा ६१ घेगडीया ६२ घसाह ६३ सांधूआ ६४ पेरूआ ६५ आटीआ ६६
दालीया ६७ दउदीआ ६८ मुंजकूटा ६९ सरगरा ७० भरथारा ७१ पीतलहडा
७२ कंसारा ७३ पत्रसागीआ ७४ पासरीआ ७५ मंजीठीया ७६ साकरीया ७७
साबूगर ७८ लोहार ७९ सूत्रहार ८० वणकर ८१ तंबोली ८२ कंदोई ८३ युद्धि-
हटी ८४ कुत्रिकापणहटी एवं चउरासी चउहटां जाणिवा।

जीणइं नगरि अनेक पामीयइं रत्न, जीहतणां कीजइं यत्न। किस्यां ते
रत्न। अम्बरत्न गजरत्न पुरुषरत्न स्त्रीरत्न अनइ पद्मराग पुष्पराग माणिक
ींघलिया गुरुडोद्गारमणि मरकत कर्केतन वज्र वैडूर्य चन्द्रकांत सूर्यकांत
जलकांत शिवकांत चंद्रप्रभ साकरप्रभ प्रभानाथ अशोक वीतशोक अपराजित
गंगोदक मसारगल्ल हंसगर्भ पुलिक सौगंधिक सुभग सौभाग्यकर विषहर
धृतिकर पुष्टिकर शत्रुहर अंजन ज्योती रस शुभरुचि शलमणि अंशुकालि देवा-
नंद रिष्टरत्न कीटपंखि कसाउला धूमराइ गोमूत्र गोमेद लसणीया नीला तृण-
घर खड्गइ वज्रधार षट्कोण कणी चापडी पिरोजा प्रवाला मौक्तिकप्रमुख
रत्नेकरी दीसइं भरियां हाट, अनेकसुवर्णमय घाट; पिहुली वाट, चालइ घोडां-
तणां घाट, लोकनइं नहीं किसिउ ऊचाट। जिहां पुण्य विशाल, तीसी पोसाल;

जिहां छात्र पढइं चउसाल, तिसी नेसाल; जिहां अध्यातमतणी वात हु, अनेक मढ; जिहां लोक जिमइं अपार, तिसा सत्रूकार; जिहां ... तिसी पर्व; जिहां रमलि कीजइं स्वभावि, तिसी वावि; जिहां आनंद हु तिसा कूआ; पद्मवनखंडमंडित प्रवर, महाकाय सरोवर; जिहां रंगि ... रपवाडी, तिसी वाडी; जिहां सीतल फुरकइ पवन, तिसां पापलियां वन; ... अन्यायरहइं दाटण, पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध पुहिठाणपुर पाटण।

तीणि पाटणि राजाधिराज पृथ्वीचंद्र इसिइं नामिइं राज्य प्रतिपाल... भुजबलिकरी वइरी वर्ग टालइं। जीणि राजा गौडदेशनउ राउ गांजिउ, ...टनउ भांजिउ; पंचालनउ राउ पालउ पुलइं, कानडादेसनउ कोठारि ... होरसमुद्रनउ दोयणां दोयइ, बाबरउ वारि वइठउ टगमग जोयइ; चौडनउ ... चांपिउ, कास्मीरनउ कांपिउ; सोरठीयउ सेवइ, तुडि न करइं देवइं; अंग... सनउ अंगि ओलगइ, जालंधरनउ जीवितव्यकारणि रिगइ; घणुं किसुं ... गइ, रिपुकुलकालकेतु शरणागतवज्रपंजर पंचम लोकपाल। जीणं रिपु सवे ... पांख्यां दुर्ग सवे आपणा कीधा, वयरीनइं देसवटा दीधा। इसिउं निःकंटक ... प्राज्य प्रतिपालइ। तेह नरेश्वरनइं बुद्धिनिधान, परमहंसनामि प्रधान; जेउ ... निइं रूपिइं रूडउ, पाटरहिं नहीं कूडउ; राउलउ अर्थ सारइं, लोक उपगा... परविग्रह पारइ; पालइ दीन दुस्थित निराधार, करइ साधुजन उपगार; ... शास्त्र तत्त्व अपार, गुहिर गंभीर, अतिहिं धीर; मुहि मीठउं भाषइं, ... धर्म नि ...; चिहुं बुद्धितणउं निधान, सविहुं अमात्यमाहि मूलिगु प्रधान, राज्यनउं धुरिंधर, इसिउं ते मंत्रीश्वर; नरेश्वररहइं, शिवमय सुखमय ... स्वमय दिवस अतिक्रमइं।

अन्यदा प्रस्तावि राजा रातितणइं प्रस्तावि स्वप्न एक दीठउ, जेहनउं ... अर्थ अनंत मोटउं। किसउं ते स्वप्न। इसिउं जाणइ नरेश्वर सुवर्ण... कांति, देवरहइं मन भ्रांति; झलकते नेउरि झलकते कुंडलि हाथि परमाल, अर्द्धचंद्रसमभाल; कटि विशाल, इसी बालदेवी देषइ भूपाल। तेतलइ तेहनउं ... बलवत्ता घंटिकारवि भागा, तेतलइं राजनइं निद्रा भागी; जागिउ नरेश्वर, चिंतवइ अन्तेश्वर। किसिउ स्वप्नतणउ हुइ विचार, तेतलइ प्रभातावस... रि हुउ सांवत्सरिक नगर आंकार हुआ निमन्त्रिणा दाकार, ... संदेह; मंगलिक प्रबोधनि, राजा आनंदिउ मनि; शुभहेतु स्वप्नना ... विचार करइं, पाटहइ परिहरीं; इतु एक राजा मडुपाहरइ आव्या। मडु

सिउ विनोद नीपजाव्या पछइ स्नानमज्जनादिक प्रभातकरणीय कीधुं, याचकरहइ दान दीधउं। ति वारइं गणनायक दण्डनायक पायक वृत्तिनायक पट्टीवाहक तलवर माडम्बिक कौटुंबिक इन्द्रजाली फूलमाली धातुर्वादी मन्त्रवादी तन्त्रवादी यन्त्रवादी कपटाइत चपटाइत अङ्गरक्षक अङ्गमर्दक मीठाबोला सुहावोला कथाबोला साचाबोला जूठाबोला अनइ अनेक राजराजेश्वर मण्डलेश्वर सामन्त तंत्रपाल तलवर्ग चउरासीया महामात्य मन्त्रीश्वर श्रीगरणा धयगरणा धर्माधिगरणा सेनाधिपति आगरीया व्यवहारीया राजद्वारिक भण्डारी कोठारी कापडभण्डारी पूगभण्डारी रसोईया पाणहरी श्रेष्ठि सार्थवाह पीठमर्द गारयधू वीणकार वंशकार उतिकार आउजी पखाउजी पटाउजी आलयणकार लाक्षणिक तार्किक छान्दसिक मुखमाङ्गलिक वैद्य ज्योतिषी पाहरी पङ्गधर कुन्तधर धनुर्धर छत्रधर चालकहार सेजपाल धईगात पण्डित कवि लेखक रोघ महापोध माल मसाहणी पाण्डव पडंतारप्रमुखसकललोकि करी गर्भांक राजा राजसभां बइठा।

राजसभा किसी छइ। जीणि राजसभां कुंकुमजलि छटा दीधा छइ, पंचवर्णमुक्ताफलि चतुष्क पूरिया छइं, कर्पूरतणा गन्ध आलिप्या छइं, कृष्णागरुजयाधितणा परिमल महमहइं छइं, मोतीतणी सिरि लहलहइं छइं, फूलपगार भरिया छइं, कटीप्रमाणपादपीठसंयुक्त पुरुषप्रमाण सुवर्णमय सिंहासन मांडिउं छइं। तीणि सिंहासणि राजा बइठा। किसउ राजा दीसइ छइ, मस्तकि श्वेतातपत्र छइ; पासइं ढलइं चामर पवित्र, वाजइं विविध वादित्र; मस्तकि मुगट, कानि कुण्डल, हृदयि हारार्द्धहार, महाउदार, धनदतणउ रपतार, कमलतणु भण्डार। घणउं किसिउं कहीयइ। जिसउ पूर्णिमातणउ चन्द्र, जिसउ सोलकलासम्पूर्ण चन्द्र, इसउ दीसइ छइ पृथ्वीचन्द्र नरेन्द्र। इसिइ अवसरि प्रतीहार आविउ प्रणाम नीपजाविउ। राजाधिराजनी दृष्टि धी, ऊणि वीनती कीधी; जी अयोध्यानगरीहूंतउ दूत सम्हारइ बारांबारि आविउ मनितणाइं उत्साहि, जइ हुइ आदेस तु मेल्हउं मांहि। हूउ राजातणउ आदेस, दूति कीधउ सभामाहि प्रवेस। रायरहइ कीधउ जुहार, अलंकरिउं योग्य आसण उदार। राजा दूतरहइ बहुमान दीधउं, कुशल प्रश्न कीधउं। आनन्द ऊपनउ अत्यन्त, हिव दूत वीनवइ कार्य विशेष वन्त। जेहां छोयरहइं नदी किसिउ छेत्र, जिहां नहीं वइरीतणउ प्रवेश, दुष्टतणउ नेवेश; अनेक ग्रामनगर, सोनारूपातणा आगर; मनोहर एह कोसलादेस।

तिहां छइं नगरी अयोध्या । किसी ते नगरी । धनकनकसमृद्ध, पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध; अत्यंत रमणीय, सकललोकस्पृहणीय; पृथ्वीरूपिणीकामिनीतणइं तिलकायमान, सर्वसौंदर्यनिधान; लक्ष्मीलीलानिवास, सरस्वतीतणउ आवास; अतुलदेवकुलि मंडित, परचक्रि अखंडित, सदा सुठाकुरि पालित, स्वर्णमयराजमार्गि शोभित, उत्तुंगप्राकारवेष्टित; सदा आश्चर्यतणउ निलय, वसुधावनितावलय, निरुपमनागरिकतणउं ठाम, मनोभिराम; जनितदुर्जनक्षोभ, सज्जनोत्पादितशोभ; पुरुषरत्नोत्पत्तिरोहिणाचल, कुलवधूकल्पलतारत्नाचल। जेह नगरी देवगृह मेरुशिषरोपमान, धवलगृह स्वर्गविमानसमान; अनेक गवाक्ष वेदिका चउकी चित्रसाली जाली त्रिकलसां तोरण धवलगृह भूमिगृह भांडागार कोष्ठागार सत्रागार गढ मढ मंदिर पडवां पटसाल अधहृदां फडहृदां दंडकलश आमलसार आंचली धंदरवाल पंचवर्ण पताका दीपइं । सर्वांसर मंत्रांतर मांजणहरां सप्तद्वारांतर प्रतोली रायंगण घोडाहडि अपाडउ गुणणी रंगमंडप सभामंडपसमूहि करी मनोहर एवंविध आवास । जेह नगरिमाहि दोसी नेस्ती साह वसाह पटउलीया पडसूत्रिया पजूरीआ बीजउरीआ कणसारा भणसारा मणारा नवकर भोजकर भला लामा अनेक लोक वसइ । पांचसइं व्यवसाईया व्यवसायविषइ उल्लसइ । जेह नगर पापलीया अनेकि कूया वावि सरोवर नइ नीक निरुपम उद्यान आंब नींब जांबू जंबीर बीजपूरप्रमुख वृक्षावली करी प्रधान च्यारि पोलि, प्रधान कोसीसातणी ओलि; प्रभातसमइ सूर्यतणे किरणेकरी प्रासादतणे शिषिरि धजकलश झलकइ, धजऊड ललकइ । घणउं किसूं कहीइ, जिसी होइ अमरावती भोगावती अथवा अलका लंका इसी नगरी अयोध्या वखाणीइ । तीणि नगरी ईक्ष्वाकुवंशावतंस विहितवयरीकुलविध्वंस निजकुलकमलराजहंस अतुलबल पराक्रम त्रिविक्रमसमान राजा श्रीसोमदेव राज्य प्रतिपालइ, प्रजा संभालइ, अन्याय टालइ । जे राजा सत्यवाचा राजा श्रीहरिचंद प्रतिज्ञा राजाश्रीयुधिष्ठिर निर्भय भीम आपन्न जीमूतवाहन विद्या बृहस्पति लावण्य लवणार्णव रूपि कंदर्प प्रताप मार्त्तंड औदार्यि बलि राजा अद्भुतदानि चिंतामणि सेवकजनकल्पवृक्ष चतुरंगवाहिनीसमुद्र। घणउ किशिउ कहीइ महासासनु अरडकमल्ल जगझंपणउ प्रतापलंकेश्वर परराष्ट्रीरायहृदयशल्य इसिउ प्रतापीउ राजा राज्य प्रतिपालइ । तेह राजातणउ अंतःपुरिमाहि प्रधान गुणनिधान भर्त्तारतणी भक्तिविषय महासावधानि स्त्री कमललोचना इसिइं नामि पट्टराज्ञी वर्त्तइ । जेह राणी, सहिजि

सोमशर्म्म श्रीधर देवधर गंगाधर गदाधर लक्ष्मीधर श्रीवच्छ पद्मनाभ पुरुषोत्तमप्रमुख ब्राह्मण मिलिया, शांति करिवानइं कारणि कलिकलिया; गले लागा, वेदध्वनि उचरिवा लागा। जे ब्राह्मण १८ पुराण १८ स्मृति जाणइ। ते किस्या पुराण। भागवतपुराण १ भविष्योत्तरपुराण २ मत्स्यपुराण ३ मार्कंडेयपुराण ४ विष्णुपुराण ५ वाराहपुराण ६ शिवपुराण ७ वामनपुराण ८ ब्रह्मपुराण ९ ब्रह्मांडपुराण १० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण ११ आग्नेयपुराण १२ पद्मपुराण १३ लिंगपुराण १४ नारदपुराण १५ स्कंदपुराण १६ कूर्मपुराण १७ गरुडपुराण १८।

ते किसी स्मृति। मानवीस्मृति १ आत्रेयीस्मृति २ वैष्णवीस्मृति ३ हारीतकीस्मृति ४ याज्ञवल्कीस्मृति ५ शनैश्चरीस्मृति ६ अंगिरास्मृति ७ आपस्तंबीस्मृति ८ सांवर्त्तकीस्मृति ९ कात्यायनीस्मृति १० बृहस्पतीस्मृति ११ पारासरीस्मृति १२ शंखीस्मृति १३ लिखितास्मृति १४ दार्क्षास्मृति १५ गौतमीस्मृति १६ शातातपीस्मृति १७ वाशिष्ठीस्मृति १८।

तिसिइ रत्नमंजरी कुंअरि राजारहइं वीनती करावी, तिहां कुतिग जोइवा आवी। जेहतणइ परिवारि, सखी अनेकप्रकारि; कस्तूरिका कर्पूरिका लीलावती भागवती चंद्रावती चंद्रउली चंपू हंसी सारसी बकुलीप्रमुख अनेक सखी चलइ। तेहे सहित तिहां आवी। पितारहइं प्रणाम नीपजावी उत्संगि बइठी, दिव्यरूप देखी रायतणइ मनि चिंता पइठी। एहयोग्य कवण वर, किं नर, किं विद्याधर, इसीउं चींतवतइं नरेश्वर, सरोवरभणी दृष्टि दीधी। तु निर्मल जलि, बहुल कमलि; हंस करइं रमलि, च्यारइ दिसि पासीइं परिमलि; कारंड कुरंज कलहंस कलगलइं, ताप टलइं; मोर वासइं, सर्प नासइं; आडि पंपोआ तरइं, ब्राह्मण स्नान करइं; माहि शतपत्र सहस्रपत्र कमलवन, दीसतां प्रीति पमाडइं मन; देहुरां कलस झलहलइं, लहरि ऊछलइं। इम जोतां राजहंस एक सरोवरहूंतउ ऊडी बइठउ राजातणइं हाथि, निहालिउ नरनाथि। तु रूडउ रूपवंत, कलापामणउ, सोहामणउ; श्वेत, लावण्यवंत; जिसिउं लक्ष्मीदेवनातणउ चमर, जोणइं मोहइं अमर, कुंदकुसुमसमयकसमान प्रधान पक्षिकुलावतंस। इसिउ हंस कुमरी कुमारी लीधउ, राजा दीधउ। जेतलइ जोअइ कुमरी, तेतलइ हंसि अमर्णी पांप विस्तारी; कुमरि पांपमाहि घाली, भलीपरि सांची। ऊपहिउ हंसु, नाल पडिउ ध्वंसु। चसमसतउ ऊठिउ राउ, कहइ धाउ धाउ, बन्दिउ मोगि धाउ। राउलपायक चलभलिया, वीर सवि मिलिया। धाइ राणा, ब्राह्मण

५९ लोकव्यवहार ६० वशीकरण ६१ वारितरण ६२ प्रश्नप्रहेलिकाज्ञान ६३ धर्मध्यान ६४ ए कहीयइं सर्वकलाविज्ञान, जाणइ सकल शास्त्र वषाणइ चउसठि विज्ञान ।

इति श्रीअञ्चलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे प्रथमोल्लासः ।

द्वितीयोल्लासः

हिव ते कुमरि, चडी यौवनिभरि; परिवरी परिकरि, क्रीडा करइ नयनवी परि । इसिइं अवसरि आविउ आषाढ, इतरगुणि संबाढ; काढइयइ लोह, घामतणउ निरोह; छासि पाटी, पाणी वीयाइ माटी; विस्तरिउ वर्षाकाल, जे पंथीतणउ काल, नाठउ दुकाल । जीणिइ वर्षाकालि मधुरध्वनि मेह गाजइ, दुर्भिक्षतणा भय भाजइ, जाणे सुभिक्षभूपति आवतां जयढक्का वाजइ; चिहुं दिसि वीज झलहलइ, पंथी घरभणी पुलइ; विपरीत आकाश, चंद्रसूर्य पारियास; राति अंधारी, लवइं तिमिरी; उत्तरनउ ऊनयण, छायउ गयण; दिसि घोर, नाचइं मोर; सघर, वरसइ धाराधर; पाणीतणा प्रवाह पलहलइं, वाडिऊपरि वेला वलइं, चीपलि चालतां शकट स्खलइं, लोकतणां मन धर्म्मऊपरि वलइं; नदी महापूरि आवइं, पृथ्वीपीठ प्लावइं; नवां किसलय गहगहइं, वल्लीवितान लहलहइं; कुडुंबीलोक मावइ, महात्मा बइठां पुस्तक वाचइं; पर्वततउ नीझरण विछूटइं, भरियां सरोवर फूटइ । इसिइ वर्षाकालि राजा सोमदेवतणउं कराविउं सरोवर भराणुं, समुद्रसमाणउं; वधावणीउ धायउ, राजाकन्हइ आयउ; राजा मनि गहगहतउ, सरोवर जोइया पुहुतउ; दीठउं भरिउं सरोवर, ऊपनउ आनंदभर; जोसी तेडी महोत्सवतणुं मुहूर्त्त लीधउं, अभीष्ट जनरहइं तेडउं कीधउं; इसिउं करतां आविउ आसो मास, दिसि सप्रकास; कमलवन उल्लास, हंसतणु विलास; कादव सूकइं, नइ निरर्गलपणउं मूकइं; विकसइं कुसमकली, परमेश्वर सर्वज्ञ पूजतां पूजइ मनतणी रली; तिसिइ आसोसुदि पंचमीतणइ दिवसि मोटइ आडंबरि नरेश्वर सरोवरतणी पालि पुहुता, धजपट दीसइ लहलहता ।

ब्राह्मण मिलिया । कवण कवण । दुवे त्रिवाडी व्यास : सूराईत चंद्राईत देवशर्म्म मोपशर्म्म यज्ञशर्म्म

सामशर्म्मी श्रीधर देवधर गंगाधर गदाधर लक्ष्मीधर श्रीवच्छ पद्मनाभ पुरुषोत्तमप्रमुख ब्राह्मण मिलिया, शांति करिवानइं कारणि कलिकलिया; गले ब्रागा, वेदध्वनि उचरिवा लागा। जे ब्राह्मण १८ पुराण १८ स्मृति जाणइ। ते किस्या पुराण। भागवतपुराण १ भविष्योत्तरपुराण २ मत्स्यपुराण ३ मार्कंडेयपुराण ४ विष्णुपुराण ५ वाराहपुराण ६ शिवपुराण ७ वामनपुराण ८ ब्रह्मपुराण ९ ब्रह्मांडपुराण १० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण ११ आग्नेयपुराण १२ पद्मपुराण १३ लिंगपुराण १४ नारदपुराण १५ स्कंदपुराण १६ कूर्मपुराण १७ गरुडपुराण १८।

ते किसी स्मृति। मानवीस्मृति १ आत्रेयीस्मृति २ वैष्णवीस्मृति ३ हारीतकीस्मृति ४ याज्ञवल्कीस्मृति ५ शनैश्चरीस्मृति ६ अंगिरास्मृति ७ आपस्तंबीस्मृति ८ सांवर्त्तकीस्मृति ९ कात्यायनीस्मृति १० बृहस्पतीस्मृति ११ पारासरीस्मृति १२ शंखीस्मृति १३ लिखितास्मृति १४ दाक्षीस्मृति १५ गौतमीस्मृति १६ शातातपीस्मृति १७ वाशिष्ठीस्मृति १८।

तिसिइ रत्नमंजरी कुंअरि राजारहइं वीनती करावी, तिहां कुतिग जोइवा आवी। जेहतणइ परिवारि, सखी अनेकप्रकारि; कस्तूरिका कर्पूरिका लीलावती मायती चंद्रावती चंद्रउली चंपू हंसी सारसी वकुलीप्रमुख अनेक सखी वर्गइं। तेहं सहित तिहां आवी। पितारहइं प्रणाम नीपजावी उत्संगि बइठी, दिव्य र देखी रायतणइ मनि चिंता पइठी। एहयोग्य कवण वर, किं नर, किं विद्या- धर, इसीउं चींतवतइं नरेश्वर, सरोवरभणी दृष्टि दीधी। तु निर्मल जलि, वइठा कमलि; हंस करइं रमलि, च्यारइ दिसि वासीइं परिमलि; कारंड कुरंज कल- कलगलइं, ताप टलइं; मोर धासइं, सर्प नासइं; आडि पंपोआ तरइं, ब्राह्मण न करइं; माहि शतपत्र सहस्रपत्र कमलवन, दीसतां प्रीति पमाडइं मन; देहुरी कलस झलहलइं, लहरि ऊछलइं। इम जोतां राजहंस एक सरोवरहूंतउ ऊडी उ राजातणइं हाथि, निहालिउ नरनाथि। तु रूडउ रूपवंत, रलीयामणउ, ामणउ; श्वेत, लावण्योपेत; जिसिउं लक्ष्मीदेवतातणउ चमर, जीणइं मोहि- अमर, कुंदकुसुमस्तवकसमान प्रधान पक्षिकुलावतंस। इसिउ हंस कुति- ि कुमारी लीधउ, राजा दीधउ। जेतलइ जोअइ कुमरी, तेतलइ हंनि र्णी पांप विस्तारी; कुमरि पांपमाहि घाती, भलीपरि साती। ऊपडिउ हंसु, तत्काल पडिउ ध्वंसु। धसमसतउ ऊठिउ राउ, कहइ धाउ धाउ, वलिउ नीमाणि घाउ। राउतपायक पलभलिया, वीर सवि मिलिया। धाइं राणा, ब्राह्मण

५९ लोकव्यवहार ६० वशीकरण ६१ गारुडिकरण ६२ प्रश्नप्रहेलिकाज्ञान ६३ धर्मध्यान ६४ ए कहीयइं सर्वकलाविज्ञान, जाणइ सकल शास्त्र वखाणइ चउसट्ठि विज्ञान।

इति श्रीमत्प्रबन्धे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे प्रथमोल्लासः।

द्वितीयोल्लासः

हिव ते कुमरि, चडी यौवनिभरि; परिवरी परिकरि, क्रीडा करइ नवनवी परि। इसिइं अवसरि आविउ आषाढ, इतरगुणि संबाढ; कादइयां लोह, घामतणउ निरोह; छासि पाटी, पाणी थीयाइ माटी; विस्तरिउ वर्षाकाल, जे पंथीतणउ काल, नाठउ दुकाल। जाणिइ वर्षाकालि मधुरध्वनि मेह गाजइ, दुर्भिक्षतणा भय भाजइ, जाणे सुभिक्षभूपति आवतां जयढक्का वाजइ; चिहुं दिसि वीज झलहलइ, पंथी घरभणी पुलइ; विपरीत आकाश, चंद्रसूर्य पारियास; राति अंधारी, लवइं तिमिरी; उत्तरनउ ऊनयण, छायउ गयण; दिसि घोर, नाचइं मोर; सघर, वरसइ धाराधर; पाणीतणा प्रवाह पलहलइं, वाडिऊपरि वेला वलइं, चीपलि चालतां शकट स्खलइं, लोकतणां मन धर्मऊपरि वलइं; नदी महापूरि आवइं, पृथ्वीपीठ प्लावइं; नवां किसलय गहगहइं, वल्लीवितान लहलहइं; कुटुंबीलोक माचइ, महात्मा बइठां पुस्तक वाचइं; पर्वततउ नीझरण विछुटइं, भरियां सरोवर फूटइं। इसिइ वर्षाकालि राजा सोमदेवतणउं कराविउं सरोवर भराणुं, समुद्रसमाणउं; वधावणीउ धायउ, राजाकन्हइ आयउ; राजा मनि गहगहतउ, सरोवर जोइवा पुहुतउ; दीठउं भरिउं सरोवर, ऊपनउ आनंदभर; जोसी तेडी महोत्सवतणुं मुहूर्त लीधउं, अभीष्ट जनरहइं तेडउं कीधउं; इसिउं करतां आविउ आसो मास, दिसि सप्रकास; कमलवन उल्लास, हंसतणु विलास; कादव सूकइं, नइ निरर्गलपणउं मूकइं; विकसइं कुसमकली, परमेश्वर सर्वज्ञ पूजतां पूजइ मनतणी रली; तिसिइ आसोसुदि पंचमीतणइ दिवसि मोटइ आडंबरि नरेश्वर सरोवरतणी पालि पुहुता, धजपट दीसइ लहलहता।

तिसिइ समइं अनेक ब्राह्मण मिलिया। कवण कवण। दुवे त्रिवाडी व्यास पाठक देवाईत सोपाईत सराईत चंद्राईत देवशर्म्म सोपशर्म्म यज्ञशर्म्म

सोमशर्म्म श्रीधर देवधर गंगाधर गदाधर लक्ष्मीधर श्रीवच्छ पद्मनाभ पुरुषोत्तमप्रमुख ब्राह्मण मिलिया, शांति करिवानइं कारणि कलिकलिया; गलेशागा, वेदध्वनि उचरिवा लागा। जे ब्राह्मण १८ पुराण १८ स्मृति जाणइ। ते किस्या पुराण। भागवतपुराण १ भविष्योत्तरपुराण २ मत्स्यपुराण ३ मार्कंडेयपुराण ४ विष्णुपुराण ५ वाराहपुराण ६ शिवपुराण ७ वामनपुराण ८ ब्रह्मपुराण ९ ब्रह्मांडपुराण १० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण ११ आग्नेयपुराण १२ पद्मपुराण १३ लिंगपुराण १४ नारदपुराण १५ स्कंदपुराण १६ कूर्मपुराण १७ गरुडपुराण १८।

ते किसी स्मृति। मानवीस्मृति १ आत्रेयीस्मृति २ वैष्णवीस्मृति ३ हारीतकीस्मृति ४ याज्ञवल्कीस्मृति ५ शनैश्चरीस्मृति ६ अंगिरास्मृति ७ आपस्तंबीस्मृति ८ सांवर्त्तकीस्मृति ९ कात्यायनीस्मृति १० बृहस्पतीस्मृति ११ पारासरीस्मृति १२ शंखीस्मृति १३ लिखितास्मृति १४ दाक्षीस्मृति १५ गौतमीस्मृति १६ शातातपीस्मृति १७ वाशिष्ठीस्मृति १८।

तिसिइ रत्नमंजरी कुंअरि राजारहइं वांदिवा कारणि, जिहां पुनिम आव्या आवी। जेहतणइ परिवारि, सखी अनेकप्रकारि; कस्तूरिका कर्पूरिका गोरोचना पद्मावती चंद्रावती चंद्रउली चंपू हंसी सारसी बकुलश्रीप्रमुख अनेक सखी बसइं साहिं सहित तिहां आवी। पितारहइं प्रणाम नीपजावी उत्संगि बइठी, दिव्य रूप देखी रायतणइ मनि चिंता पइठी। एहयोग्य कवण वर, किं नर, किं विद्याधर, इस्याउं चीतवतइ नरेश्वर, सरोवरभणी दृष्टि दीधी। तु निर्मल जल, बहुल कमल; हंस करइं रमलि, च्यारइ दिसि पार्श्वइं परिमलि; करंड कुरंज कलहंस कलगलइं, ताप टलइं; मोर वासइं, सर्प नासइं; आदि पंथीआ नरइं, ब्राह्मण स्नान करइं; माहि शतपत्र सहस्रपत्र कमलवन, दीठलां शांति पमाडइं मनः दर्दुर दंडवत्सर खलहलइं, लहरि ऊछलइं। इस जोतां राजहंस एक सरोवरहुंतउ ऊडी बइठउ राजातणइं हाथि, निहालिउ नरनाथि। तु रूडउ रूपवंत, कर्णाभरणउ, सोहामणउ; श्वेत, लावण्योपेत; जिसिउं लक्ष्मीदेवतातणउ चमर, अथवा कोहापइं अमर, कुंदकुसुमस्तबकसमान प्रधान पक्षिकुलावतंस। इसिउ हंस कुमरी कुमारी दीठउ, राजा दीठउ। जेतलइ जोअइ कुमरी, तेतलइ हंसि निरमणी पांप विस्तारी; कुमरि पांपमाहि घाली, भलीपरि साची। ऊपरि हंसु, मलयजल पडिउ वेतु। थरहरतउ ऊडिउ राउ, करइ घाउ घाउ, हणिइ वाराहि घाउ। राउभयाणक वनभनिया, वार सवि मिलिया। थाइ शब्द, ब्राह्मण

वरमणी ऊजाणा; हुवे माठा, सवे थियाडी आठा। तुंच पछी राउ पापउ [illegible] पडिइं जेतलइं, हंस भाइं पइठउ कमलमाहि तेतलइं। जे पारू, ते [illegible] वर माहि तारू समग्र सरोवर गाहिउ, पणि हंस न साहिउ। निश्वास [illegible] राउ पाछउ वलिउ, परिघउ परिवार मिलिउ। राणी ते वात जाणी, [illegible] [illegible] मनावी, सवेन कीधी छांडी छांडी पाणी; राजा आवासी [illegible] [illegible]उं दुःख परना छ मास अतिक्रमाया।

निसिउ आविउ वसंत, हुउ शीतलणउ अंत, दक्षिणदिसिनगर [illegible] [illegible] थई, विहसइं वणराइं।

सवे भला मासडा पण वइसाह न तुल्ल।
जे दवि दाधा रूंखडा तीह माथइ फूल॥

[illegible] मयकार, पंचम उच्चार; [illegible] वकुल, भ्रमरकुल संकुल, [illegible] [illegible] कर्णिकारनां फूल। मउर प्रियंगु पाडल, निर्मल जल, [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] पुणकुंद मचमचइं, नाग पुन्नाग [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] कुसुमश्रेणि; [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] वनमाहि [illegible]

पाऊ गांप मांगी मदन काहल भेरी भुंकार तरवरा। ईणिपरि मृदंगपटुपडहप्रमुख वादित्र वाजयां, दुःख दूरि ताज्यां। इकवीस मूर्छना इगुणपंचास तान, इस्यां हुई गीत गान; याचक योग्य प्रधान वस्त्रदान। किस्यां ते वस्त्र। सुथिला संग्रा-मां दाडिमां मेघवनां पांडुरां जादरा कालां पीगलां पालेवीयां साकसीनीयां कपूरीयां कस्तूरीयां फूदडीयां चउकडीयां सलवलीयां ललवलीयां हंसवडि गजवडि उडसाला नर्म पीड अटाण कताण दूना झामरलली भद्दरच सुद्धभद्दरच नलीवद्धप्रमुख वस्त्र जाणिवां। ईणिपरि महोत्सवभरि, साधि कुमरि, नरेश्वर रहता नगरि। मनतणइ उल्लासि, आव्या आवासि। रायरहइ कुमरीतणउं स्वरूप पिमासतां ऊपनी आकाशवाणी, ए वात्तां कहिस्यइ केवलनाणी। राजा तां आश्चर्य धरतइं हुंतइ प्रधान तेडाविउ, तिहां आविउ। ते प्रणाम करी बइ-ठउ तउ राजां बोलाविउ। हे मंत्रीश्वर विचारि, पाणिग्रहणयोग्य हुई रत्नमंजरी कुमारि। तु मंडावीयइ स्वयंवर, मेलीयइं सवे नरेश्वर, कन्या आपणी इच्छा वरइ वर। इसिउ आलोच कीधउ, तु राजा सविहुं दूतरहइं आदेश दीधउ; जु को पृथ्वीपीठि राय नइ राणउ, तम्हे जाणउ, ते समग्र ईणि स्थानकि आणउ। तिवारपूठिइं स्वयंवरमंडप सूत्रधारपाहिं कराविवा मंडाविउ, हुं तुम्हकन्हइ आविउ। हिव तुम्हे तिहां पाउ धारउ, ए वीनती अवधारउ, राजासोमदेवतणइ मनि आनंद वधारउ।

इसी वात्तां सांभली दूतहुइं बहुमान देतु कटक लेइ राजा पृथ्वीचंद्र स्वयंवरभणी चालिउ, कटकभारि पातालि शेष नाग हालिउ। हाथीया घोडा, नहीं थोडा। किस्या ते हाथीया छइ। सिंहलद्वीपतणा, जाजनगरतणा, भद्रजातीक, उल्ललितसुंडादंड, प्रचंड, पर्वतसमान, जलधरवान, चपलकान, मदजल झरता, भालि करता, अतुलबल, उच्छृंखल, गलगर्जित करता गजेंद्र सांचरियां, तर-ळतेजी तरवरिया। किस्या ते। हयाणा भयाणा कूंकणा कास्मीरा हयठाणा पइ-ठाणा सरसईया सींधउरा केकाइला जाइला उत्तरपंथा पाणीपंथा ताजा तेजी तोरखा काच्छूला कांबोजा भाडेजा आरट्ट वाल्हीकज गांधार चांपेय तैतिल त्रिगर्त्त आजेनेय कांदेय दरद सौवीर क्षेत्रशुद्ध प्रमाणशुद्ध चपल सरल तरल इंचासणा परीछणा। जोयउं सहइं, वघूकारिया रहइं; वांकी त्रेठी, सभर पूठि; छोटे काने, सुघड वानि; सहरनी ललवलाई, नीछटनी कलाई, पूंछतणी आय-ताई; पलाणतणी सामंत्राई; वांकी तुंडवालि, वहुली पेटवालि, मुहि रूधा,

आसणि सूधा; हसमंत हयहेषारवि अंबर वधिर करता। सूरवीर साहसि
काल्हुआ किरडिया किहाडा नीलडा सेराहा कविला धूंसरा मांकडा दोरी
योरीया द्वादशावर्त्तव्यंजनगुणि शोभित शालिहोत्रशास्त्रप्रणीतलक्षणलक्षि
ससइं धसइं, सादि पइसइं, जुडइं, दउडइं। जिस्या सूर्यतणा रथ छूटा हुइं नि
अनेक तुरंगम सांचरिया। तउ पायक पहटिया । किस्या ते पायक। सूर
विक्रांत दुर्दांत पड्ड पेडे लीधे भ्रमइं, वयरीरहइं आक्रमइं; पवनवेगि पुलिइं, पोप
जुडइं, सेल्ल कुंत तोमर ताकइं, वयरीरहइं हाकइं; वेला लागी, न मेल्ह
स्वामी; नवनवां आयुध लिइं, एक वार आकाश पडतां धाढ दिइ। कि
न दीसइ थाका, जीह लगइ हुइ जयपताका; जे धाइं पुलइं ऊछलइं। इ
पायकनी मिली कोडि, जींह माहि नहीं षोडि। हिव रथ विस्तरिया। कि
ते रथ। चपलतुरंगमजूता, सुखिइं सुभट चालइं माहि बइठा सूता; छ
दंडायुधे भरिया, वायुवेगि सांचरिया; धउहडाटि धरामंडल धंधोलइं, रजम
रविबिंब रोलइं; ऊपरि धज लहलहइं, जाणे देवसंबंधीयां विमान गहग
घांट वाजइं, वयरी भाजइं; मूर्त्तिवंता जिस्या मनोरथ, इस्या अनेक सांचरि
रथ। इणिपरि चतुरंग दल चालतां हूतां नरेश्वररहइं वाटइं अनेक ग्राम न
आवइं, लोक नवनवां भेटणां नीपजावइ। मार्गि जातां आवी एक अटवी।

हिव ते किसीपरि वर्णविवी । जेह अटवीमाहि तमाल ताल हिंता
मालूर खर्जूर अर्जुन चंदन चंपक वकुल चिचिकिल सहकार कांचनार
जंबीर वानीर कणवीर कीर केलि कदंब निंब नारिंग नालीयरि द्राख दाडि
देवदारु अंकुल्ल कंकिल्लि नाग पुन्नागवल्ली यूथिका मालती माधवी ज
मरुबक दमनक पारधि केतकी मुचकुंद कुंद मंदार तगर सेवत्री राजगि
सिरीसां मोचलि सिरधू सामलि साग टींहूसार आक आकमंदार कपित्थ
वहिहडां करण धरण धव खदिर पलाश वड वेडस पींपल पींपरि ऊंबर
धाहुडी धामण धाव चेजड चारणी कउर करंज वाउल वींसुरी आमली आं
बोरि इंगोरि गोरडांमाप्रमुख वृक्षावली दीसइं, वांहतां सूर्यतणां कि
माहि न पइसइं। अनइं किहांइं सियालतणा फेत्कार, घूकतणा घूत्कार;
तणा गुरहराट, न लाभइं वाट नइ घाट; माहि वानरपरंपरा उछलइ, म
गउंड गुन्हालइं; सिंहनादभयभीत मयगल पलपलइं । जिस्या दी
पंथ, जिस्या अंधा। भ्रमर घुरकइं, भांडा घुरकइं; वेताल किलकिलइं, रा
कहकहइं; रींछ मांचरइं, चित्रतणा यूथ विचरइं। इसी महारौद्र अटवी।

तेहमाहि नरेश्वरतणां कटक न लहइं माग, न लहइ नदीतणा ताग; न सकइ चाली घोडा हाथी, न को जाणइ साथी। विषम पर्वतमाला, डावी जिमणी दवतणी ज्वाला, जईं न सकइं चडिया नइ पाला, तेतलइं दीसिवा लागा भील अत्यंत काला। तिवारइं राजापृथ्वीचंद्र चींतविउं आवी विषम वेला, जईं धाईं भील भेला; तु किम छूटीयइं, जइ परदल न खूटीयइं। जेतलइं राजा इसिउं चींतविउं तेतलइं ते कटक अटवीऊपरि हुईं पारि पहुतुं, मनि गहगहतुं। आगलि नगर एक देषइ, ते हर्ष कुणतणइ लेषइ। सवे कटकीया लोक आश्चर्य धरइं, परस्परइं इसी वात करइं। कुणहिं काईं जाणिउं, ए कटक इहां कुणि आणिउं; दैव रूठउ, पुणि देव दाणव कोइ तूठउ; जीणइं एवडुं सानिध्य कीधउं, इतलांमात्र कटक इहां लीधउं। अथवा राजा पृथ्वीचंद्र धन्य, जेहनुं गरूउं पुण्य। जेह धरणि इस्युं कहइ। जे गया विदेसि, पडिया क्लेसि; ताणीया पाणीनइ पूरि, आक्रम्या सूरि; चांप्या सधरि, डसिया विषधरि; धरियां राइ, भेल्या घणे घाइ; तुरडिया मोगे, दूहविया रोगे; उपाडिया वंदि, पडिया विछंदि; तीहं सविहुं-नइं धर्मनउ आधार, ए साचउ विचार। लोकरहइं इसी वात करतां राजाइं तिहां आंबावृक्षहेठलि आव्या, उतारा नीपजाव्या। तेतलइ धातु, पुरूतु; पाछउ जोतउ, कायरपणइ रोतउ; पुरुष एक नरेश्वरतणइ शरणि पइठउ। तेतलइ तरूआरि ताकता, हणिहणि भणी हाकता; केईं पुरुष आव्या। तेहइ राजा बोलाव्या। आपु ए चोर, महाकठोर, जे गहलइं रापइ ते ढोर। तिवारइं राजानइं सेवके कहिउं अरे ए कहीइं राजा पृथ्वीचंद्र, एहस्युं पहुचीं न सकइं इंद्र। तिवा-रइं ते पुरुष कहिवा लागा। नरेश्वर पहिलउं वात अवधारउ, तउ चोर उतारउं। अम्हे तलार, करउं नगरतणी सार। पुणि ए चोर, दुर्दान्त अपार; ए विवि-धवेसि हेरइ, बोलाविउ बोल फेरइ; चडइ मालि अटालि, पइसइ परनालि पालि; कमाड उघाडइ, पुणि सूतु कोइ न जगाडइ, अघोर निद्रा दिइ; बाल-कोटना आभरण लिइ; कटारी पापबंधन वाहइ, पर्वनमाय वेवाण राहइ; घडिउं चोर पचाडईं, राउला भंडार फाडइ; दीसइ दिसि शांत, पुणि साचिइं साक्षात् कृतान्त; विणासीनउ न मानइं चोरी, बांधइउं वाली जाइ दोरी; लोह सांकल त्रोडइ, घडी न रहइं षोडइ; हाकिउ उजाइ, रुंधिउ धसी धाइ, वलि वीधइ करवालि, जाइ लोकलक्षविचालि; गढमंदिर फाडइं, चोजि अडइ। इस्यु ए चोर गढनइ परनालि पइसतउ लाधउ, चाटी बांधउ, दसि दोर चोटि

नाठउ, तुम्हनइं शरणइ पइठउ । पुणि ए पापी, जीणि प्रजा संतापी; ए तुम्ह
धापउ, अम्हरहइं आपउ । नहींतु घायप्रहार देसिउं, प्राणिहिं लेसिउं।
रउ ठाकुर सपराणउ, तेह आगलि कोई राय नइ राणउ । सांभलउ ए अ
ए आगलि दीसइ पद्मपुरनगर महाविख्यात । तिहां छइ राजा समरकेतु, अ
सचेतु, वयरी प्रति साक्षात् केतु । जेतलइ तेउ ए वात जाणिसिइ, ता
ताहरा अहंकारतणउ अंत आणिसिइ । एह कारणि चोर आपी निर्दोष था
पछइ तुम्हे भावइ तिहां जाउ । इसी वार्त्ता सांभली आपणां सुभटसाम्हउं ज
राजा पृथ्वीचंद्र हस्या, तउ ते सुभट उल्हस्या । ऊठिया ते वीर, ताकवा ला
तोमर तीर । नाठा तलार, नासता पूठिइं वाजइ प्रहार; नीठ ते जई नगर
हि पइठा, ■ नाभिइं सास वइठा । जइ धीनविउ समरकेतु राउ, देपाडइं
पणउ घाउ । समरकेतु राजा कोपउ कोप, हूउ दलवई निरोप; तत्काल छा
हिउं दल, मिलइं सुभट सवल; वाजइं प्रयाणभेरी, वीहइं वयरी; पाटहस्ति
डिउ, तेहऊपरि राजा चडिउ । रथ हथियारे भरिया, तुरंगम पाखरिया, पाय
सांचरिया; चतुरंग दल नीकलिउं, बाहिरि एकठउं मिलिउं; दीसइं छत्रध्व
ऊछलइ रज । तउ तेह दूत मोकलिउ तिहां रही, तीणें पृथ्वीचंद्रप्रतिइं इसी
कही । तुं पियारइ देसि पइस, अन्याय करी इहां वयस; तउ तुं अजाण, अजी मानि
स्वामीसमरकेतुतणी आण, नहींतु प्रकटि प्राण; चोरदंड तुझनइं होसिइं, लोक
कउतिग जोइसिइ । ईणइं वातइं दूत अपमानी बाहिरि काढी राजा पृथ्वीचंद्रि
दल सामहाविउं, ए आपणइ पर्वं आविउं । चाल्यां बेउ दल, ऊपडइं धूलि
दल; कोइ आप पर विभाग बूझवइ नहीं, पितापुत्र सूझइ नहीं । न जाणीइं आपणं
दल, न जाणीइ पिरायुं दल, न जाणीयइ भूतल, न जाणीइ नभोमंडल; न जाणीइ
पूर्वं न जाणीइ पश्चिम एकाकार हूउं । बिहुं दल मिलते मादल वाजी, जयढ
वाजी, रणघट्टण काहली वाजी; रणतूर वाजियां । त्र्यंबकतणे ब्रह्मब्रह्मादि आवे
त्रिन्दइ त्रिभुवन टलटलिवा लागा, भेरीतणे भूंभूयादि भुहि भिलिहि फाटी,
शङ्खतणे कोलाहले कायर कमकम्या, नीसाणतणे निनादि उच्चैःश्रवा ऊकलिउ,
ऐरावण ऊमंडिउ, दिग्गज डहडहिया, ढाकबूक वाजी, धुंबारव फाटी, बिहुं दलि
चालते सेषनाग सल्वल्यिउ, कुलाचलचक्र चलिउ, कूर्म करोडि भाजइ, अंब
गाजइ; अकालि अवसानि प्रलयकालनी शंका हुई । वाध्या क्रोध, झूझइं योध; घाय
जाल्वइं, दर्यास दंडायुध चाल्वइं । किस्यां ते । वज्र १ चक्र २ धनुष ३ अंकुश

। पद्म ५ छुरिका ६ तोमर ७ कुंत ८ त्रिशूल ९ भाला १० भिंडमाल ११ मु-
ंढि १२ मक्षिक १३ मुद्गर १४ अरल १५ हल १६ परशु १७ पट्टि १८ शवि-
: १९ कणय २० कंपन २१ कर्त्तरी २२ तरवारि २३ कुद्दाल २४ दुस्फोट २५
दा २६ प्रलय २७ फाल २८ नाराच २९ पाश ३० फल ३१ यंत्र ३२ त्रस
१ दंड ३४ लगड ३५ कटारी ३६ वह्नि। इस्यां हथीआर झलहलइं, कायर
इं। रथ जूडंता दूरापाती लघुसंधानी शब्दवेधी धनुर्धर धाया, बाण मेल्हते
ाकाश छाया। एकि घोडे चडइं, एकि ऊनायला पडइं; कायर रडइं, सुभट
डइं, योध जुडइं। योद्धा मुह मूकी धाइं, धूंट पगि ऊजाइं; हस्तीतणा सुंडादंड
इं, एकिना शिर फूटइं। इसिइ युद्धि प्रवर्त्ततइ हुंतइ राजा पृथ्वीचंद्रतणुं
ल वयरीए एकवार भागुं, नासिवा लागुं। समरकेत हूउ सानंद, पृथ्वीचंद्र
उ निरानंद; चींतवइ ए किसी वात, माहरा दलरहइं काइं हूउ उपघात।
जा चींतवतइ हूंतइ वीर एक आकाशमार्गि आविउ, तीणइं कउतिग नींपजा-
उ। तीणं दीठइ वयरीना हाथतु हथियार पडियां, पृथ्वीचंद्रना कटकरहइं
रियां। राजासमरकेतु बांधी पृथ्वीचंद्रतणे पगतली आणिउ, पुण ते वीर
यारपूठिइं कुणहीं न जाणिउ। तत्काल जयजयारव ऊछलिउ, राजापृथ्वी-
द्रतणउ वीरवर्ग मिलिउ।

इति श्रीअंचलगच्छे श्रीमाणिक्यसुंदरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचंद्रचरित्रे
द्वितीयोल्लासः।

तृतीयोल्लासः

जइ मान मोडिउ, तउ समरकेतु बंधहूंतउ छोडिउ; पिहरावी बोलावीउ।
तुं मनि गर्व आणे, माहरी वात न जाणे। किवारइं सूर्य पूर्व छांडी पश्चिम उदय
मांडइ, समुद्र मर्यादा छांडइ; मेरु टलइ, आकाशतउ नक्षत्रराशि गलइं; पापीया-
घरि धर्म्म पलइ, पाणीमाहि अग्नि प्रज्वलइं; भूमंडल पलभलइं, कुलाचलचक्र
चलइ; अमृतहूंतउ विष थाइ, पृथ्वी रसातलि जाइ; कृपणि दान दीजइ, पुणि
सुक्षकन्दइ प्राणि शरणागत चोरइ किम लीजइ। तिवारइं जे आविउ छइ
शरणि, ते लागु राजातणे चरणि; स्वामी तुं धन्य जीणि तइ हुं ऊगारिउ,
नहींतु तलारे हूंतु मारिउ; पडतउ संसारि; होयत मनुष्यजन्मतणी हारि।
राजा कहिउं तु किसिउ, जेहतुं मन इसिउं। विचारि ते कहिवा लागु। अंग-

देशि अंतुरिनगर, तिहां श्रेठि लक्ष्मीधर, श्रीलक्ष्मीइं सनर। [illegible] हुं भ्रांति, पणि विषम दैवगति; दसकोडि द्रव्य हुंतीं, पणि [illegible]। विना परोक्ष हुआ पूठिइं जं वाहणमाहि घातिउं, तं समुद्र [illegible] ग्रसिउं, राइ चोरे मुसिउं; थलवटनउ थलवटइ रहिउं, कांइ ठाहु [illegible] [illegible], समग्र भंडारण [illegible]; समग्र द्रव्य निस्तरिउं, [illegible] अवर [illegible] मांडिउं, प्रवहण पूरिया मांडिउं। [illegible] सइं साठि किराणां [illegible], [illegible] करंता लिया, पोतां [illegible] भरिया, [illegible]समुद्र [illegible] नाखिया नागां, वाचरि [illegible] लागां, [illegible] कूआथंभ [illegible], नागरउ पाडिउ, [illegible] लागु, [illegible] नलि [illegible], [illegible] नालि [illegible]। [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ःकालनु मेह; थोडा मेहनउ त्रेह, वहिलु आवइ छेह। लक्ष्मीतणउं त न्याय
ोपनउ, हिव वैराग्य ऊपनउ; तापसदीक्षा लेसु हिव, जिम हुइ सदासिव।

हिव समरकेतु राजा ते वार्त्ता सांभली मनि वैराग्य पामिउं, राजापृथ्वीचं-
प्रतिइं शिरु नामिउ। अनइ इसी वात कही, ताहरु पुण्य अद्भुत सही। तूरहिइ
ोइ अदष्ट देवता सानिध्य करइ, सर्व विघ्न हरइ। ताहरूं अद्भुत भाग्य, मुझ-
नइ ऊपनु वैराग्य। विमासी जोयुं तउ असार, संसार। जिशिउं पीपलनुं पान,
जिशिउं गजेन्द्रनु कान; जिशिउ संध्यानु राग, जिशिउ भमर्रानु पाग, जिशिउ
मांकडनु वैराग; जिसिउ वीजनु झबकु, जिसिउ पोइणिनइ पाति पाणी-
नउ टबकउ; जिशिउ समुद्रनु कल्लोल, जिशिउ धजनु अंचल, तिसिउ सं-
सार चंचल। तुं एक कहिउं करि, माहरुं राज्य अंगीकरी। हउं तापसी दीक्षा
लेउसु, तप करिसु, संसार तरिसु। पृथ्वीचंद्रि तीहं विहुप्रति कहिउं तुम्हे
कलवउ धर्म, पणि नथी जाणता मर्म। सांभलउ वन ते पर्णवीइ जे वृक्षवंत,
नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे वीरवंत, सरोवर ते जे कमलवंत, मेघ ते जे
समावंत, महात्मा ते जे क्षमावंत, प्रासाद ते जे ध्वजावंत, पाट ते जे गूधवंत,
हाट ते जे वस्तुवंत, घाट ते जे सुवर्णवंत, भाट ते जे वचनवंत, मठ ते जे
ुनिवंत, गढ ते जे अभंगवंत, देव ते जे अरागवंत, गुरु ते जे क्रियावंत, वचन
ो जे सत्यवंत, शिष्य ते जे विनयवंत, मनुष्य ते जे धर्मवंत, तुरंगम ते जे
ाजवंत, हस्ती ते जे भद्रजातिवंत, प्रधान ते जे बुद्धिवंत, घर ते जे पाव-
ंत, राय ते जे न्यायवंत, व्यवहारीया ते जे मयावंत, धर्मी ते जे दयावंत।
अहो महाभागउ, हीयाने लोचने जागउ। जेतलूं अंतर राणी अनइ दासि,
ेतलूं अंतर दही नइ छासि, जेतलूं अंतर मधुरध्वनि नइ धासि; जेतलूं
अंतर समुद्र नइ कूपा, जेतलूं अंतर सोनईया नइ रूपा, जेतलूं अंतर धार
इ कूया; जेतलूं अंतर नरेश्वर नइ आहीर, जेतलूं अंतर रूपा नइ कथीर;
ेतलूं अंतर सुवर्ण नइ माटी; जेतलूं अंतर धारू भीति नइ थाटी; जेतलूं
अंतर पटउला नइ छाटी; जेतलूं अंतर पडसूत्र नइ सूनली, जेतलूं अंतर जा-
ना माणस नइ पूतली; जेतलूं अंतर खड्ग नइ छुरी, जेतलूं अंतर तंदुल नइ
ी; जेतलूं अंतर सूर्य नइ तारा, जेतलूं अंतर साकर नइ धारा; जेतलूं
अंतर सीह नइ सीआल, जेतलूं अंतर प्रभात नइ वीआल; जेतलूं अंतर रंभा
इ राग, जेतलूं अंतर सांवलि नइ साग; जेतलूं अंतर अलस्त्या नइ नाग,

जेतलूं अंतर हंस नइ काग; जेतलइ लूण नइ कपूर, जेतलइ पजूया नइ
जेतलइ डाकिली नइ तूर, जेतलइ खाल नइ गंगापूर; जेतलइ साधु नइ
जेतलइ हार नइ दोर; जेतलइ गजेंद्र नइ ससा, जेतलइ गुरुड नइ मसा;
लइ कोडि नइ सवा विशा, जेतलइ काविला घाट नइ गोहीस; जेतलइ
घृक्ष नइ रोहीस, जेतलइ व्यवसाय नइ कुठाकुर सेव; तेतलूं अंतर
अनइ श्रीसर्वज्ञदेव।

एह कारणि इसउ मनि निश्चियु आणिवउ। जिम श्री सुर्यपापइ दि...
नही, पुण्यपापइ सौख्य नहीं, पुत्रपापइ कुल नही, गुरूपदेशपापइ विद्या नही,
हृदयशुद्धिपापइ धर्म नही, भोजनपापिइ त्रिपति नही, साहसपापइ सि...
नही, कुलस्त्रीपापइ घर नही, वृष्टिपापइ सुभिक्ष नही, तिम श्रीवीतरागपापइ
सुगति नही। अनइ जिहां हिंसा, तिहां नही धर्मतणी प्रशंसा। जेह कारणि
इसिउं कहिइं। जिम विलंब विणसइ काज, कुठकुरि विणसइ राज, माठा
रिप्रचारि विणसइ छाज, अणवोलिइं विणसइ व्याज; पडपि विणसइ दान,
कुसंगति विणसइ संतान, स्वरपापइ विणसइ गान, लूइं विणसइ मइपान,
व्याधिइं विणसइ वान, कुमरणि विणसइ अवसान; कुपंडित विणसइ छात्र,
क्षपणि विणसइ गात्र; पीपलि विणसइ प्रासाद, सिंदूरि विणसइ साद; आक
दूधि विणसइ नेत्र, तीडे विणसइ नीपनु क्षेत्र; चीभडी विणसइ कणकनु पाक,
विपइमयोगि विणसइ रसवतीतणउ पाक; वरसालइ विणसइ शस्त्र, पयरी
विणसइ वस्त्र; जिम कुव्यसनि विणसइ सत्कर्म, तिम जीवहिंसा विणसइ
धर्म। राजा पृथ्वीचंद्र समरकेतु श्रीपतिप्रतिइ कहिइ छइ। सांभलु परमार्थ
हिव, टालिउ मिथ्यात्वतणी टेव; आदरू दयाधर्म नइ श्रीअरिहंत देव,
करउ सद्गुरनी सेव; जिम टलइ पापकर्मतणा लेव।

ए वार्त्ता सांभली तीह विहुंरहिइं मिथ्यात्वतणी भ्रांति टली, जैनदीक्षा
लेवा हुई मनि रुली। तेतलइ भाग्ययोगि दैवसंयोगिइं चारण श्रमणमाहत्मा
एक तिहां आविउ, तेहे सविहु तेहरहइं प्रणाम नीपजाविउ। पगि लागी, दीक्षा
मागी; तीणि दीधी, वांछितवार्त्ता सीधी। तिवारपूठिइं तेहे ऋषीश्वरे राजा
मोकलावी विहारक्रम कीधु, नरेश्वरि आवउ पीयाणउ दीधउ। पहिलुं पहुतु पद्म-
पुरि, लोक हर्ष घमाडिया भलीपरि। तिहां परमहंस प्रधान स्थापिउ, कर्णवातु
भार आपिउ। हिव राजा पृथ्वीचंद्र तेह नगरहूंता साते पीयाणे अयोध्या नगरी

पहुता, स्वयंवरि आव्या दीठा राय सवे गहगहता। राजा सोमदेवि साम्हइं आवी महोत्सवि करी माहि लिया, भला ऊतारा दिया। तेतलइं सूत्रहारे स्वयंवरमंडप नीपायु, पोयणिने पाने छायु। कपूर कस्तूरी महमहइं, ऊपरि ध्वज लहलहइं; चंद्रुआतणा चिचिघाइ, पूतलीतणी कायिलाई; थंभकुंभीतणा मनोहर घाट, पटइ भाट; रत्नमई तोरण नइ मोतीसरि, अलंकरिउ कुसुमतणे पगरि; वादित्र वाजइं, मांगलिक्यगीत छाजइं; आरीसा झलकइं, चालतां स्त्रीना नेउर खलकइं। इसिइ मंडपि राययोग्य मांच्यां नामांकित सिंहासण, मागणहारनइं पगि पगि दीजइ वासण। तु राजासोमदेवदूत सांचरिया, ऊतारे फिरिया; राय सविहुं योग्य आकारण नीपजाव्या; मोटे आडंबरि समग्र नरेश्वर मंडपमाहि आव्या। जिस्या देवलोकसंबंधीया हुइं देव, तिस्या दीसइं सवि नरेश्वर सिंहासणि वइठा हेव। तिसिइ अवसरि राजा पृथ्वीचंद्र, जिसिउ साक्षात् [illegible] इंद्र। इसिउ आवी स्वयंवरि सभामाहि वइठउ, सविहुं रायतणे मनि इसिउ चिंताभाव पइठउ। जं एउ सही कन्या वरिसिइ, अम्हारउं आविउं किम्हिइ करिसिइ। राजातणइ मस्तकि छत्र, अनइ चमर ढलइं पवित्र। राजा पृथ्वीचंद्र देषी सकललोक इसिउ विमासइं। जिम अक्षरमाहि ॐकार, मंत्रमाहि ह्रींकार, गंधर्वमाहि तुंबरु; वृक्षमाहि सुरतरु, सुगंधवस्तुमाहि कपूर, धन्नमाहि पाटणनउं चीर, वीरमाहि शद्रकवीर, गढमांहि कालिंजरु, मणिमाहि पद्मरागरु; द्वीपमाहि जंबूद्वीप, प्रदीपमाहि रत्नप्रदीप; पर्वतमाहि मेरु-भूधर, जीवनहेतुमाहि जलधर; जिम हस्तीमाहि ऐरावण, मंडलेश्वरमाहि रावण; तुरंगममाहि उच्चैःश्रवा तुरंग, हरिणमाहि कस्तूरीउ कुरंग; धवलमाहि वृषभ, प्रशस्यदिशिमाहि उत्तरककुभ; अचलमाहि भूमंडल, क्षमावंतमाहि भूमंडल; जिम नागमाहि शेषनाग, रागमाहि श्रीराग; जिम ध्यानमाहि शुक्ल ध्यान, दानमाहि अभयदान; मंत्रीश्वरमाहि अभयकुमार प्रधान, पानमाहि नागरवेलिउ पान; ज्ञानमाहि केवलज्ञान, विमानमाहि सर्वार्थसिद्धि विमान; गरुआमाहि गगन, पवित्रमाहि पवन, दर्शनमाहि जैनदर्शन; जिम देवमाहि इंद्र, ग्रहगणिमाहि चंद्र; तिसिउ सविहुं रायमाहि दीसइ पृथ्वीचंद्र नरेंद्र।

तिवारपूठिइं राजा सोमदेवि प्रतीहारपाहि कन्यारहइं तेडउ दिवराविउ, तउ सधव स्त्रीए धवलमंगलपूर्व कन्याहुइं मांगलिक स्नान कराविउं। अंगलूहण अनंतर कन्या सदशा श्वेत कपड पहिरियां, आभरणे अंग उपांग अलं-

करियां। किस्यां किस्यां ते आभरण। हार अर्द्धहार त्रिसर ...ंठ सूत्र कांची कलाप रसना किरीट मुकुट पट्ट शेपर चूडामणि मुद्रिका दशमुद्रिका केयूर कटक कंकण ग्रैवेयक अंगुलीयक अंगुस्थल हेमजाल जाल रत्नजाल गोपुच्छक उरस्त्रिक चित्रक तिलक कुंडल अभ्रमेचक ... हस्तसंकली नूपुरप्रमुख आभरण जाणिवां। ईहमाहि स्त्री योग्याभरणि हुई अलंकृतगात्र, हुई रूपतणउ पात्र, मस्तकि धरियां सोकिरितणां कन्यातणइ सिरि सिंदूरि भरिउ माग, मुखि तांबूलराग; ...विउं ... तीणि चडी ते चाली देवांगनासमान। आगलि हुइ वादित्रध्वनि गान। ईणिइं परिइं सकललोकहुइं आश्चर्य करती, हाथि वरमाला धरती; ... त्सवसहित कुमरि, पहुती मंडपतणइ बारि। ते देषी नरेश्वर सवे ... मनाविया हारि, चींतवइ ए रंभा कि तिलोत्तमातणइ अवतारि। ... पाणिग्रहणतणी वांछा धरइं, विविध चेष्टा करइं। एकि राय आपणा ... हार हलावइं, एकि वांहतणा वहिरषा चलावइं; एकि रत्नमय दडा ... एकि छुरी ऊछालइं; एकि मित्रसिउं वार्त्तालाप मांडइं, एकि ... ऊपजावइं, क्षणु एक पांडइं, एकि संभालइं कानि कुंडल, ईणिपरि चेष्टा करइं राजमंडल। तिसि समइ जि जोइवा आव्या आकाश देव अनइ दानव, पृथ्वीपीठि संख्या नही मानव; मिलिया सिद्ध अनइ किंनर, संख्या नहीं विद्याधर। हिव कन्या आभरणितेजि उल्लसती, रंभारहइं हसती; स्वयं वरमंडपमाहि आवी, [redacted] यशोधरा इसिइं नामिइं प्रतीहारीइं बोलावी। अहे कुमरि, अद्भुत गुण ताहरा संसारि, जेहे आकर्पिया हुंता आसमुद्रांतपृथ्वीतणा राय मिलिया, इसिउं जाणिउं जेहरहइं तुं वरसि तेहना मनोवांछित पासा ढलिया, मनोरथ फलिया।

हिव जोइ तुझ आगलि दसलक्षमगधदेसतणउ नरेश्वर, सहिजिइं अलवेश्वर; राजगृहनगरतणउ राजा मकरध्वज इसिइ नामि दीसइ। जेह राजा-तणइं कृपाणि राज्यलक्ष्मी वसइ, मुखि सरस्वती उल्लसइ; तूठउ दारिद्र हरइ, दीठउ आनंद करइ; रणांगणि गयवरतणी गुडि गाजइ, शत्रुभट भांजइ; इसु भूपाल, एहतणइ कंठि घालि वरमाल। अथवा ए जोइ वाणारसीतणउ राउ, भांजइ वयरीनगउ भडिवाउ; ए सरागदृष्टि अवलोकी, जेहतणउ प्रताप प्रसिद्ध त्रिहुं लोकि; जेहतणइ गजदलि चालतइ हुंतइ इंद्रहुंइ सपक्षपर्वततणी

शंका नींपजइं। जेहतणइ तरलतुरंगमि प्रसरइ हुंतइ वइरीरहतइ प्रलयकालोद्ध-समुद्रकल्लोलतणी शंका नीपजइ। इसिउ प्रचंडबल, अखंडभुजबल; अकल, सकल; कर्मचंद्रनामा नरेश्वर वरि, माहरुं कहिउं करि। अथवा विदर्भदेस कुंडिनपुरनगरीतणउ नरपति निहालि, जे विषमकालि; वहइ कर्णदानेश्वरतणउ अवतार, धनुर्धरपणइं हरइ अर्जुनतणउ कीर्तिप्राग्भार; जेहतणइ अतुल भंडार, प्रबलकोठार, शृङ्गारतणउ नही पार; करइ शत्रुसंहार, करइ भट्ट कइवार; महाइवार, महाउदार, कंठि वरमाल घाती ए मकरध्वज राजा अंगीकरि भर्त्तार। अथवा गौडदेस हंसपुरपाटणनु स्वामी सिंहरथ राजा जोइ, जीणि दीठइ आणंद होइ। जेह राजासंबंधीयइ कुंदमचकुंदकुमुदकेतकीकर्पूरधवलि कीर्त्ति मंडलि प्रसरतइ हुंतइं नवी सृष्टि स्थापी, तं अंजनाचलपर्वतरहइ कैलासपर्वततणी पदवी आपी; यमुनातणइ स्थानकि कीधउ गंगाप्रवाहु, मित्र कीधा चंद्र नइ राहु; सरीषा कीधा हार नइ नाग, अंतर टालिउं बग नइ काग; ईश्वरहुइं नीलकंठपणउं टालिउं, विष्णुहुइं कृष्णपणउं पखालिउ; बलदेव बांधवपणउं उजुआलिउं। ईणिपरि जीणि ब्रह्मातणी सृष्टि फेरी, तेहनी किसी वात वषाणीयइ अनेरी। इसिउ अलवेश्वर, सिंहरथ नरेश्वर, करि तुं आपणउ जीवितेश्वर। ईणिपरि तीणइं प्रतीहारीयइं राजा हरिकेतु सिंहकेतु मकरकेतु धूमकेतु पद्मरथ वीर्यबाहु सुवर्णबाहु शंखध्वज पद्मदेव पद्मानंद क्षेमंकर पृथ्वीधर सुबाहु रत्नांगद हेमांगद हेमरथ मणिरथ मणिशेखर रत्नशेखर चंद्रसोम सोमप्रभ सूरप्रभप्रमुख नरेश्वर वर्णव्या वषाण्या, पणि रत्नमंजरी कुंअरि मनइमाहि ना आण्या।

हिव आगलि दीठउ राजा पृथ्वीचंद्र, निहालिउ तेहतणउ मुषचंद्र, ऊलटिउ आनंदसागर, मनि चींतवइ एउ सही गुणतणउ आगर। तिवारइं प्रतीहारीयइं कहिउं हे कुमरि सांभलि, पुरा पूर्वइं सगर चक्रवर्ति हूउ विख्यात वसुधातलि। जेह सगरचक्रवर्त्तितणइ चउरासी लाष हस्ती, जीहतणि गति महाप्रशस्ती; चउरासी लाष तुरंग, ऊलटता जिस्या हुइं कुरंग, चउरासी लाष रथ सहिजिइं सुरंग; चउरासी लाष नीसाण वाजइं, वयरीना भडवाउ भाजइ; अत्यंत अभिराम, छन्नू कोडि ग्राम; गाम घोडउं फाडतां छन्नू कोडि साहण मिलइं, छन्नू कोडि पायक कलकलइं; चऊद सहस्र संबाध, चऊद सहस्र अमात्य अत्यंत साधु; जेहनइ चऊदरत्न, देवता करइ यत्न; नवनिधान, बहुत्तरि सहस्र नगर प्रधान; अन्यायरहइं दारुण, अडतालीस सहस्र पाटण; जेहे वसइं

अनेक कुटंब, इस्या चउवीस सहस्र मटंब; जीह्ना वर्णनतणी कीजइ जेह,
सोलसहस्र पेड; जेह चक्रवर्तितणइ सवाकोडि व्यापारी, रिद्धि अत्यंत
चरणि रुणझुणइ नेउर, इस्या चउसट्ठि सहस्र अंतेउर; विहितोल्लास,
उ लाप पिंडविलास; वत्तीससहस्र राय, प्रभाति प्रणमइं पाय; प्रत्यक्ष,
ससहस्र यक्ष; वीससहस्र सोनारूपातणा आगर, नवकोडि ध्वजाधर,
लाप दीवटीया उदार, त्रित्रिसइं साठि सुआर। एवंविध प्रचंडभुजदंड,
भरतक्षेत्रपट्टपंड; निरुपमस्फूर्त्ति, अद्भुतमूर्त्ति, इसिउ हूउ सगरचक्रवर्त्ति
भगीरथ राजा हूउ सगरतणउ पुत्र, जीणइं गंगा समुद्रि घाति
णउं चरित्र। तीणइं राज्य पालिउ अनेक कोडिवरस, तेहनइ पुत्र हूआ
तेहमाहिइ एकरहइं कुंतल इसिउं नाम, तेह कुंतलरहइं दीधउं मरहठदेसि
तेह कुंतलतणइ वंसि जयवंत जयध्वज देवचंद्र देवानीकप्रमुख राय
तेहना प्रगटरूं कुणइ वर्णवाइं जूजुया। देवानीकतणउ पुत्र हूउ राजा पृथ्वी
वर। जीणि पुहिठाणपुर पाटण थापिउं, स्वर्गतणउ दर्शन प्रत्यक्ष आणि
इव मधुरवाणि, तेहतणउ राजा पृथ्वीचंद्र जाणि। एउ नरेश्वर, ऐश्वर्यगुणि स
ात् सुरेश्वर, धैर्यगुणि मेरु महीधरु, दानिगुणि नवीन जलधर, गांभीर्यगु
ीरसागर; निर्मलपणइं गंगाजल, सौम्यपणइं शशिमंडल; रूपिगुणि अभि
ाकुमार, परकलत्रपरिहरणगुणि गांगेयतणउ अवतार; विवेकगुणि राजहंस
ातुर्यगुणि पुरस्सन्निर्णाभरि लब्धप्रशंस; पृथ्वीभारवहणि शेषनाग, एहरूपि
रि सु अनुराग, इसां छइं ताहरउ लाग। घणउं किसिउं कहीइं। एह राजा
यमङ्गलखिलागामंडल, शौर्यश्रीवदनारविंदप्रद्योतन, सकलमहीपालशीला
जिनशासन, पालितश्रीजिनशासन, तुज धरिवा योग्य छइ। ते रत्नमंजरी
वारि कर्णांजलिमां इस्यां वचन सांभली अति रोमांच धरतां, नेत्रतणा
जल धर करतां; हर्षभर वहतां, राजाकृष्ठी पुहतां। लाज देतां, कंठदेशि
वास्त देतां; मन्थान नयनयात्र उछलियां, लोक कलकलयां; विवाह
रपृष्ठि धरइं, भट जयजयशब्द उचरइं; गंधर्व गीत गाइं, वादित्रांगा वाजि
इं; वरतइ मन्त्रमंगल, हूइं महामहोत्सव विपुल।

इति श्रीतपागच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिकृते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे
वाग्विलासे तृतीय उल्लासः।

चतुर्थ उल्लासः

ह्विव निसिइ अवसरि तेह राजालोकमाहि जे धूमकेतु राजा कहिउ तेह-
इं धूमकेतुदेवतणउ मंत्र स्फुरइ, मीणइं जं चींतवइ तं करइ। धूमकेतुदेव
अ्यासीग्रहमाहिलउ जांणिवउ । कवण कवण । अंगारक १ विकालिक २
लोहितांक ३ शनैश्चर ४ आधुनिक ५ प्राधुनिक ६ कण ७ कणकणक ८ कणक ९
संतानक १० कणसंतानक ११ सोम १२ सहित १३ अश्वासन १४ रुत १५
प्रपांग १६ कर्बुरक १७ अजकरक १८ दुंदुभक १९ शंख २० शंखनाभ २१
शंखवर्णाभ २२ कंस २३ कंसनाभ २४ कंसवर्णाभ २५ नील २६ नीलाव-
भास २७ रुप्प २८ रुप्यावभास २९ भस्मक ३० भस्मराशि ३१ तिल ३२
तिलपुष्पवर्ण ३३ दक ३४ दकवर्ण ३५ काय ३६ वंध्य ३७ इंद्राग्नि ३८ धूम-
केतु ३९ हरि ४० पिंगल ४१ बुध ४२ शुक्र ४३ बृहस्पति ४४ राहु ४५
अगस्ति ४६ माणव ४७ कामस्पर्श ४८ धुर ४९ प्रमुख ५० विकट ५१ विसं-
धिकल्प ५२ प्रकल्प ५३ जटाल ५४ अरुण ५५ अग्नि ५६ काल ५७ महा-
काल ५८ स्वस्तिक ५९ सौवस्तिक ६० वर्द्धमान ६१ प्रलंब ६२ नित्यालोक
६३ नित्योद्योत ६४ स्वयंप्रभु ६५ अवभास ६६ श्रेयस्कर ६७ क्षेमंकर ६८
आरंभकर ६९ प्रभंकर ७० अरजा ७१ विरजा ७२ अशोक ७३ वीतशोक
७४ विनत्त ७५ विवग्र ७६ विशाल ७७ शाल ७८ सुव्रत ७९ अनिवृत्ति ८०
एकजटी ८१ द्विजटी ८२ कर ८३ करिक ८४ राजा ८५ अर्गल ८६ पुप्प ८७
भावकेतु ८८ । इह अठ्यासीग्रहमाहि धूमकेतु जाणिवउ ।

जिवारइ पृथ्वीचंद्रराजातणइ कंठि वरमाला पडी, तेतलइ धूमकेतुराजा-
हुइं रीस चडी। रीसं हूउ विकराल, धूमकेतुदेवतातणउ मंत्र स्मरीनइ ऊछालिउं
करवाल। ते खड्ग फीटी हूउ वेताल, जे उंचउ नवताल; कंठाविलंबितरुंड-
माल, करतलि कपाल; बुभुक्षाभिभूत, जिसिउ यमदूत; कान टापरा, पग छापरा;
आंपि ऊंडी, पेटि फूंदी; आंपि राती, हाथि काती; विकराल वेश, मोकला केश;
दहडाटि हसइ, धरामंडलि धसइ; मस्तकि अंगीठउ बलइ, भैरवा जिम
कलकलइ । इसिउं रुद्र रूप, केतलुं वपाणीयइ तेहनूं स्वरूप। इसिउ वेताल
देषी सहू भयभ्रांत हूउ। तेतलइं धूमकेतुराजा ऊठी कन्या उपाडी रथि घातिवा
लागउ। तेतलइं राय राणा धसमसिवा लागा। तेतलइं तेह जि वेतालहूंतउ अं-

धकार प्रसरिउं। जीणइं अंधकारि प्रसरतइं हुंतइं अवर कवण लेखइ, आपणी छांह न देषइ। गजेंद्र गलगलारवि जाणीयइं, रथचक्र जाणीयइं; चिंघपताका किंकिणीकाणि करी जाणीयइं, तूर्य शब्दि करी यइं, नींसाण द्रहद्रहाटि जाणीयइं। इसिउ अंधकार विपहर दिवसतणा, प्रहर रात्रितणा; छप्रहर गर्भवास सरीषुं प्रवर्तिउं।

हिव हूउं प्रभात, फीटी राक्षसनी वात, टलिउ अंधकारव्रात; अभ्र अपटल, गगन उज्ज्वल; निःशब्द घूककुल, निर्मल दिग्मंडल; हूउं रविमंडल; विहसइं कमल, विस्तरइं परिमल; वायु वाइं शीतल, महीतल; जिस्या रातापारेवातणा चरण, तिस्यां विस्तरइं सूर्यतणा कि इसिइ प्रभाति हुंतइ दीसइं घोडा हाथीया, दीसइं पूरिया साथीया; रायराणापरिवार, पुणि न दीसइं रत्नमंजरी कुमारि सार। तिवारइं राजा हूउ सचिंत, परिवार हूउ शोकवंत; पृथ्वीचंद्र राय हूउ विछाय। गसंबंधीया राइराणा तिसिइ अवसरि उल्हाणा। ते मंडप ... धीक दीसिवा लागउ। जिम लवणहीन रसवती, व्याकरणहीन सरस्व गंधरहित चंदन, घृतरहित भोजन; खांडरहित पकवान, मानरहित दान चंद्ररहित कवि, दाकरहित पवि; विवेकरहित मणु, वेदरहित ब्राह्मणु; स्वर्ग रहित पैरायण, लंकारहित रावण; शस्त्ररहित पायक, न्यायरहित नायक; रहित गृधु, तपोरहित भिक्षु; वेगरहित तुरंगम, प्रेमरहित संगम; नासिका रहित मुखमंडल, कर्णपालिरहित कर्णकुण्डल; वस्त्ररहित शृङ्गार, सुवर्णरहित अलंकार; तांबूलरहित भोग, मसिखिरहित प्रयोग; कंकणरहित बाहुदंड, पणि छरहित कोदंड; चरणरहित बाल, राज्यरहित भूपाल; स्तंभरहित प्रासाद, दानरहित मान; मुष्टिरहित कृपाण; ठउलीरहित बाण; अणीरहित छुरी, लोक रहित नगरी। जिम पाणीरहित सरोवर, तिम रत्नमंजरीपाषइ ते न सोहे डांधलणउ व्यतिकर। ते सभा, हुई निष्प्रभा। रीसइ हुंते जेहरहइं दीजइं तोलांनणा थाट, तीह भाट बोल्तां न जोइ कोइ वाट; जीह रीझइ धन कोइ न गाइ गीत; जेहे ऊपजइं चित्त, ते न वाजइं वादित्र; जीणं पूर्ण लसइ, ते कोइ न वांचइ पुस्तक; जोइनउं यथाणीयइं औचित्य, तितिइं न होइ नृत्य। इसिइ कुम्भि स्वयंवरमादि पवर्तनइ हुंतइ पृथ्वीकंपि हूउ। कुइ थंभ, धूजइं कुंभ; धूजइ रायराणा आमणधीठ, यइठे रहीइं नीठ; पणि

धूजतां पडइं, कायर रडइं। इम धूजि विछूटी, पछइ सभाविचालि पृथ्वी फूटी। विवर नीपनुं। तेह ज माहि तेज प्रगट हूउं। जोतां हूंतां तेह विवरमाहि दिव्यरूपधारिणी सिंहासणि बइठी स्त्री एकि दीसिवा लागी। तेह स्त्रीनणइ उत्संगि शोभमान तेजभारि, दीठी रत्नमंजरी कुमारि। सहू आश्चर्यपूरित हूउं। तीणं स्त्रीइं विहुं हाथि कुंअरि ऊपाडी बाहिरि मेल्ही, आपणपइं माहि गई, पृथ्वी वली तिसीइ जि हुई। असमाधि फेडी, राजा कूंअरि आघी तेडी।

तिवार लोकतणा मेला, वात पूछिवातणी नही वेला। हिव हर्षिइं लोक कलकलिया, विशेषतु उच्छव ऊकलिया। राजा कुमारि अनइ पृथ्वीचंद्र सहित आवासि पहुता। राय ऊतारे हूया। भोजन मंडपऊपरि ध्वज लहलहिया, विवाहमहोत्सव गहगहिया। हुइं धवलगान, नीपनां पकवान; केलवीगइं धान, स्वजनहुइं बहुमान; वापरइं पान, जिमाडीगइं जान। सामग्रजना घणी पलवटि बांधी हींडइ आकुला, मेलइं चाउरी चाकुला। मेल्हइं आडणी, हिव भोजनतणी मांडणी। बइठी पांति, जिमणहार परीसणहार विहुरहइं पांति। पहिलउं परीस्या फलावली खंडखाद्य पकवान, पछइ परीस्यां उन्हां अन्न। तां विशालस्थालि, परीसी शालिदालि; घृततणी नालि, वापरिइ डालतणां पालि; ऊपरि कूर करंबा दहीं वापरइं, इणिपरि लोक भोजन करइं। भोजनअनंतर दीधां कपूरमिश्र बीडां, लक्ष्मीवंततणे सवे वस्तु संपजइ भीडां। हिव वेलाऊपरि राजापृथ्वीचंद्रहुइं कराविउं मंगलस्नान, विवाहयोग्य पहिरियां वस्त्र प्रधान। सर्वांग शृंगार धरिउ, जाणे इंद्र अवतरिउ। गयउ गजेंद्र आणिउ, उत्तिम स्त्री वधाविउ। गजेंद्रहूंतउं ऊतरी द्वारइ पगि सिरावसंपुट चांपनउ माहि पहुतु। आचारविचार हुआ, चउरीसमाहि च्यारि मांगलिक वर्त्यां, हाथमेलावणइं दान प्रवर्त्यां। राजासोमदेवि वरहुइं गजरथ तुरंगमदान दीधउं, राजापृथ्वीचंद्रि महोत्सवसहित रत्नमंजरीतणउं पाणिग्रहण कीधउं। पछइ विवावंत उत्सवसंयुक्त ऊताराभणी चालिउ, सकललोक जोइवा मिलिउ। एकि वखाणइ पृथ्वीचंद्र भूप, एकि वखाणइ रत्नमंजरीतणउं रूप; एकि वखाणइ भाग्य, एकि वखाणइ सौभाग्य; एकि वखाणइ शरीरतणा शृंगार, एकि वखाणइ परिवार; एकि वखाणइ उहतणां कुल, एकि वखाणइ बिहुंतणां शील निर्मल; एकि वखाणइ लावण्य, एकि वखाणइ पुण्य। इसीपरि वखाणीतु स्थानकि आविउ, विश्वहुइं आनंद ऊपजाविउ। राजासोमदेवि सविहुं रायहूइं आदरइंव

कीधी। कुण हुइं घोडउं, कुण हुइं हाथिउ; कुण हुइं आभरण, कुण हुइं पटकूल इणिपरि भक्ति कीधी। राय सवे आपणे आपणे नगरि पहुता। राजापृथ्वी चंद्रहुइं सोमदेवनरेश्वरतणइ आवासि नितु नवनवे गौरवि शिवमय सुखमय दिवस अतिक्रमइं।

अन्यदा प्रस्तावि राजापृथ्वीचंद्र अनइ राजासोमदेव राजसभां एकठा बइठा। किसी ते राजसभा। जीणि सभा पात्र नाचइं, विद्वांस बइठा पुस्तक वांचइं; माल मल्लविद्या मांडिया माचइं, रागज्ञ रायहुइं रंग रहाविवा राचइं; सुहावोला शुभ बोली स्वामीकन्हे पसाउ याचइं, कूडा झागडू चिरकाल विवाद करी स्वयमेव पाचइ। इसी सभा, विहूं नरेश्वरि करि यली वार्ता प्रभा। तिसिइ अवसरि हर्षप्रसरि पहुतउ वनपाल, तीणि वीनविउ श्रीसोमदेव भूपाल। स्वामिन् आपणइ उद्यानवनि श्रीधर्मनाथ तीर्थंकरदेव पाउ धारिया, जीणि परमेश्वरि त्रिभुवन आनंद वधारिया। हिव अवसरि आविउं, श्रीधर्मनाथतणउं कहिवउं, चरित्र, महापवित्र। इणि भरतक्षेत्रि प्रवरगुणि करी मनोहर, रत्नपुर नामिइं नगर। तिहां ऐश्वर्यनिर्जितसुरेश्वर भानुनामा नरेश्वर। तेहतणइ पट्टराणी, सुव्रता इसिइं नामिइं जाणी। अन्यदा प्रस्तावि तीणि राज्ञी आपणइ आवासि, मनतणइ उल्हासि, पल्यंकि पउढी हुंती विपहुर रात्रिसमइं निद्राभरि वर्त्तमान हुंतीइं चऊद महास्वप्न दीठां। किस्यां ते महास्वप्न। गज १ वृषभ २ सिंह ३ लक्ष्मी ४ पुष्पमाला ५ चंद्र ६ सूर्य ७ ध्वज ८ पूर्णकलस ९ सरोवर १० समुद्र ११ विमान १२ रत्नराशि १३ निर्धूम वैश्वानर १४। ईह चतुर्दशमहास्वप्नतणउं सांभलउं जूजूउं वर्णन व्यतिकर। राणी प्रथम दीठउ गजेंद्र। किसिउ गजेंद्र। चतुर्दंत, विनयवंत, सप्तांगप्रतिष्ठित, गजद्रगुणि अधिष्ठित, विशालकुंभस्थल, विलोलकर्णांचल; उद्दंडशुंडादंड, तेजि करी प्रचंड, मदजलवासित कपोलमूल, भ्रमरकुल अनुकूल; परित्यक्तसकलदोष, उत्पादितसकलजननयनसंतोष; प्रधान, ऐरावणगजसमान; महाकाय, पर्वतप्राय; भद्रजातीय, अद्वितीय; जेहतणी गति प्रशस्ती, एवंविध दीठउ हस्ती १। तउ दीठउ वृषभ। किसिउ ते वृषभ। निर्जलधाराधरधवल, विकसित काशकुसुमसमुज्वल, विशालककुद, चंदकिरणतणीपरि विशद; सूक्ष्मसुकुमालरोमराजिविराजमान, स्निग्धकांतिदेदीप्यमान; अभंगश्यामलशृंग, सुंदरसमस्तअंगोपांग; विद्युद्दंत, पंक्तिशोभित; प्रमुख्यप्रदेश, चारुचरणसंनिवेश; प्रसन्नवदन, वृषभो-

धवललोचन; जिसिउ धाउतउ हुइ प्रासाद, अथवा कैलासपर्वतसुं लिइ वाद।
तिसिउ अत्यंत शुभ, दीठउ पभ २। तउ राणीयइ दीठउ सीहु। किसिउ
ते सीह। रूप्यपिंडपांडुर, अद्भुतप्रभाडंबर, रक्तोत्पलसुकुमालताल, तालूइ
लागी आरक्त जिह्वा जिसिउं हुइ अशोकप्रवाल। विस्तीर्णकेशरसटाशोभित-
स्कंध, वज्रसारशरीरबंध; प्रवरपीवरप्रकोष्ठ, कमलदल रक्तोष्ठ, तीक्ष्णदाढाविडं-
बितवदन, पराक्रमतणउं सदन; पुच्छच्छटां पृथ्वी आस्फालतउ, पीतलोचनि
भूमिकांति निहालतउ, मूषागतसुवर्णसमान फिरतां पिंजरनेत्र, शौर्यभूमि-
तणउं क्षेत्र; अकल अगंजित, सबल अपराजित; अवीह, एवंविध दीठउ सीह ३।
तु दीठी देवी लक्ष्मी। ते किसी। हिमवंतपर्वततणइ शिपरि, महाप्रस्वरि; पद्म-
द्रहमाहि योजनप्रमाणविमलकमलि संनिविष्ट, चंद्रसमानवदन, कमलसमान-
लोचन, निर्जितसूर्यमंडल, देदीप्यमानकुंडल; उदारप्रलंबितहार, अद्भुतशृंगार;
दिग्गजेंद्रे अमृतकलसि करी अभिषिच्यमान, पगतलि चांपी रही नवनिधान;
एवंविध सकलकल्याणपात्र, मनोज्ञगात्र, देवी लक्ष्मी दीठी ४। तदनंतर अशोक
चंपक नाग पुंनाग प्रियंग पाटल सेवत्री जाइ जूही वेउल वउल श्रीदमणा
मरूआ मंदार मुचकुंद केतकीप्रमुखवनस्पतीतणे कुसुमि निष्पन्न भ्रमरभरभुज्य-
मानपरिमल एवं विध दीठउ मालायुग्म ५। तउ दीठउ चंद्रमा। ते किसीउ चंद्र-
मा। रात्रितणइ समयि उदयि करी, सकल ताप हरी; रोहिणीरमण यामिनीजी-
वितेश्वर अमृतमयमूर्त्ति उज्वलधवल, प्रीणितचकोरकुल, एवंविध चंद्रमंडल ६।
तउ दीठउ श्रीसूर्य। किसिउ ते सूर्य। प्रभाततणइ समइ जेह श्रीसूर्यतणइ
उदइ प्रासादतणां द्वार ऊघडइं, देवहुइं पूजा चडइं; पंथ सवे वहइं, मुनीश्वर
धर्मकथा कहइं, लोक वाटविशेष लहइं, मेघ मल्हार गाइइ। मांहि अनेक
शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी कोमल विहसइं, चक्रवाक
उल्हसइं; एवंविध प्रखरकिरणनिकर, दीठउ सहस्रकर ७। तउ दीठउ ध्वज।
किसिउ ते ध्वज। कृताह्लाद, कोई एक गरूउ प्रासाद; प्रसरि, तेहतणइ शिपरि;
अखंड, सुवर्णमयदंड; तेजि करी अंकुश, कनकमय कलश; भली, रत्नमय
पाटली; तिहां जिसी स्वर्गतउ ऊदाली, इसी फाली; निरुपम स्वरूप, तिहां सी-
हतणउं रूप। इसिउ घंटागणि गहगहतउ वाइ लहलहतु निर्मल नीरज, राणीइं
दीठउ ध्वज ८। तउ दीठउ पूर्णकलस। किसिउ ते पूर्णकलस। सुवर्णघटित रत्न-
मय पइठांगां स्थापित, कंठि पुप्पमाला व्यापित; माहि अमृतपूरित घटभुगलो-

विराजमान, आम्रफलप्रधान; मांगलिक लक्ष्मीप्रदानतणइ विषइ अनलस, पूर्णकलस ९। तउ दीठउं सरोवर, वृक्षतणउ परिकर; पालिउन विस्तर, नउ समहर, पाणीनउ आकर। चउकी चउपंडी झलहलइं, परइ वाइ ऊच्छलइं, ऊपर जाण भरीयइं, पड कूइ तरीयइं। अमृतोपम नीर, दीठइं शरीर; सारस कुरल कपिजल कलहंस कलगलइं, तापनणा व्याप टलइं; हंस रमइं, भ्रमर भमइं; चकोर चक्रवाक कूजइं, जलकेलिनां कोड पूजइं; वासइं, सर्प नासइं; आडि पंखीया तरइं, ब्राह्मण स्नान करइं; आत्मिक नित्य सारइं, कश्मल निवारइ; संध्याविधि साधइं, अघमर्षणमंत्र आराधइं; धोतीयां धोयइं, कमंडल ढोयइं। सिसिरगुणतणउ सहवास, जलदेवतानउ निवास। देहरी दंडकलस आमलसारा झलकइ, जलहारिणीकुलवधूतणां नूपुर पलकइं; तडि कीर्त्तिस्तंभ दीसइ, हीयउं विहसइ। बग थलइ जाइइ, मेघ मल्हार गाइइ। माहि अनेक शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी सोमवंशी कमलवन विकाश पामइं, देवता जिहां क्रीडा कामइं। एवंविध उदार, धृताधार; अत्यंतसार; महामनोहर; दीठउं पद्मवनखंडमंडित सरोवर १०। तउ दीठउ समुद्र। किसिउ ते समुद्र! अनंतजल, अनंतकल्लोलकोटीसंकुल। माहि मत्स्य महामत्स्य नक्र चक्र पाठीन पीठ तिमिंगिलितणां कुल पडइ, एकि ऊपडइ। लहरि वाजइं, पाणी गाजइं; दक्षिणावर्त्तशंखतणां यूथ फिरइं, माहि अनेक प्रवहण सांचरइं। एकि पूरीइं, एकि नांगरीयइं, वाहण वाहणरहइं एकि मिलितां आफलइं। मोतीप्रवाला आगरथकां लीजइ, किहां एकइ मेघिइं पाणी पीजइं। इसिउ आश्चर्यतणउ निलय, पृथ्वीपीठहुइ वलय; गुहिर गंभीर, अनंतनीर; समुद्र, राणीयइ दीठउ समुद्र ११। तउ दीठउं विमान। किसिउं विमान। सुवर्णमयभित्ति, रत्नमयविच्छित्ति; प्रशस्यकलशि करी शोभमान, गगनलक्ष्मीहुइं कुंडलसमान; जेहमाहि अनेक देव देवी रमलि करइं, एकि श्रुति धरइं; एकि गीत गायइं, एकि वादित्र वाइं; हीयइं हर्ष न माइं। अनेककुसुमतणा प्रकर, चंद्रआतणा निकर; मोतीतणी सरि लहकइं, कपूरकस्तूरीतणा परिमल वहकइं; ध्वजा लहलहइं, मन गहगहइं। एवंविध विबुधवधूजनक्रीडास्थान, तेजःपटलि निर्जितभानुप्रधान, दीठउं विमान १२। तउ दीठउ रत्नराशि। किसिउ ते रत्नराशि। अनेक वज्र वैडूर्य चंद्रकांत जलकांत पुष्पराग पद्मराग मरकत कर्केतन चंद्रप्रभ साकरप्रभ प्रभानाथ अशोक वीतशोक अप-

श्री ४७ ह्री ४८ सुतारा ४९ चित्रकनका ५० चित्रा ५१ सौत्रामणी ५२ ५३ रूपांसिका ५४ सुरूपा ५५ रूपवती ५६ एवं अधोलोकनिवासिनी ८ लोकनिवासिनी ८ रुचकपर्वतचतुर्दिशिनिवासिनी प्रत्येक ८, ८, सिनी ४ मध्यरुचकनिवासिनी ४ ईणिपरि छप्पन्नदिक्कुमारिका आवी। सूतिकर्मतणी समग्ररीति नीपजावी। तदनंतर सौधर्मादि आसनप्रकंप नीपनउ। पहिलउं इंद्रहुइं कोप ऊपनउ। वज्र ऊलालिउं, निहालिउं। जाणिउं परमेश्वरतणउ अवतार, ऊलटिउ भक्तिभार। इंद्र गहगहिउ, आसण छांडी उत्तरासंग करी गूडें धइ मस्तकि हाथ जोडी स्तव कहिउ। इंद्रि आसणि वइसी हरिणगमेसी देव बोलाविउ, आविउ। इंद्रतणइ आदेसि सुघोषा घंटा आस्फालीनइ देवलोकि जणाविउं इंद्र लक्षयोजनप्रमाणि पालंकि विमाने चडी पंचरूपि परमेश्वर लेउं मेरुपर्व ति आविउ। चउसठि इंद्र मिलिया, देवसमूह हर्षि कलकलिया। आठ सहस्र चउसट्ठि आगला कलसि करी निर्मलजलि भरी स्नान कीधउं। तदनंतर अंग रूक्षण करी विलेपन २ वस्त्रयुगल ३ वासपूजा ४ पुष्पारोहण ५ माल्यारोहण ६ वर्णारोहण ७ चूर्णारोहण ८ ध्वजारोहण ९ आभरणारोहण १० पुष्पप्र ११ पुष्पप्रकर १२ अष्टमंगलकरण १३ धूपोत्क्षेप १४ गीत १५ नृत्य १ वादित्र १७ सत्तरभेदपूजातणउं करणीय सीधुं।

तीणि अवसरि गगन गाजियां, इगुणपंचासभेदि वाजित्र वाजियां। वणकवणपरिइं। उद्धमंताणं शंखाणं संगीयाणं खरमुहीयाणं परिपिरियाणं अहम्मंताणं पणवाणं पडहाणं अप्फालिज्जंताणं भंभाणं हारंभाणं तालिज्जं ताणं भेरीणं झल्लरीणं दुंदुभीणं आलिप्पंताणं मुरवाणं मुत्तिगाणं नंदीमुत्तिगाणं घटिज्जंताणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं आमोडिज्जंताणं झुंकाणं नउलाणं छिप्पं ताणं तुंडुक्कीणं चिपाणं वाइज्जंताणं करडाणं डिंडिमकाणं उत्तालिज्जंताणं त लाणं तोलाणं कंसतालाणं घट्टिज्जंताणं रिंकिसिकाणं सुंसरिकाणं दुंदुकीणं फु मिज्जंताणं वंसाणं वेणूणं एवमाईणं एगूणवन्नाए पवाइज्जंताणं। ईणि युक्तिइं, भावभक्तिइं, आत्मशक्तिइं, परमेश्वरहुइं स्नानमहोत्सव करी पुनरपि पंचरूपि इंद्र होई देव मातातणइं समीपि मुंकिउं। बत्रीस बत्रीस स्थाल सिंहासनादिक बत्रीसकोडि सुवर्णरत्नतणी वृष्टि करी, स्वामीतणइ दक्षिणहस्तांगुष्ठि करी अमृत संचारी, वस्त्रयुगल कुंडल श्रीदाम मेल्ही इंद्र स्वस्थानकि पहुतु।

हिव प्रभाति दासीमहिलीए राउ वधाविउ, स्वामी तम्हारे पुत्र आविउ। वधामणी दीधी, नगरमाहि सर्व महोत्सवतणी पद्धति कीधी। अलंकरिउ र, शृंगारियां प्रतोलीद्वार। मंच अतिमंचतणी रचना हुई, स्वर्गपुरीतणी ा लई। ध्वजपताका लहकइं, पुष्पपरिमल महकइं। नाचइं पात्र, राजाभ आवइं अक्षतपात्र। सोमाई भणतां आवइं छात्र, लोक अलंकरइं आभर- गात्र, उत्सव करिया एहइ ज घात। तीणि वेलां न ऊऊइं कोरण, वांधी- इं तोरण; वांधीयइं वंदरवाल, उत्सव विशाल; गुलधीउ लाहीयइं, मन ऊमा- ाियइ। इणि युक्ति जन्ममहोत्सव हूआ। नामगरणतणइ अवसरि मातानुइं होहलइ धर्म बुद्धि हुई। एहभणी धर्म इसिउं नाम दीधउं, परमेश्वरि रमलि करतां बालपणुं लीधउं, यौवनवयि राजकन्यातणउ पाणिग्रहण कीधउं। अढइं ाप वरस कुमारपणउं पाली पंचासवरस राज्यलक्ष्मी पामी, पछइ विरक्ति- युक्त हूउ स्वामी। नवविधलोकांतिकदेवतणी वीनतीलगइ सांवत्सरिकदान दीधउं, पछइ महोत्सवि सहित चारित्र लीधउं। वि वरस छद्मस्थ काल अति क्रमी, केवललक्ष्मी पामी; विहारक्रम करइं, भव्यलोक तारइं।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र अनइ सोमदेव उद्यानपालकरहइं साढाबारलाख वर्णदान देई समस्तपरिवारसाथिइं लेई परमेश्वर नमस्करिया सांचरिया, स- लोक ऊलटि धरिया। पृथ्वीरहइं अलंकरण, दीठउं स्वामीतणउं समोसरण। किसिउं ते। समग्र देव आवइं, समोसरण नीपजावइं। तां पहिलुं वायुकुमारदे- वतानिर्मित संवर्त्तक वायु विस्तरइं, ते तृण काष्ठ कचवर हरइं, आकाशि मेघ- पटल पसरइं, गंधोदकि वृष्टि करइं, फूलपगार भरइं। गरूअउं रत्नमय पीठ ...र्णी ऊपरि जानुप्रमाण पंचवर्ण कुसुम वरसइं, चिहुं दिसि दिव्य परिमल लसइं। रत्नमय सुवर्णमय रूप्यमय त्रिविध प्रकार रूपि कर्या उदार, अनेक कार; मणिरत्नसुवर्णमय कउसीसां सदाकार, च्यारि प्रतोलीद्वार। तिहां बिहु पासे उचैस्तर सुवर्णमय स्तंभ, ऊपरि मणिमय कुंभ; इंद्रधनुपमानमूरण, रत्नमय तोरण; प्रत्यक्ष जिसी मांगलिक्यनी पालि, इसी वंदरवालि। अनेक विचित्र, विशाल छत्र; उदारस्वरूप, धनकमय पूतलीतणां रूप; जेहे लिपिन सिंह शार्दूल गज, इस्यां निर्मल नीरज, पंचवर्ण ध्वज। इस्या समोसरणविचा- लि, मणिवद्धपीठि विशालि; सकलमांगलिक्यप्रमुख, गरुड अशोकवृक्ष; त्रि- सिउ प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष, इसिउ वारगुण चैत्यवृक्ष। तेहतणी छागां रत्नमय

सिंहासण, जगनाथहुइं बइसण। तेजिइं जोईं सकीयइ नीठ, इसिउं त्व[illegible] पइसीठ; जिस्यां विकसित सहस्रपत्र, तिस्यां पनर छत्रातिछत्र; अमर, [illegible] ढालइं चमर; अवरीकृतआदित्यमंडल, तीर्थंकरलक्ष्मीकर्णकुंडल; पूठइं [illegible] भामंडल। जेहनइ दर्शनि मिथ्यात्वपटल टलइं, इसिउ आगलि धर्म[illegible] [illegible]; दिव्य दुंदुभि वाजइ, तीणि निर्घोषि गगनांगणि गाजइं, परमेश्व[illegible] [illegible] भाजइ। सहस्रप्रमाणयोजन इंद्रध्वज लहलहइं, धूपनणा परि[illegible] [illegible], कांचिनणी कोडि कुहकुहइं। मनुष्यतणी कोडि आवइं, मनि हरख [illegible] [illegible] समोसरणि परमेश्वर जगदीश्वर नवसुवर्णकमलि पाय [illegible] [illegible] ऊपरि आव्युः प्रभाइं दसइ दिसि व्यापतउ, भविकलो[illegible] [illegible], [illegible] पारि परसइ, पूर्वाभिमुख सिंहासनि [illegible] [illegible] [illegible] जोई। [illegible], [illegible]; मिथ्यात्वमानमू[illegible] [illegible], [illegible], अमृतानुसारिणी, मधुरवाणी; लाभ जा[illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] मनि [illegible], समोसरणिमाहि पहुता। [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]। तिवारइ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]।

[illegible]।

…ग ते प्रशंसि जेहे जिणनणउ अवतार, वंशतणउ कवण विचार।
…वंश सूर्यवंश चंदिउ चाहुआण सोलंकीवंश चालावंश चावेला चावरो-
… गुरुवंश गुज्जरवंश सांभटा भाटीया सोदा चांदा दाहिणमा कच्छवाह
…ल हूणवंश एरीगद प्रकट सिलार धान्यपालवंश अनंगपाल राजपाल
…पाल कलाप परमार मोरीवंश यादव सैंधव निकुंभ गुहिलउत्त डोडीवंश
…डायणवंश मंगुआणा नह्वरवंश नीलणवंश वोडाणवंश दहीयावंश प्रमुख
…यावंश प्रमुखवंश जाणिवा। अनइ ब्राम्हणादिक कुलविशेष ज्ञातिविशेष
…णिवा। जिन कलिकाल प्रवर्त्तमानि चउरासी ज्ञाति वोलीयइं। किसी ते
…णि। श्रीश्रीमाली उसवाल पावेरवाल डींडू पुष्करवाल डीसावाल मेडत-
…वाल भानू सुराणा छत्रवाल दोहिल सोनी पडवड पंडरवाल पोरूआड गूजर
…मोड नागर जालहरा पद्मावता कपोल जांबू वायडा वाय दसउरा करहीया
…नागद्रहा मेपाडा भटउरा कथरा नरसिंहउरा हारल पंचमवंश सिरपंडला
…हलोड रायका अगरवाल जिणाणी वांभ घांघ पाल्हाउत उचित वगहू अहिछ-
…वाल श्रीगउड वाल्मीकि टाकी तेलटा तिसउरा अठवग्गी लाडीसाख्या वघन-
…रा सुहडवाल धांधू पद्मावती नीमा जेहराणा माथुर धाकड पल्लीवाल हरसउरा
…चित्रउडा गोला गहिवरिया लोहाणा भाटीया नागउरा आणंदउरा सतला कड-
…वलापुरी रायकवाल पैसाया वेरूया गोमित्री नारायणा डींडू गजउडा गोपलूआ
…अजयमेरा कंदोलीया कायस्थ सगउडा सीहउरा जेसवाल नादेया जाइलवाल-
…चांदल। एणि सविहुं ज्ञातिकुलवंशमाहि वखाणीइ सुश्रावककुल। जीणि
सुश्रावकतणइ कुलि जीववधु टालीयइ, जीवदया पालीयइ; मिथ्यात्व परिहरी,
यइ, सम्यक्त्व अंगीकरीयइ; पाणी भलीपरि गालीयइ, इंधण सोधी ज्वालीयइ;
अथाणूं न रांधइ, अणंतकाइ न चांपीइ; चोरी न कीजइ, सुपात्रि दान दीजइ-
मुनींयि वित्त चावी लाभ लीजइ; आलोअण लेई पाप धोइइ, परिग्रहप्रमाणि
पुण्यवंत हुंइइ; उभयकाल सामायक त्रिकाल देवपूजा समाचरीइ, पुण्यभंडार
भरीइ; वावीस अभक्ष बत्रीस अणंत काय टालीयइ, आठमि चऊदसि पूनिम
अमावास्य चउमासी पजूसण पर्व पालीयइं, पुण्यमार्ग उजूआलीयइ। इसु श्रा-
वकतणउ कुल, तउ पामीयइ जइ पोतइ पुण्य हुइ विपुल। उत्तिमकुलि लाधइ
हुंतइ गृहस्थरहइं जय हुइ। कुकलत्रतणउ संयोग, तु हुइ पुण्यतणउ वियोग।
किसा ते कुकलत्र। जे चालती कउथछि, साची अलछि; आत्मकुटुंबभं-
जनि, परचित्तरंजनि; कपटविषइ पटिष्ट, अतिहिं अनिष्ट; वोलति छउड उत्तार
…इ, रीसइं छोरू मारइ; जीभइं जव छांटइ, अलविइं असंबद्ध बोलइ, वगाई करती

गोदडु गिलइ, घरि चिओड करी वाहिरि मिलइ, बोलाची विसइं हाथ ऊलल फूफूनी सापिणी, चालती चीत्रिणी; पुण्यद्धारतणी आगल, नगरतणी भागल घणूं किसिउं कहीयइ। जिसी मिरीतणी उगटि, जिसिउं चालतउं पलेवण जिसी दायज्वरतणी वहिनि, इसी संतापकारि तु संपजइ नारी, जउ जीव पाप कर्मि भारी। अनइ तु हुइ सुकलत्र, जइ पोतइ हुइ पुण्यपवित्र। किसी ते सुशील सुलील सदाचार सत्यवंती विनयवंती विवेकवंती पुत्रवंती बोलवं सुजाणि मधुरवाणि देवगुरुतणइ विषइ भक्त, पुण्यतणइ विषइ आसक्त; सहजि सलावण्य, इसी सुकलत्र तु संपजइ जइ पोतइ पुण्य। अनइ जं शरीरि संपज लीलायंतपणूं, तं पुण्यतणउं प्रमाण। जं मधुरगति चालइ, पापबुद्धि पालइ; सहजि विचक्षण, शरीरि वत्रीसलक्षण; अलिकुलकज्जलश्यामल केशपाश, अष्टमीचंद्र समान भालस्थल, कामदेवकोदंडाकार भ्रूभंग, पूर्णचंद्रसमान वदनमंडल, आ शतलसमान कपोलयुगल; मौक्तिकश्रेणिसमान दशनमाल, वक्षस्थल विशाल प्रचंड भुजदंड, इसी रूपलक्ष्मी अखंड, तु संपजइ जइ पोतइ प्रचुरपुण्यपिंड। अनइ जे द्रव्य ऊपार्जिवातणइ कारणि एकि लोक देवदेवता आराधइं, मंत्र विद्या सधरपणइं साधइं; राजसभा बुद्धिवंत भणी वइसइं, रणक्षेत्रि पहिलु पइसइ; व्यापारकला केलवइं, धूर्त्तपणइं भलारहइं भोलवइं; जलमार्ग स्थलमार्ग आदरि आक्रमइं, भूमंडलि भूजावलि भमइं; जोगीपूठिइं लोभि लुवधा लागइं, एकि मोटा ठाकुर मागइं; एकि पाला पुलता पंथि चालइं, एकि हा दैव भणी वइरागरि घाउ घालइं; एकि हल पेडइं, उलग करइं लागा ठाकुरकेडइं रसकारणि रसकूपिका पडइं, एकि कलकलतइं समुद्रि चडइं; एकि विविसइं साठि क्रियाण वहुरइं, पिरायां कवित्व वहरइं; कष्ट सहइं विपुल, पुणि लक्ष्मी तु पामइं जइ पोतइं हुइ पुण्य परिघल; घरि सुवर्ण मणिरत्न प्रवाल, प्रधान मुक्ताफल, गजरथतुरंगमादिक जाणिवा लक्ष्मीतणा विलास सकल।

हिव जं संपजइ सत्पुत्र, एहू पुण्यतणउं चरित्र। एकइं तणइ एकि कु पुत्र हुइं जे वालपणि पालीइं लालीइं पणि जेतलइं यौवनभरि जाइं, तेतलइं मावीत्रसाम्हा थाइं; कृत्य अकृत्य न गिणइं, वडांतणां वचन निहणइं; मावी त्रसाम्हां नीठुर वोल भणइं, अहंकारि हणहणइं; लक्ष्मीमदि कुपात्रि वरसइं, कुस्थानकि विलसइं, पिराइं भूमि ग्रसइं; चाटूए वचनि उल्लसइं, रूडां वात कहनां साम्हां धसइं; स्वाननी परि भसइं, अपरहुइं हसइं; पापकरी उस- सइं, धर्मवातीं हियइ न वसइं; इस्यां जं पुत्र अभक्त अजाण, ए पापनणूं

।। अनइ जं पुत्र विवेकीया विचारवंत, सहजिइं संत सौभाग्यवंत, गरु-
ति भक्तिवंत गुणवंत; देवगुरुधर्मतणइ विषइ तत्पर, सुपुत्र पामीयइ जइ
इ पुण्यतणउ भर ।

हिव तु पामीयइ सुमित्र उत्तम, जइ पोतइ पुण्य हुइ निरुपम । एक
व सहजइं दुर्जनप्रकृति, पापतणइ विषइ मोटी आकृति; मुहि मीठउ, चित्ति
पाठउ; पिरायां छलछिद्र जोइ, विणास विण विगोइं; उपगारि केतलइं न लाजइं,
प्रशंसा मनमाहि पोजइ; आपणपउं घणुं देषइ, अवर नहीं किमिइं लेखइ;
जन संकटि पाडइ, परदोष ऊघाडइ; राउलइ धानइ, देवगुरु अपमानइं; मूर्नि-
न अधर्म, बोलइ पिरायां मर्म । जिसिउं विषवृक्षनउं वन, इसिउ जाणिवउं
दुर्जन । एकि जीव, सहजिइं उत्तमस्वभाव, पुण्यऊपरि भाव; उपगार करइं,
परमर्म हीयडइं धरइं; परदोष न प्रकासइं, असत्य न बोलइं हासइं; उन्मार्गि न
चालइं, पापवार्त्ता टालइं, गुरूपदेश झालइं, धर्मतउ न हालइं; नवे क्षेत्र वेपइं धन,
जिसिउ बावनु चंदनु; इस्यां जीहनां सीतल मन, इस्या कहीयइ सज्जन । संपजइ
सुमित्र सज्जन सुजाण, तं पुण्यतणउ प्रमाण । इस्यां धर्मफल देषी, प्रमाद उवेषी,
आलस परिहरी, आदर करी; पुण्यतणइ विषइ भावनासहित लाभ लेवउ ।
जेह कारणि इसिउं कहीइ । जिम प्रासाद शोभइ ध्वजाधारि, जिम हृदय
शोभइं हारि; जिम गृह शोभइं उत्तिम नारि; जिम मस्तक शोभइ पंडाया-
रुमारि; जिम कर्ण शोभइ स्वर्णालंकारि, जिम शरीरि शोभइ शीलशृंगारि;
सरोवरि शोभइ कमलि, पुष्प शोभइ परिमलि; मुष शोभइ निर्मलि नयणयुगलि,
रात्रि शोभइ चंद्रमंडलि; विवाह शोभइ तूरि, उत्सव शोभइ तूरि, नदी
शोभइ पूरि; जिम सम्यक्त्व शोभइ प्रभावना, तिम धर्म शोभइ भावना ।
एह कारणि भावनासहित पुण्यवंति लाभ लेवउ । जिसिइं पुण्यप्रभावि सद-
श्रेयकल्याण संपजइं ।

इसिउ उपदेश सांभली, मनतणी रली, परमेश्वरप्रतिइं बिहुं नरवरि
वीनती कीधी भली । हे जगन्नाथ! संदेह भांजिवानइं ऊभउ हाथ; गुरु टाली
अपरि संदेह न भाजइं, संदेहभंजन बिरुद तुम्हइं छाजइं । जेहि कारणि
इसिउं कहीइं । समुद्रि उलंघीयइ आरंडि न मसइ, गजेंद्र विदारीयइ सीहि न
ससइं; विषधरतणां विष जीरवीयइं गुरुडि न फूकडइं, कुशसिंहरनां कुन्द
दीजइं तडयडइं न धूंकडइं; संग्रामभूमिइं भिडीयइ राउनि न दयामणइ, मंडा-
रीतणा भार झालियइ अभीष्टि न अलपामणइं; पर्वततणां दांत्र माण्डिदइं

नदीतणइ पूरि न वाहलइं, रायतणइ मनि रंगि रहावीयइं मधुस्वरि न पाहलइं;
समुद्रि सेतुबंध बांधीइ पर्वते न काकरइं; दृढगढतणी पोलि भांजियइ गजेंद्रि
न वाकरइं, याचकजननां दरिद्र टालीयइं दातारि लक्ष्मीवंति न आजन्मदुःखि;
सकलसंदेह भांजीइ केवलीए न छद्मस्थि। तेह कारणि तउं हे स्वामिन् अम्हारा
संदेह टालि, एक संदेह ऊपनउ सरोवरतणि पालि; एक ऊपनउ अटवीटालि,
एक संग्रामि; एक स्वयंवरि, ए सवे संदेह अपहरि । इसी वीनती सांभली
जगन्नाथ कहइ छइ अहो नरेश्वर सांभलउ । हिव कहीइ छइ पूर्वभव, जिसि
हुउं अनुभव । ईणइ क्षेत्रि भृगुकच्छनामिइं नगर, जिहां नर्मदा नदी वहइ;
प्रौढ धवलगृह, लोक पुण्यविपइ सस्पृह; जीणि नगरि महाधर मंडलीक सेठ-
हत्य वरवीर राउत ठवइत भाथाइत ऊडणाइत फलहकार छुरीकार नलीधर
कुंभस्थर सींगडीया सावलीया जेठी यंत्रवाहा भंडारी कोठारीप्रभृति राज-
लोक वसइं, सर्वज्ञभवन देपी मन उल्लसइ । जिहां पद्मश्रीनामि सरोवर
महामनोहर, जिहां राज्य पालइं द्रोणनामा नरेश्वर । तेहतणइ सागर अनइ
पूरण इसिइ नामि पवित्रचरित्र, वि पुत्र । ते बेउ नर्मदानदीमाहि वेडी चडी
मत्स्य विणासि पापवर्त्तिया । तिसिइ अवसरि मत्स्य एक साम्हउ जोई तीणि
निइं बोलिउ । रे दुराचारउ म करउ पाप, नरकि इस्यां दुःसिइ संताप, नहीं
छूटउ करताइ विलाप; जइ न मानउ तउ पूछउ आपणउ बाप । ए वात सांभली
बेउ कुमर भयभ्रांत हुआ । तिसिइ नदीनइ कंठि एक दीठउ मुनीश्वर । तेह
बेहीनउ ऊतरी नमस्करिउ । पच्छउ तुम्हे म्हारा पात्र, हुं पालउं चारित्र; तुम्हे
करउ अभय । तीणइं सोनइं किसिउं कीजइं जीणइं त्रूटइं कान, तीणइं
उपाध्यायि किसिइं कीजइं जीणइं चूकइं ज्ञान, तीणइं ठाकुरि किसिउं कीजइं
जीणइं सामीइं पगि पगि अपमान; तीणइं धर्मि किसिउं कीजइ जीणइं थाइ
मिथ्यात्वप्रवाद, तीणइं घयरइं किसिउं कीजइं जीणि पाछइ ऊपजइ विखवाद,
तीणि मित्रि किसिउं कीजइं जीणिइं थाइं प्रमाद; तीणिइं घरि किसिउं
कीजइं जेहमाहि कहइ माप, तीणइं स्त्रीइं किसिउं कीजइं जेहतु निंद्य
संसार, तीणइं गानिइं किसिउं कीजइं जीणि कराइ पाप । एम तुम्ह
मन्द संसारि, मत्स्यनुणि अवतरी; तुम्हे उगारिया, पुण्यमार्गि लगाडिया ।
हिव पाप परिहरउ, पुण्य करउ । तीणइं आपीश्वरि पुण्यतणां फल कहीं, तेह
सिउं कहीं । अम्ह आपणइ घरि, करइ पुण्य नयनवीधरि; दिइं दान, धरइं
अर्हंतनउं ध्यान; करइ सुगुरुभक्ति, जागइं विवेकयुक्ति; करावइं प्रासाद

पडावइं सप्तकारि माद: पालइ सम्यक्त्व, जाणइ नवतत्त्व; करइं सामायक सार, स्मरइ पंचपरमेष्ठि नमस्कार, वे कुमार इसीपरि भरइं पुण्यभंडार। अन्यदा प्रस्तावि श्रीणि राजां मोह विछूटइं राज्य दीधउं, आपणपइं राज्ञी-सहित चारित्र लीधउं। निर्मल चारित्र पाली भावविशेषि पातालि वलीन्द्र अवतरिउ, राणीइं इंद्राणि धर्नइ तेह जि अणसरिउ। हिव पूरणतणइ पद्मश्री रमिइ नामि हुई कलत्र, जे महासचारित्र। ते सागर पूरण पद्मश्री पुण्य करी पहुता देवलोकि, सौख्य भोगवी अवतरिया मनुष्यलोकि। सगरतणउ जीव हुउ तु सोमदेव नरेन्द्र, पूरणनउ जीव हुउ पृथ्वीचंद्र। पद्मश्री ईहां रत्नमंजरी अवतरी। पूर्वतणउं धर्म फलिउ, सर्वसंयोग मिलिउ।

विहुं नरेश्वरि इणिपरि उपदेश सांभलिउ, श्रीधर्मनाथतीर्थंकरि वली कहिउं। हिव सांभलउ जे पूछिया संदेह, तेहनु कीजइ छेह। जिसिइ समइ रत्न-मंजरी नरोत्तमतणी पालिइं पितातणइ उत्संगि वइठी, कुणरहइं देवातणी चिंता पइठी; तिसिइ अवसरि, वलींद्रदानवेश्वरि; ज्ञानिप्रमाणि, पूर्व जाणी, पृथ्वीचंद्रनिमित्त रापिया रत्नमंजरी हंसरूपिइं अपहरी आपणइ कन्हइ आणी। छमास पातालि स्थापी, पछइ अवसरि पाछी आपी। राजा पृथ्वीचंद्र-हुइं स्वप्न दीधउं, अटवी अनइ संग्रामांगणि महासांनिध्य कीधउं। अनइ स्वयं-वरि जेतलइ धूमकेतु राजां वेतालांधकार विस्तारीनइ रत्नमंजरी रथि घाती, तेतलइं वलींद्रतणी इंद्राणी ते मेल्हिउ निपाती। छ प्रहर पातालि रापी, प्रभाति प्रगट करी दापी; उहे दिपाडिउ पूर्वभवस्नेह, एतलइं टलिया सवे संदेह। अहो पृथ्वीचंद्र माहरूं विशेषपर्यंत छइ भाग्य, अद्भुत सौभाग्य। जेह कारणि गृहस्थनेपि हाथियइं चटतां इणइ जि भवि ऊपजिसिइ केवलज्ञान, एह भणी ए भाग्य प्रधान। सोमदेवहुइं श्रीजइ भवि मुक्ति, इसी छइ युक्ति। ए वार्त्ता मनि धरी, श्रावकयोग्य धर्म आदरी, परमेश्वर नमस्करी; वे नरेश्वर सपरिवारि स्वस्थानकि आव्या, परमेश्वरि विहारक्रम नीपजाव्या।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र सुसरउराउ मोकलावी रत्नमंजरीसहित आपणइ प्रतिष्ठाणपुरि पाटणि आव्या, प्रधानि प्रवेश महोत्सव कराव्या। सकल लोक हाट पाटण काज काम परिहरी आभरण सूटते, वेणीदंड छूटते; पटउले फाटते, घाटडे विणसते; धसमसाटि जोइवा धाइउ राजा महोत्सवसहित आपणइ आवासि आइउ। रत्नमंजरी पटराणी स्थापी, कीर्त्तिइं जगत्रयी व्यापी। राज्यसौभाग्य भोगवतां अवसरि रत्नमंजरी महीधर इसिइं नामिइं

पुत्र जन्मिउ। ते सर्वांगसुंदर, रूपिइं पुरंदर विवेकबंधुर राज्यधुरंधर सत्पुरुषसिंधुर नामि महीधर प्रवर्द्धमान हूउ। राजापृथ्वीचंद्रहइं राज्य करतां नवलाप नवाणवइ सहस्र नवसइं नवोत्तर वरस अतिक्रम्यां। तिसिइ अवसरि कानडदेसनउ राउ सिंहकेतु इसिइं नामिइं अकस्मात् पुहठाणपुरि पाटणि-ऊपरि चडी आविउ, लोकरहइं आतंक ऊपजाविउ। तत्काल चरपुरुषि पृथ्वीचंद्ररहइं जणाविउ। ते सांभली राजापृथ्वीचंद्र कोपि करी करवाल ऊलालतु सामहिउ, सुभटवर्ग गहगहिउ; भंभा वाजी, गगनांगण रहिउ गाजी। राजा आप जेतलइं हाथि चडिउ, तेतलइं मनि विमासण पडिउ। रे आत्मन् हुं बाह्यवइरी पूठिइं धाउं, अंतरंगवइरी पूठि न धाउं। कुण ए बुद्धि, किसी शुद्धि, जीतउ जोईयइ क्रोध, जेहतउ चालइ विरोध; जीतु जोईयइ मान, जेह—हुइं पर्वतनउं उपमान; जीती जोईयइ माया, जेहतु पामीयइ स्त्रीतणी काया; जीतु जोईयइ लोभ, जेहतु संसारि समयक्षोभ; जीतु जोईयइ काम, जेहतु फेडइं पुण्यतणउं ठाम। ईणिपरि नरेश्वरहुइं चींतवतां ऊपनउं शुक्लध्यान, तत्काल ऊपनउं केवलज्ञान। आव्या देव, करइं सेव; बइरी समिउ, आवी नमिउ; वाजइं वादित्र, महोत्सव विचित्र। देवे वेष दीधउ, राजऋषि लीधउ; हंसजमलि, बइठउ सुवर्णकमलि; दिइ उपदेश, हूउ पुण्यतणउ निवेश। एके आदरिउं सम्यक्त्व, एके श्रावकत्व; एके संयम, एके नियम। ईणिपरि लोकहुइं लाभ देइं पृथ्वीमंडलि विहारक्रम करी पृथ्वीचंद्रि राजा सिद्धिसाम्राज्य लीधउं, तेहतणइ पुत्रि महीधरि पहुठाणपुरि अखंडप्रतापि राज्य कीधउं। पृथ्वीचंद्रनरेश्वरतणउं चरित्र सांभली, मनतणी रली, धर्ली; घली, विवेकवंति पुण्यवंत लाभ लेवउ। जिसिइं पुण्यतणा प्रभावनउ सकल श्रीसंघहुइं श्रेयःकल्याण ऋद्धिवृद्धिपरंपरा संपजइं।

श्रीमदञ्चलगच्छे श्रीगुरुमाणिक्यसूरिणा।
पृथ्वीचन्द्रनरेन्द्रस्य चरित्रं चारु निर्मितम्॥

संवत् १४७८ वर्षे श्रावण सुदि ५ रवौ पृथ्वीचन्द्रचरित्रं पवित्रं पुरुपत्तने निर्मितं समर्थितम्।

यावन्मेरुर्मही यावत् यावच्चन्द्रदिवाकरौ।
वाच्यमानो जनैस्तावद्ग्रन्थोऽयं भुवि नन्दतात्॥

इति श्रीअञ्चलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिकृते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे पञ्चम उल्लासः।

खरतरपट्टावलीषट्पदानि

जिण दिट्ठइ आणंदु चडइ अइरहसु चउग्गुणु ।
जिण दिट्ठइ फलइ पाउ तणु निम्मलु हुइ पुणु ।
जिण दिट्ठइ सुहु होइ कट्टु पुव्वक्किउ नासइ ।
जिण दिट्ठइ हुइ रिद्धि दूरि दारिद्दु पणासइ ।
जिण दिट्ठइ हुइ धम्ममइ अचुहुद्दु फाइ उइक्खलहु ।
पहु नवफणमंडिउ पासजिणु अजयमेरि कि न पिक्खहु ॥ १ ॥
भवण म करि भरि भणुहु बाण पुणि पंचम पयडहि ।
सधिय बिम्बपपासि चंजइरिहरु नन विजडहि ।
म्ड पिम्मु मा चाज नवण मापरिमहि पजहरु ।
नवफणमंडिउसीस जाव न हु पिक्खिउ जिणवरु ।
जइ पक्खिमि पासजिणिंदवरि नाणचंत निम्मलरयण ।
मग्गु पजुइरु बाण न रूप नहि न भुयप्पिम्मु हुइ हइमयण ॥ २ ॥
नवफणिपासजिणिंदु गहिउ अरुहि जु दिट्ठउ ।
अजयमेरि संभरिनरिंदु ता निगमनि तुट्ठउ ।
फंचपालउ अइ पत्तसु सिहरि साणउ रत्नविपउ ।
जसु सुमरणि सउ तवइ निच्चु आपासितउवउ ।
जा पुज्जभिलिण दक्कारविण कर उज्झिवि फरहरइ धर ।
जिणदत्तसूरि भर धवलि जसि ता पसिद्धि सुरभवणि कय ॥ ३ ॥
देवसूरिपहु नेमिचंदु बहुगुणिहि पसिद्धउ ।
उज्जोयणु तह पद्धमाणु खरतरवर लद्धउ ।
सुगुरु जिणेसरसूरि नियमि जिणचंदु सुसंजमि ।
अभयदेव सव्वंगु नाणि जिणवल्लह आगमि ।
जिणदत्तसूरि ठिउ पट्टि तहि जिण उज्जोइउ जिणवयणु ।
सावइहि परिक्खिवि परिवरिउ मुद्धि महग्घउ जिम रयणु ॥ ४ ॥
धणुहर धयवड धरिय सार सिंगार सुसज्जिय ।
सोहग्गिण गुरुगुडिय पंच वर पडिम निमज्जिय ।
तियउ अ तेअ अग्गलिय पिम्मपडिकारनिकत्तिय ।
रइरणरहसुचलिय गरुयमाणिण मइ अच्चिय ।
करि धडधड मुणिमहिवइहि रहिअ रूअ संपुन्नभय ।
जिणदत्तसूरिसीहह भयण मयणकरडिघड विहडि गय ॥ ५ ॥
तवनलफभासणह धम्मधोरिमसुविसालह ।

APPENDIX 1

श्रीवस्तुपालतीर्थयात्रावर्णनम्

अयं क्षुब्धक्षीरार्णवनवसुधासन्निभवचिता-
नुपाकर्ण्याकर्णानुपदमुपदेशानिति गुरोः ।
समस्तध्वस्तैना जनितजिनयात्रापरिकरो
ऽकरोत्सुस्थं प्रास्थानिकविधिमधीशो मतिमताम् ॥ १ ॥
श्लाघ्योऽतिसङ्घसहितः स हितः प्रजानां श्रीमानथ प्रथमतीर्थकृदेकचित्तः ।
सम्भाषणाद्भुतसुधाभवचाश्चचार वाचालवारिदपथो रथचक्रनादैः ॥ २ ॥
सान्द्रैरुपर्युपरिवाहपदाग्रजाग्रद्धूलीपटैस्तटिति कुट्टिमतामटद्भिः ।
मार्गे निरुद्धखरदीधितिधामसङ्घे सङ्घस्तदा भवनगर्भ इवाबभासे ॥ ३ ॥
नाभेयप्रभुभक्तिभासुरमनाः कीर्त्तिप्रभाशुभ्रिमा-
क्रान्ताः काशहृदाभिधेऽथ विदधे तीर्थे निवासानसौ ।
चक्रे चाक्रमना जिनार्चनविधिं तद्ब्रह्मचर्यव्रता-
रम्भस्तम्भितविष्टपत्रयजयश्रीधामकामस्मयः ॥ ४ ॥
पुष्टिभक्तिभरतुष्टया रयादम्बया हृततमःकदम्बया ।
एत्य हस्तपथमथ प्रतिश्रुतं सन्निधिं समधिगम्य सोऽचलत् ॥ ५ ॥
ग्रामे ग्रामे पुरि पुरि पुयरोत्तिभिर्मर्त्त्यमुख्यैः
पल्लसमावेशिकविधितता व्योम्नि पश्यन्पताकाः ।
मूर्त्ताः कीर्त्तीरगममनुत प्रौढनृत्यप्रपञ्च-
व्यापद्धेलाद्भुतभुजलतावर्णनीयाः स्वकीयाः ॥ ६ ॥
अप्यायास्य नमस्यकीर्त्तिविभवः श्रीसङ्घसंहस्तमः-
स्तोमादित्यमुपत्यकापरिसरे श्रीमल्लदेवानुजः ।
श्रीनाभेयजिनेशदर्शनसमुत्कण्ठोल्लसन्मानस-
स्तस्मान्मोहमथाम्रोह विमलक्षोणीधरं धीरधीः ॥ ७ ॥
तत्र स्नानमहोत्सवव्यसनिनं मार्कण्डचण्डद्युति-
क्रान्तं सङ्घजनं निरीक्ष्य निभृतं सान्द्राभ्रयन्मानसः ।
सद्यो मापदमन्दमेदुरतरश्यामनिधिः सुरर्धीः
मन्त्रीन्द्रः स्वयमिन्द्रमण्डपमयं प्रारम्भयामासिवान् ॥ ८ ॥

मन्त्री मौली किल जिनपतेश्चित्रचारित्रपात्रं
स्नानं कृत्वा कलशलुठितैः स्मेरकाश्मीरनीरैः ।
चक्रे चञ्चन्मृगमदमयालेपनस्वर्णभूषा-
वर्ण्यैः पूजाकुसुमवसनैस्तं स कल्पद्रुकल्पम् ॥ ९ ॥
मन्त्रीशेन जिनेश्वरस्य पुरतः कर्पूरपूरागुरु-
स्तोमप्रेङ्खितधूपधूमपटलैः सा कापि तेने मुदा ।
यावद्दण्डमहाध्वजप्रणयिनी स्वर्लोककल्लोलिनी
मिश्रेयं रविकन्यकेति वियति प्रत्यक्षमुत्प्रेक्ष्यते ॥ १० ॥
इत्थं तत्र विधाय निर्मलमनाः सन्मानदानक्रियां
सानन्दप्रमदाकुलां कुलनभोमाणिक्यमष्टाह्निकाम् ।
विम्बोन्मार्ष्टिकपर्दियक्षविहितप्रत्यक्षसान्निध्यतः
श्रद्धावर्धितसम्मदादुदतरन्मन्त्रीश्वरो भूधरात् ॥ ११ ॥
अजाहराख्ये नगरे च पार्श्वपादानजापालनृपालपूज्यान् ।
अभ्यर्चयद्घोघ पुरे च कोडीनारे स्फुरत्कीर्तिकदम्बमम्बाम् ॥ १२ ॥
देवपत्तनपुरे पुरन्दरस्तूयमानममृतांशुलाञ्छनम् ।
अर्चयन्मुषितचातुरीचितः कामनिर्मथननिर्मलद्युतिम् ॥ १३ ॥
श्रीनरलीलकविधिराय नयनैर्वामभ्रुवां वामन-
स्थल्यामेव मनोविनोदजननं धत्तसमवेशं पुरि ।
धीमान्निर्मलधर्मनिर्मितिमुल्लासेन विस्मापयन्
देवं रैवतकाधिरोहमकरोत्सङ्घेन सङ्घेश्वरम् ॥ १४ ॥ (विशेषकम्)
गजेन्द्रपदकुण्डस्य तत्र पीयूषहारिभिः ।
चकार मज्जनं मन्त्री वारिभिः पापहारिभिः ॥ १५ ॥
जिनमज्जनमत्रमज्जनं कलशान्यस्ततदम्बुकुङ्कुमम् ।
अथ सङ्घमवेक्ष्य सङ्कटे विदधे वासवमण्डपागमम् ॥ १६ ॥
संरम्भसङ्गिनिसङ्गजनौघदृष्टामष्टाह्निकामयमिहापि कृती वितेने ।
सद्भूतनाथनरभासुरचित्तवृत्तिसद्वृत्तकीर्तिचयचुम्बितदिक्कदम्बः ॥ १७ ॥
लुम्पन् रजो विजयसेनमुनीन्द्रपाणिवासप्रवासितकुवासनभासमानः ।
सत्यस्त्वरारम्भकृते जिननाथ नन्दिमानन्दमेदुरमयं रमयन्मनांसि ॥ १८ ॥
दानैरानन्द्य वन्दिव्रजमकृतनिवारमाहारदानं
मानी सम्मान्य साधूनपुषदपि मुखोद्घाटकर्मादिकानि ।

मन्त्री सत्कृत्य देवार्चनरचनपरानर्चयित्वापमुचै-
रम्बाप्रद्युम्नशाम्बानिति कृतसुकृतः पर्वतादुत्ततार ॥ १९ ॥
असाधि साधर्मिकमानदानैरनेन नानाविधधर्मकर्म ।
अवाधि सा धिषणेन माया निर्माय निर्मायमनः सुपूजाम् ॥२०॥
पुरः पुरः पूरयता पयांसि घनेन सान्निध्यकृता कृतीन्दुः ।
स्वर्कीर्त्तिवत्प्रस्यन्दर्दीददर्श ग्रीष्मेऽतिभीष्मेऽपि पदे पदेऽसौ ॥२१॥
इति प्रतिज्ञामिव नव्यकीर्त्तिप्रियः प्रयाणैरतिवाह्य वीथीम् ।
आनन्दनिस्पन्दविधिर्विधिज्ञः पुरं प्रपेदे धवलक्ककं सः ॥ २२ ॥
समं तेजःपालान्वितपुरजनैर्वीरधवल-
प्रभुः प्रत्युद्यातस्तदनु सदनं प्राप्य सुकृती ।
युतः सङ्घेनासौ जिनपतिमथोत्तार्य रथत-
स्ततः सङ्घस्यार्चामशनवसनाद्यैर्व्यरचयत् ॥ २३ ॥
अथ प्रसादाद्भूभर्तुः प्राप्य वैभवमद्भुतम् ।
मन्त्रीशः सफलीचक्रे स्वमनोरथपादपम् ॥ २४ ॥
भक्त्याखण्डलमण्डपं नयनवश्रीकेलिपर्यङ्किका-
वर्यं कारयति स्म विस्मयमयं मन्त्री स शत्रुञ्जये ।
यत्र स्तम्भनरैवतप्रभुजिनौ शाम्बाम्बिकालोकन-
प्रद्युम्नप्रभृतीनि किञ्च शिखराण्यारोपयामासिवान् ॥ २५ ॥
गुरुपूर्वजसम्बन्धिमित्रमूर्त्तिकदम्बकम् ।
तुरङ्गसङ्गतं मूर्त्तिद्वयं स्वस्यानुजस्य च ॥ २६ ॥
शातकुम्भमयान् कुम्भान्पञ्च तत्र न्यवेशयत् ।
पञ्चधा भोगसौख्यश्रीनिधानकलशानिव ॥ २७ ॥
सौवर्णं दण्डयुग्मं च प्रासादद्वितये न्यधात् ।
श्रीकीर्त्तिकन्दयोरुद्यन्नूतनाङ्कुरसोदरम् ॥ २८ ॥
कुन्देन्दुसुन्दरग्रावपावनं तोरणत्रयम् ।
इहैव श्रीसरस्वत्योः प्रवेशायेव निर्ममे ॥ २९ ॥
अर्कपालितकं ग्राममिह पूजाकृते कृती ।
श्रीवीरधवलक्ष्मापाद्दापयामास शासने ॥ ३० ॥
श्रीपालिताख्ये नगरे गरीयस्तरङ्गलीलादलितार्कतापम् ।
तडागमागःक्षयहेतुरेतचकार मन्त्री ललिताभिधानम् ॥ ३१ ॥

हर्षोत्कर्षं न केषां मधुरयति सुधासाधुमाधुर्यगर्जे-
त्तोयः सोऽयं तडागः पथि मथितमिलत्पान्थसन्तापपापः ।
साक्षादम्भोजदम्भोदितमुदितसुखं लोलरोलम्बशब्दै-
रब्देव्यो दुग्धमुग्धां त्रिजगति जगदुर्यत्र मन्त्रीशकीर्त्तिम् ॥ ३२ ॥
पृष्ठपत्रं च सौवर्णं श्रीयुगादिजिनेशितुः ।
स्वकीयतेजःसर्वस्वकोशन्यासमिवार्पयत् ॥ ३३ ॥
प्रासादे निदधे काम्यकाञ्चनं कलशत्रयम् ।
ज्ञानदर्शनचारित्रमहारत्ननिधानवत् ॥ ३४ ॥
किञ्चैतन्मन्दिरद्वारि तोरणं तत्र पोरणम् ।
शिलाभिर्विदधे ज्योत्स्नागर्वसर्वस्वदस्युभिः ॥ ३५ ॥
लोकैः पाञ्चालिकानृत्तसंरम्भस्तम्भितेक्षणैः ।
इहाभिनीयते दिव्यनाट्यप्रेक्षाक्षणः क्षणम् ॥ ३६ ॥
प्रासादः स्फुटमच्युतैकमहिमा श्रीनाभिसूनुप्रभो-
स्तस्याग्रस्थितिरेककुण्डलकुलां धत्तेतरां तोरणः ।
श्रीमन्त्रीश्वर वस्तुपाल कलयन्नोलाम्बरालम्बिता-
मत्युच्चैर्जगतोऽपि कौतुकमसौ नन्दी तवास्तु श्रिये ॥ ३७ ॥
अत्र पान्थिकलोकानां विशतां व्रजतामपि ।
सर्वथा सम्मुखैवास्ति लक्ष्मीरुपरिवर्त्तिनी ॥ ३८ ॥
यत्पूर्वैर्न निराकृतं सुकृतिभिः साम्मुख्यवैमुख्ययो-
र्यत्तं तन्मम वस्तुपालसचिवेनोन्मूलितं दुर्यशः ।
आशास्तेऽद्भुततोरणोभयमुखी लक्ष्मीस्तदस्मै मुदा
श्रीनाभेयविभुप्रसादवशतः साम्मुख्यमेवाऽधुना ॥ ३९ ॥
तस्यानुजश्च जगति प्रथितः पृथिव्यामव्याजपौरुषगुणप्रगुणीकृतश्रीः ।
श्रीतेजपाल इति पालयति क्षितीन्दुमुद्रां समुद्ररसनावधिगीतकीर्त्तिः ॥ ४० ॥
समुन्नत्वं स्थानेमह्रि महिमधाम्नोऽस्य बहुधा
यतो भीष्मग्रीष्मोपमविषमकालेप्यजनि यः ।
क्षमेन श्रीगायामितरजनदानोदकततौ
दयाद्वैताद्वैतात्रिगुणितगुणत्यागलहरिः ॥ ४१ ॥
यत्राऽपस्य पन्थास्तपस्विनां ग्रामशासनोद्धारात् ।
येनापर्नाय नयकरमनवकरः कारयाञ्चक्रे ॥ ४२ ॥

पुण्योल्लासविलासलालसधिया येनात्र शत्रुञ्जये
श्रीनन्दीश्वरतीर्थमर्पितजगत्पावित्र्यमासूत्रितम् ।
एतद्यानुपमासरः परिसरोद्देशे शिलासञ्चय-
व्यानद्धोद्धतबन्धसुन्दरपयःकल्लोललुप्तक्लमम् ॥ ४३ ॥
स्फुटस्फटिकदर्पणप्रतिमतामिदं गाहते
सुधाकृतसुधाकरच्छविपवित्रनीरं सरः ।
विकस्वरसरोरुहप्रकरलक्ष्यतो लक्ष्यते
यदत्र सरिदङ्गनावदनबिम्बताडम्बरः ॥ ४४ ॥
शत्रुञ्जये यः सरसीं निवेद्य श्रीरैवताद्रौ च जडाधराणाम् ।
ग्रामस्य दानेन करं निवार्य सङ्घस्य सन्तापमपाचकार ॥ ४५ ॥
क्षोणीपीठमियद्रजःकणमियत्पानीयबिन्दुः पतिः
सिन्धूनामियदङ्गुलं वियदियत्ताला च कालस्थितिः ।
इत्थं तथ्यमवैति यस्त्रिभुवने श्रीवस्तुपालस्य तां
धर्मस्थानपरम्परां गणयितुं शङ्के न सोऽपि क्षमः ॥ ४६ ॥
एतत्सुवर्णरचितं विश्वालङ्करणमनणुगुणरत्नम् ।
सङ्घाधीश्वरचरितं हृतदुरितं कुरुत हृदि संतः ॥ ४७ ॥
श्रीनागेन्द्रमुनीन्द्रगच्छतरणिः श्रीमान्महेन्द्रप्रभु-
र्जज्ञे क्षान्तिसुधानिधानकलशः पुण्याब्धिचन्द्रोदयः ।
सम्मोहोपनिपातकातरतरे विश्वेऽत्र तीर्थेशितुः
सिद्धान्तोऽप्यविभेद्यतर्कविषमं यं दुर्गमाशिश्रिये ॥ ४८ ॥
तत्सिंहासनपूर्वपर्वतशिरःप्राप्तोदयः कोऽप्यभू-
द्व्याख्यानस्तसमस्तदुस्तमतमाः श्रीशान्तिसूरिप्रभुः ।
प्रत्युज्जीवितदर्शनद्युतिलसज्ज्योत्स्नौघपद्माकरं
तेजश्छन्नदिगम्बरं विजयते तपस्य लोकोत्तरम् ॥ ४९ ॥
आनन्दसूरिरिति तस्य बभूव शिष्यः
पूर्वापरः शमधनोऽमरचन्द्रसूरिः ।
धर्मद्विपस्य दशनाविव पापवृक्ष-
क्षोदक्षमौ जगति यौ विशदौ विभातः ॥ ५० ॥
अस्ताघवाश्वपयोनिधिमन्दराद्रि-
मुद्रागुरोः किमनयोः स्तुमहे महिम्नः ।

बाल्येऽपि निर्दलितवादिगजौ जगाद
यौ व्याघ्रसिंहशिशुकाविति सिद्धराजः ॥ ५१ ॥
सिद्धान्तोपनिषन्निषण्णहृदयो धीजन्मसूस्तत्पदे
पूज्यः श्रीहरिभद्रसूरिरभवच्चारित्रिणामग्रणीः ।
भ्रान्त्वा शून्यमनाश्रयैरिव चिरायस्मिन्नवस्थानतः
सन्तुष्टैः कलिकालगौतम इति ख्यातिर्वितेने गुणैः ॥ ५२ ॥
श्रीविजयसेनसूरिस्तत्पट्टे जयति जलधरध्वानः ।
यस्य गिरो धारा इव भवदवभवदवथुविभवभिदः ॥ ५३ ॥
पञ्चासराह्वनराजविहारतीर्थे
प्रालेयभूमिधरभूतिधुरन्धरेऽस्मिन् ।
साक्षादधःकृतभवा तटिनीव यस्य
व्याख्येयमच्युतगुरुक्रमजा विभाति ॥ ५४ ॥
भवोद्भूटवनावनीविकटकर्मवंशावलि-
च्छिदोच्छलितमौक्तिकप्रतिमकीर्तिकर्णाम्बरम् ।
असिश्रियमशिश्रियश्रितभीव्रतं यद्व्रतं
क्षितौ विजयतामयं विजयसेनसूरिर्गुरुः ॥ ५५ ॥
शिष्यं तस्य यशस्यमशमगुणनिधिं रम्यदारण्यदाव-
ज्वालाजिह्वालदीप्तिर्भविकजनविपद्दह्विवार्दः कपर्दी ।
देवी चाम्बा निशीथे समसमयमुपागत्य हर्षाश्रुवर्षा-
मेयश्रेयःसुभिक्षाविति निजगदतुर्गद्गदोद्दाममनादम् ॥ ५६ ॥
नाभूवन्कति नाम सन्ति कति नो नो वा भविष्यन्ति के
किं न क्वापि कदापि सत्पुरुषः श्रीवस्तुपालोपमः ।
यत्रेत्थं मदरम्रहर्निशमहो सर्वाभिसारोद्धुरो
येनायं विजितः कलिर्विदधता तीर्थेशयात्रोत्सवम् ॥ ५७ ॥
तस्मादस्य यशस्विनः सुचरितं श्रीवस्तुपालस्य य-
द्याचास्माकममोघया किल यथाध्यक्षीकृतं सर्वथा ।
त्वं श्रीमद्दृदयम्म प्रथय तत् पीयूषसर्वङ्कषैः
श्लोकैस्तव भारती समभव......यते ॥ ५८ ॥
इत्युक्त्वा गतयोस्तयोरथ पयो दृष्टः प्रभातक्षणे
विज्ञाप्य स्वगुरोः पुरः सविनयं नम्रीभवन्मौलिना ।

प्राप्यादेशममुं प्रभोर्विरचयामासे समासेतुषा
प्रागल्भीमुदयप्रभेण चरितं निस्यन्दरूपं गिराम् ॥ ५९ ॥
किंच श्रीमलधारिगच्छजलधिप्रोल्लासशीतद्युते-
स्तस्य श्रीनरचन्द्रसूरिसुगुरोर्माहात्म्यमाशास्महे ।
यत्पाणिस्मितपद्मवासविकसत्किञ्जल्कसंवासिताः
सन्तः सन्ततमाश्रिताः किल मया भृङ्गैरिव भान्ति क्षितौ ॥ ६० ॥
श्रीधर्माभ्युदयाह्वयेऽत्र चरिते श्रीसङ्घभर्तुर्मया
दध्रे काव्यदलानि सङ्घटयितुं कर्मान्तिकत्वं परम् ।
किन्तु श्रीनरचन्द्रसूरिभिरिदं संशोध्य चक्रे जग-
त्पावित्र्यक्षमपादपङ्कजरजःपुञ्जैः प्रतिष्ठास्पदम् ॥ ६१ ॥
नित्यं व्योमनि नीलनीरजरुचौ यावत्त्विषामीश्वरो
दिक्पालावलिबन्धुरे कुवलये यावच्च हेमाचलः ।
हस्तन्यस्तविदुषामिदं सुचरितं तावत्तवाविर्भव-
त्सौरभ्यप्रसरं चिरं कलयतात् किञ्जल्कलक्ष्मीपदम् ॥ ६२ ॥

इति श्रीविजयसेनसूरिशिष्यश्रीमदुदयप्रभसूरिविरचिते श्रीधर्माभ्युदयनाम्नि श्रीसङ्घपतिचरिते लक्ष्यङ्के महाकाव्ये श्रीवस्तुपालतीर्थयात्रोत्सववर्णनो नाम पञ्चदशः सर्गः ।

मुक्तेर्मार्गे यदेतद्विरचितमुचितं सङ्घभर्तुश्चरित्रं
सत्रं पावित्र्यपात्रं पथिकजनमनःखेदविच्छेदहेतुः ।
अस्मिन्सौरभ्यगर्भामसमरसवतीं सत्कथां पान्थसार्थाः
प्राप्य श्रीवस्तुपाल प्रवरनवरसास्वादमास्वादयन्ति ॥ १ ॥
श्रीशारदैकसदनं हृदयालवः के नो सन्ति हन्त सकलासु कलासु निष्णाः ।
तादृक्परस्य ददृशे सुकवित्वतत्त्वबोधाय बुद्धिविभवस्तु न वस्तुपालात् ॥ २ ॥
नैव व्यापारिणः के विदधति करणग्राममात्मैकवश्यं
लेभे सद्योगसिद्धेः फलममलमलं केवलं वस्तुपालः ।
आकल्पस्थायि धर्माभ्युदयनवमहाकाव्यनाम्ना यदीयं
विश्वस्यानन्दलक्ष्मीमिति दिशति यशोधर्मरूपं शरीरम् ॥ ३ ॥

APPENDIX II.

रेवयकप्पसंखेवो

सिरिनेमिजिणं सिरसा नमिउं रेवयगिरीसकप्पंमि।
सिरिवइरसेणसभणिअं जहा य पालित्ताएणं च ॥ १ ॥

उज्जलिन्तगिरिसमीवे सिलासणे दिक्खं पडिवन्नो नेमी, सहसंबवणे केवलनाणं, लक्खारामे देसणा, अवलोअणं उच्चसिहरे निव्वाणं। रेवयमेहलाए कण्हेण [illegible] कल्लाणतिगं काऊण सुवण्णरयणपडिमालंकिअं चेइअतिगं अंबिका[illegible] [illegible] कारेइ। इंदो वि वज्जेण गिरिं कोरेऊण सुवण्णरयण[illegible] [illegible] चेइअं रयणमया पडिमा पमाणवण्णोववेया, सिहरे अंबा रंगमंडवे [illegible] [illegible] संबो पज्जुन्नो पयाई कारेइ। सिद्धविणायगो पडिहारो [illegible] निर्वाणस्थानं ज्ञात्वा निर्वाणादनन्तरं कण्हेण [illegible] [illegible]। तस्स नाम [illegible] कालमेह १ मेहनाद २ गिरि[illegible] [illegible] ३ कपाड ४ सिहनाद ५ खोडिक ६ रेवया ७ तित्थरक्खणे [illegible] [illegible]। तत्थ य मेहनादो सम्मदिट्ठी नेमिपयभत्तिजुत्तो [illegible] [illegible] पंच उद्धारा निउत्तिआ। तत्थेव अंबा[illegible] [illegible] गुहा। तत्थ य उप्पयासनिग्गं बलिदाण[illegible] [illegible] सिरिनेमिनाहपडिमा। तत्थ य [illegible] [illegible] नमिऊण, उत्तरदिसाए [illegible] [illegible] गंतूण, गोदोहिआसणेण पडिमं [illegible] [illegible] उग्घाडिऊणं, कम्मसणाओ [illegible] [illegible] इंदासणेण [illegible] अंबाइ [illegible] [illegible]। तओ सिरिमूलनाहो नेमिजिणिंदो [illegible] [illegible] पुरओ, सम्मदिट्ठीए भत्ती [illegible] [illegible] [illegible]। तत्थ [illegible] [illegible] [illegible] तेण न अयइ। [illegible] [illegible]। तत्थ य [illegible] विवरं। तत्थ य [illegible] [illegible] संपुडसत्तगं [illegible] [illegible]। तत्थ य [illegible]

अंबाएसेण पूयणेण पत्थिविहाणेणं गिण्हियव्वं । तहा य जुण्णदुग्गे उववास-तिगं काऊण सरलमग्गेण पडिपूरणेणं सिद्धविणायगो उवलब्भइ । तत्थ य ष्पिनिभसिद्धा दिव्वभेअं ठाणयव्वं । जइ तहा पच्चओ हवइ तहा रायमईगुहाए मसरणं गोदोहिआए रसकूविआ कन्हचित्तयवल्ली राइमईए पडिमा रयणमया अंबाए रुप्पमयाओ अणेगाओ सुहीओ अ चिट्ठंति । तह छत्तसिलायं-दसिलकोडिविसालसिलं पण्णत्तं । छत्तसिलं मज्झं मज्झेणं कणयवल्ली सहस्संव-णमज्झे रययसुवण्णमयचउवीसं लक्खारामे बावत्तरीचउवीसजिणाण गुहा प-ण्णत्ता । कालमेहस्स पुरओ सुवण्णवालुआए नईए सहकमसगतिगेण उत्तरदि-साए गमित्ता गिरिगुहं पविसिऊण उदए पहवणं काऊण, तिए उववासपओगेहिं दुवारमुग्घाडेइ । मज्झे पढमदुवारे सुवण्णखाणी, बीअदुवारे रयणखाणी, संनिहं अंबाए विउव्विआ । तत्थ पण कण्हभंडारो । अण्णो दामोदरसमीवे । अंजणसिलाए अहोभागे रययसुवण्णधूली पुरिससवीसेहिं पण्णत्ता ।

नसरत्थमणे मंगलगईयदालीए संतु रससिद्धी ।
गिरियइरोयसायं संघसमुद्धरणकज्जंमि ॥
सत्तवदाहं मज्झे गिण्हित्ता कोडिविंदुसंपोगे ।
चंदसिलाचुण्णसजोयणाओ अंजणसिद्धी ।
पिआपादुहेसाओ रेवयकप्पसंखेवो सम्मत्तो ॥

APPENDIX III.

श्रीउज्जयन्तस्तवः

नामभिः श्रीरैवतकोज्जयन्ताद्यैः प्रथामितम् ।
श्रीनेमिपावितं स्तौमि गिरिनारं गिरीश्वरम् ॥ १ ॥
स्थाने देशः सुराष्ट्राख्यां बिभर्ति भुवनेष्वसौ ।
यद्भूमिकामिनीभाले गिरिरेष विशेषकः ॥ २ ॥
शृङ्गारयन्ति खङ्गारदुर्गं श्रीऋषभादयः ।
श्रीपार्श्वस्तेजलपुरं भूषितैतदुपत्यकम् ॥ ३ ॥
योजनद्वयतुङ्गेऽस्य शृङ्गे जिनगृहावलिः ।
पुण्यराशिरिवाभाति शरच्चन्द्रांशुनिर्मला ॥ ४ ॥
सौवर्णदण्डकलशामलसारकशोभितम् ।
चारु चैत्यं चकास्त्यस्योपरि श्रीनेमिनः प्रभोः ॥ ५ ॥
श्रीशिवासूनुदेवस्य पादुकाऽत्र निरीक्षिता ।
स्पृष्टाऽर्चिता च शिष्टानां पापव्यूहं व्यपोहति ॥ ६ ॥
प्राज्यं राज्यं परित्यज्य जरत्तृणमिव प्रभुः ।
बन्धूनिवधूय च स्निग्धान् प्रपेदेऽत्र महाव्रतम् ॥ ७ ॥
अत्रैव केवलं देवः स एव प्रतिलब्धवान् ।
जगज्जनहितैषी स पर्यणैषीच निर्वृतिम् ॥ ८ ॥
अत एवात्र कल्याणत्रयमन्दिरमादधे ।
श्रीवस्तुपालो मन्त्रीशश्चमत्कारितभव्यहृत् ॥ ९ ॥
जिनेन्द्रबिम्बपूर्णेन्द्रमण्डपस्था जना इह ।
श्रीनेमेर्मज्जनं कर्तुमिन्द्रा इव चकासति ॥ १० ॥
गजेन्द्रपदनामास्य कुण्डं मण्डयते शिरः ।
सुधाविधैर्जलैः पूर्णं स्नानार्हत्स्नपनक्षमैः ॥ ११ ॥
शत्रुञ्जयावतारेऽत्र वस्तुपालेन कारिते ।
ऋषभः पुण्डरीकोऽष्टापदो नन्दीश्वरस्तथा ॥ १२ ॥
सिंहयाना हेमवर्णा सिद्धबुद्धसुतान्विता ।
कूष्माण्डाम्रलुम्बिभृत्पाणिरत्राम्बा सङ्घविघ्नहृत् ॥ १३ ॥

श्रीनेमिपत्पद्मपूतमवलोकननामकम् ।
विलोकयन्तः शिखरं यान्ति भव्याः कृतार्थताम् ॥ १४ ॥
शाम्बो जाम्बवतीजातस्तुङ्गे शृङ्गेऽस्य कृष्णजः ।
प्रद्युम्नश्च महाद्युम्नस्तेपाते दुस्तपं तपः ॥ १५ ॥
नानाविधौषधिगणा जाज्वलन्त्यत्र रात्रिषु ।
किञ्च घण्टाक्षरच्छत्रशिलाः शालन्त उच्चकैः ॥ १६ ॥
सहस्राम्रवणं लक्षारामोऽन्येपि वनव्रजाः ।
मयूरकोकिलाभृङ्गीसङ्गीतिसुभगा इह ॥ १७ ॥
न स वृक्षो न सा वल्ली न तत्पुष्पं न तत्फलम् ।
नेक्ष्यतेऽत्राभियुक्तैर्यदित्यैतिह्यविदो विदुः ॥ १८ ॥
राजीमती गुहागर्भे यैर्न नामात्र वन्यते ।
रथनेमिर्यथोन्मार्गात्सन्मार्गमवतारितः ॥ १९ ॥
पूजास्नपनदानानि तपश्चात्र कृतानि यैः ।
सम्पद्यन्ते मोक्षसौख्यहेतवो भव्यजन्मिनाम् ॥ २० ॥
दिग्भ्रमावपि योऽत्रात्री काप्यमार्गेऽपि सञ्चरन् ।
सोऽपि पश्यति चैत्यस्था जिनार्चाः स्नपितार्चिताः ॥ २१ ॥
काश्मीरागतरत्नेन कूष्माण्ड्यादेशतोऽत्र च ।
लेप्यबिम्बास्पदे न्यस्ता श्रीनेमेर्मूर्त्तिराश्मनी ॥ २२ ॥
नदीनिर्झरकुण्डानां खनीनां वीरुधामपि ।
विद्याङ्करोत्यत्र सङ्ख्याः सङ्ख्यावानपि कः खलु ॥ २३ ॥
आसेचनकरूपाय महातीर्थाय तायिने ।
चैत्यालङ्कृतशीर्षाय नमः श्रीरैवताद्रये ॥ २४ ॥
स्तुतो मयेति सूरीन्द्रवर्णिताप्रजिनप्रभः ।
गिरिनारस्तारहेमसिद्धिभूमिर्मुदेऽस्तु वः ॥ २५ ॥

इति श्रीउज्जयन्तस्तवः ॥

APPENDIX VI.

श्रीउज्जयन्तमहातीर्थकल्पः

अत्थि सुरट्ठाविसए उज्जितो नाम पव्वओ रम्मो ।
तस्सिहरे आरुहिउं भत्तीए नमह नेमिजिणं ॥ १ ॥
अंबाइअं च देविं ण्हवणच्चणगंधधूवदीवेहिं ।
पूइयकयप्पणामा ता जोअह जेण अत्थत्थी ॥ २ ॥
गिरिसिहरं कुहरकंदरनिज्झरणकवाडविअडकूवेहिं ।
जोएह सत्तवायं जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ ३ ॥
कंदप्पदप्पकप्परणकुणइयविहवणनेमिनाहस्स ।
निव्वाणसिला नामेण अत्थि भुवणंमि विक्खाया ॥ ४ ॥
तस्स य उत्तरपासे दसधणुहेहिं अहोमुहं विवरं ।
दारंमि तस्स लिंगं अवयाणे धणुह चत्तारि ॥ ५ ॥
तत्थ पसुमुत्तगंधो अत्थि रसोपलसएण सयतंवं ।
विंधेहि कुणइ तारं ससिकुंदसमुज्जलं सहसा ॥ ६ ॥
पुव्वदिसाए धणुहंतरेसु तस्सेव अत्थि जागवई ।
पाहाणमया दाहिणदिसागए बारसधणूहिं ॥ ७ ॥
दिस्सइ अ तत्थ पयडो हिंगुलवण्णो अ दिव्वपयरसो ।
विंधइ सव्वलोहे फरिसेणं अग्गिसंगेणं ॥ ८ ॥
उज्जिंते अत्थि नई विहला नामेण पव्वई पडिमा ।
दावेइ अंगुलीए फरिसरसो पव्वईदारं ॥ ९ ॥
मज्झयगारं उज्जिंतगिरिवरे तस्स उत्तरे पासे ।
सोवाणपंतिआए पारेवयवण्णिया पुढवी ॥ १० ॥
ईसगव्वंण बद्धा सिद्धीयमिआ करेइ वरतारं ।
छिंदइ दारिद्दाइं उत्तारइ दुक्खकंतारं ॥ ११ ॥
सिहरे विसालसिंगे दीसंते पायकुट्टिमा जत्थ ।
तस्समज्झे सिहरं कव्वरहत्थपमाणं तारं ॥ १२ ॥
उज्जिंतसिहरवत्थे तत्थ य सुहरवानरो अत्थि ।
सो वानरसाहिज्जो उग्घाडइ विवरवरदारं ॥ १३ ॥
इन्दमहण्ण वसिहो दिस्सइ सोवण्णवण्णिआ पुढवी ।

मीलररसेण सवंता सहस्सवेही रसो नूणं ॥ १४ ॥
तं गहिऊण निअत्तो हणुवंतं छिवइ वामपाएण ।
सो रक्खइ घरदारं जेण न जाणइ जणो को वि ॥ १५ ॥
उज्जितसिहरउवरिं कोहंडिहरं खु नाम विक्खायं ।
अवरेण तस्स य सिला तदुभयपासेसु ओसं तु ॥ १६ ॥
तं अग्गसित्तिहुमोसं थंभइ पडियायवंगिअं वंगं ।
दोगच्चवाहिहरणं परितुट्ठा अंबिआ जस्स ॥ १७ ॥
वेगवई नाम नई मणसिलवण्णाइ तत्थ पाहाणा ।
तो पिंडि धमिअ संते समतुल्ले होइ वरतारं ॥ १८ ॥
उज्जंते नाणसिला तस्स अहो कणयवण्णिआ पुढवी ।
थोकडपसुत्तपिंडी म्बइरंगारे भवे हेमं ॥ १९ ॥
नाणसिलाकयपुढवी पिंडीवद्धा य पंचगव्वेण ।
एढपाए धमइ रसो सहस्सवेही हवइ हेमं ॥ २० ॥
गिरिवरमासमठिअं आणोपं तिलयविसारणं नाम ।
सिलवक्कगाढपीढे वे लक्खा तत्थ दम्माणं ॥ २१ ॥
सेणा नामेण नई सुवण्णतित्थंमि लट्ठुअपहाणा ।
पढिवाएण य सुवं करिंति हेमं न संदेहो ॥ २२ ॥
विल्लुक्कपंमि नयरे मउहहरं अत्थि सेलगं दिव्वं ।
तस्स य मज्झंमि ठिओ गणवइरसकुंडओ उवरिं ॥ २३ ॥
उववासी कयपूओ गणवइओ घल्लिऊण पवररसो ।
पामापेवी अत्थि अ थंभइ वंगं न संदेहो ॥ २४ ॥
सहसासवं ति तित्थं करंजकक्केण मणहरं सम्मं ।
तत्थ य तुरयायारा पाहाणा तेसि दो भाया ॥ २५ ॥
इक्को पारयभाओ पिट्ठो सुत्तेण अंधमूसाए ।
धमिओ करेइ तारं उत्तारइ दुक्खकंतारं ॥ २६ ॥
अवलोअणसिहरसिला अवरेणं तत्थ वररसो सवइ ।
सुअपक्खसरिसवण्णो करेइ सुवं वरं हेमं ॥ २७ ॥
गिरिपज्जुन्नवयारे अंबिअआसमपयं च नामेण ।
तत्थ वि पीआ पुढवी हिमवाए होइ वरहेमं ॥ २८ ॥
नाणसिला उज्जिते तस्स य मूलंमि मट्टिआ पीआ।

साहामिअलेवेणं छायासुक्कं कुणइ हेमं ॥ २९ ॥
उज्जितपढमसिहरे आरूहिउं दाहिणेण अवयरिउं ।
तिण्णि धणूसयमित्ते पूईकरं जं विलं नाम ॥ ३० ॥
उग्घाडिउं विलं दिक्खिऊण निउणेण तत्थ गंतव्वं ।
दंडंतराणि वारस दिव्वरसो जंबुफलसरिसो ॥ ३१ ॥
तउ घोलिअंमि भंडे सहस्सभाएण विंधए तारं ।
हेमं करइ अवस्सं हट्टं तं सुंदरं सहसा ॥ ३२ ॥
कोहंडिभवणपुव्वेण उत्तरे जाव तावसा भूमी ।
दीसइ अ तत्थ पडिमा सेलमया वासुदेवस्स ॥ ३३ ॥
तस्सुत्तरेण दीसइ हत्थेसु अ दससु पव्वई पडिमा ।
अवरा हमुहरअंगुट्ठिआइ सा दावए विवरं ॥ ३४ ॥
नवधणुहाइं पविट्ठो दिसइ कुडाइं दाहिणुत्तरओ ।
हरिआलसरिसवण्णो सहस्सवेही रसो नूणं ॥ ३५ ॥
उज्जिंते नाणसिला विक्खाया तत्थ अत्थि पाहाणं ।
ताणं उत्तरपासे दाहिणय अहोमुहो विवरो ॥ ३६ ॥
तस्स य दाहिणभाए दसधणुभूमीइ हिंगुलुयवण्णो ।
अत्थि रसो सयवेही विंधइ सुयं न संदेहो ॥ ३७ ॥
उज्जिंतसिहरकूडे पाहाणा ताण संगमो अत्थि ।
गयवरलिंडागिण्णा मज्झे फरिसेण ते वेही ॥ ३८ ॥
जिणभवणदाहिणेणं नउई धणुहेहिं भूमिजलुअयरी ।
निरिमणुअरत्तविक्खा पविवाए तंबए हेमं ॥ ३९ ॥
वेगवई नाम नई मणसिलवण्णा य तत्थ पाहाणा ।
सुयस्स पंचवंके सवंति धमिआ तयं सिग्घं ॥ ४० ॥
इय उज्जयंतकप्पं अविअप्पं जो करेइ जिणभत्तो ।
कोहंडिकयपणामो सो पावइ इच्छिअं सुक्खं ॥ ४१ ॥

श्रीउज्जयंतमहातीर्थकल्पः

APPENDIX V

रैवतकल्पः

पच्छिमदिसाए सुरट्ठाविसए रेवयपव्वयरायसिहरे सिरिनेमिनाहस्स भवणं उत्तुंगसिहरं अच्छइ। तत्थ किर पुव्विं भययओ नेमिनाहस्स लिप्पमई पडिमा आसि। अन्नया उत्तरदिसाविभूसणकम्हीरदेसाओ अजियरयणनामाणो दुन्नि बंधवा संघाहिवई होऊण गिरिनारमागया। तेहिं रहसवसाओ घणघुसिणरससंपूरिअकलसेहिं ण्हवणं कयं। गलिआ लेवमई सिरिनेमिनाहपडिमा। तओ अईव अप्पाणं सोअंतेहिं तेहिं आहारो पच्चक्खाओ। इक्कवीसउववासाणंतरं सयमागया भगवई अंबिआ देवी। उट्ठाविओ संघवई। तेण देविं दट्ठूण जयजयसद्दो कओ। तओ भणिअं देवीए इमं विंबं गिण्हिसु परं पच्छा न पिच्छिअव्वं। तओ अजिअसंघाहिवइणा एगतंतुकड्ढिअं रयणमयं सिरिनेमिबिंबं कंचणवलाणए नीअं। पढमभवणस्स देहलीए आरोवित्ता अइहरिसभरनिब्भरेणं संघवइणा पच्छाभागो दिट्ठो। ठिअं तत्थेव बिंबं निचलं। देवीए कुसुमवुट्ठी कया जयजयसद्दो अ कओ। एअं च बिंबं वइसाहपुन्निमाए अहिणवकारिअभवणे पच्छिमदिसामुहं ठविअं संघवइणा। न्हवणाइमहूसवं काउं अजिओ सबंधवो निअदेसं पत्तो। कलिकाले कलुसचित्तं जणं जाणिऊण झलहलंतमणिमयबिंबस्स कंती अंबिआदेवीए छाइआ। पुव्विं गुज्जरधराए जयसिंहदेवेणं खंगाररायं हणित्ता सज्जणो दंडाहिवो ठाविओ। तेण य अहिणवं नेमिजिणंदभवणं एगारससयपंचासीए विक्कमरायवच्छरे काराविअं। मालवदेसमुहमंडणेणं साहुभावडेणं सोवण्णं आमलसारं कारिअं। चालुक्कचक्किसिरिकुमारपालनरिंदसंठविअसोरट्ठदंडाहिवेण सिरिसिरिमालकुलुब्भवेण बारससयवीसे विक्कमसंवच्छरे पज्जा काराविआ। तब्भाउणा धवलेण अंतराले पवा भराविआ। पज्जाए चडंतेहिं जणेहिं दाहिणदिसाए लक्खारामो दीसइ। अणहिल्लवाडयपट्टणे य पोरवाडकुलमंडणा आसरायकुमरदेवितणया गुज्जरधराहिवइसिरिवीरधवलरज्जधुरंधरा वत्थुपालतेजपालनामधिज्जा दो भायरो मंतिवरा हुत्था। तत्थ तेजपालमंतिणा गिरनारतले निअनामंकिअं तेजलपुरं पवरगढमढपवामंदिरआरामरम्मं निम्माविअं। तत्थ य जणयनामंकिअं आसरायविहारु त्ति पासनाहभवणं काराविअं। जणणीनामेणं च कुमरसरु त्ति सरोवरं निम्माविअं। तेजलपुरस्स पुव्वदिसाए उग्गसेणगढं

नाम दुग्गं जुगाइनाहप्पमुहजिणमंदिरेहिं विज्जइ । तस्स य तिण्णि नामधिज्जाइं पसिद्धाइं । तं जहा उग्गसेणगढं ति वा खंगारगढं ति वा जुण्णदुग्गं ति वा । गढस्स बाहिं दाहिणदिसाए चउरिआवेईलट्ठुअओवरिआपसुवाडयाइठाणाइं चिट्ठंति । उत्तरदिसाए विसालथंभसालासोहिओ दसदसारमंडवो । गिरिदुवारे य पंचमो हरी दामोअरो सुवण्णरेहानईपारे वट्टइ । कालमेहसमीवे थिराणुयत्ता संघस्स थोलाविआ । तेजपालमंतिणा मिल्हाविआ । कमेण उज्जयंतसेले वत्थुपालमंतिणा सित्तुज्जावयारभवणं अट्ठावयसंमेअमंडवो कवड्डिजक्खमरुदेविपासाया य कराविआ । तेजपालमंतिणा कल्लाणत्तयचेइअं, इंदमंडवो अ देपालमंतिणा उद्धाराविओ । एरावणगयपयमुद्दाअलंकिअं गइंदपयकुंडं अच्छइ । तत्थ अंगं पक्खालित्ता दुक्खाण जलंजलिं दिंति जत्तागयलोआ । छत्तसिलाकडणीए सहस्संबवणारामो, जत्थ भगवओ जायवकुलपईवस्स सिवासमुद्दविजयनंदणस्स दिक्खानाणनिव्वाणकल्लाणयाइं संजाआइं । गिरिसिहरे चडित्ता अंबिआदेवीए भवणं दीसइ । तत्तो अवलोअणं सिहरं । तत्थ ट्ठिएहिं किर दसदिसाओ नेमिसामी अवलोइज्जंति । तओ पढमसिहरं संबकुमारो बीअसिहरे पज्जुण्णो । इत्थ पव्वए ठाणे ठाणे चेइएसु रयणसुवण्णमयजिणबिंबाइं निचव्हविअच्चिआइं दीसंति । सुवण्णमेयणी अ अणेगधाउरसमेइणी दिप्पंती दीसइ । रत्तिं च दीवउव्व पज्जलंतीओ ओसहीओ अवलोइज्जंति । नाणाविहतरुवरवल्लिदलपुप्फफलाइं पए पए उवलब्भंति । अणवरयपवहंतनिज्झरणाणं ज्ञलज्झलारावा य मत्तकोयलभमरझंकारा य सुव्वंति त्ति ।

उज्जयंतमहातित्थकप्पसेसलवो इमो ।
जिणप्पहमुणिंदेहिं लिहिओत्थ जहासुअं ॥

श्रीरैवतकल्पः समाप्तः

APPENDIX VI

अम्बिकादेवीकल्पः

सिरिउज्जयंतसिहरसेहरं पणमिऊण नेमिजिणं।
कोहंडिदेविकप्पं लिहामि वुड्ढोवएसाओ॥

अत्थि सुरट्ठाविसये धणकणयसंपयजणसमिद्धं कोडीनारं नाम नयरं। तत्थ सोमो नाम रिद्धिसमिद्धो छक्कम्मपरायणो वेयागमपारगामी बंभणो हुत्था। तस्स घरिणी अंबिणी नाम महग्घसीलालंकारभूसियसरीरा आसि। तेसिं विसयसुहमणुहवंताणं उप्पन्ना दुवे पुत्ता पढमो सिद्धो बीओ बुद्धु त्ति। अन्नया समागए पिअरपक्खे भट्टसोमेणं निमंतिआ बंभणा सद्धदिणे। कत्थ वि ते वेयमुच्चारन्ति, कत्थ वि आढवन्ति पिण्डपयाणं, कत्थ वि होमं करिंति वइसदेवं च। सम्पाडिआ सालिदालिवंजणपक्कन्नखीरखण्डपमुहा जेमणया। अंबिणीए अ सासुआ ण्हाणं काउं पयट्टा। तम्मि अवसरे एगो साहू मासोववास-पारणए भिक्खट्ठा संपत्तो। तं पलोइत्ता हरिसभरनिब्भरपुलइअंगी उट्ठिआ अंबिणी। पडिलाभिओ तीए मुणिवरो भत्तिबहुमाणपुव्वं आहारविसेसेहिं भत्त-पाणेहिं। जाव गहिअभिक्खो साहू चलिओ ताव सासुआ वि ण्हाऊण रसवई-ठाणमागया। न पिच्छइ पढमसिहं। तओ तीए पुच्छिआए वुत्तं बहुआ। तीए जहट्ठिए वुत्ते अंबाडिआ सा अज्जूए। जहा पावे किं तए कयं, अज्ज वि देवया न पूइआ अज्ज वि न भुंजाविआ विप्पा अज्ज वि न भरिआइं पिंडाइं अग्गसिहा तए किमत्थं साहुणो दिन्ना। तओ तीए भणिओ सव्वो वि वइयरो सोमभट्टस्स। तेण संरुट्ठेण अप्पच्छंदिअ त्ति निक्कासिआ गिहाओ। सा परिभवदूमिआ सिद्धं करंगुलीए धरित्ता बुद्धं च कडीए चलिआ नयराओ बाहिं। पंथे पिवासाभिभूएहिं दारएहिं जलं मग्गिआ। जाव सा अंसुजलपुण्णलोअणा संवुत्ता ताव पुरओ ठिअं सुक्कसरोवरं तीसे अमोहसीलमाहप्पेणं तक्खणं जलपूरिअं जायं। पाइआ दो वि सीअलं नीरं। तओ छुहिएहिं भोअणं मग्गिआ बालएहिं। पुरओ सुक्कसहयारतरू तक्खणेण फलिओ। दिन्नाइं फलाइं अंबिणीए तेसिं जाया ते सुत्था। जाव सा चूअच्छायाए वीसमइ ताव जं जायं तं निसामेह जं तीए बालाई पढमं जेमाविआ तेसिं पुरओ पत्तलीओ तीए बाहिं उज्झिआओ आसि ताओ सीलमाहप्पावज्जिअसासणदेवयाए सोवण्णथालरूवाओ कयाओ। जे अ उच्छिट्ठसित्थकण भूमीए पडिआ ते मुत्तिआइं संपाडिआइं। अन्नन्निता य निहरंसु चइ

दंसिआ । एअमवत्थुअं सासुए दट्ठूण निवेईअं सोमविप्पस्स सिद्धं च जहा वच्छ सुलरूणा पइव्वया य एसा बहू ता पयाणेहिं एअं कुलहरं ति जणणीपेरिओ पच्छापावानलडज्झंतमाणसो गओ बहुयं वालेउं सोमभट्टो। तीए पिउ भो आगच्छन्तं दिअवरं निअवरं दट्ठूण दिसाओ पलोईआओ । दिट्ठओ अग्गओ भग्गकूवओ। तओ जिणवरं मणे अणुसरिऊण सुपत्तदाणं अणुमोअंतीए अप्पा कूवंमि झंपाविओ। सुहज्झवसाणेण पाणे चइऊण उप्पन्ना कोहंडविमाणे सोहम्मकप्पट्ठिइ चउहिं जोअणेहिं अंबीअदेवी नाम महड्ढिआ देवी। विमाणनामेनं कोहंडी वि भन्नइ । सोमभट्टेण वि तीसे महासईए कूवे पडणं दट्ठुं अप्पा तत्थेव झंपाविओ। सो अ मरिऊण तत्थेव जाओ देवो। आभिओगिअकम्मुणा सिहरूवं विउव्विता तीए चेव वाहणं जाओ । अन्ने भणंति अंबिणी रेवयगिहराओ अप्पाणं झंपाविता नट्ठिउओ सोमभट्टो वि तहेव मओ । सेसं तं चेव । सा य भगवई चउब्भुआ दाहिणहत्थेसु अंबलुंबिं पासं च धारेइ वामहत्थेसु पुण पुत्तं अंकुसं च धारेइ उत्ततकणगसवण्णं च वण्णमुव्वहइ सरीरे। सिरिनेमिनाहस्स सासणदेवया त्ति निवसइ रेवइगिरिसिहरे। मउडकुंडलमुत्ताहलहाररयणकंकणनेउराइसव्वंगीणाभरणरमणिज्जा पूरेइ सम्मदिट्ठीण मणोरहे निवारेइ विग्घसंघाए। तीए मंतमंडलाईणि आराहिताणं [illegible] भवियजणाणं [illegible], न पहवंति भूअपिसायसा-[illegible] [illegible], लहंति पुत्तकलत्तमित्तधणधन्नरज्जसिरीओ त्ति ।

अंबिआदेवीए इमं ।

[illegible] ॥ १ ॥

[illegible] ॥ २ ॥

[illegible] ॥ ३ ॥

[illegible] मुत्ता [illegible]
[illegible] ।

[illegible] ।
[illegible] ॥ १ ॥

[illegible]

APPENDIX VII.

श्रीगिरिनारकल्पः ।



वरधर्मकीर्तिविद्यानन्दमयो यत्र विनतदेवेन्द्रः ।
स्वस्तिश्रीनेमिरसौ गिरिनारगिरीश्वरो जयति ॥ १ ॥
नेमिजिनो यदुराजीमतीत्य राजीमतीत्यजनतो यम् ।
शिश्राय शिवायासौ गिरि० ॥ २ ॥
स्वामी छत्रशिलान्ते प्रव्रज्य यदुच्चशिरसि चक्राणः ।
प्रद्युम्नावलोकनमसौ गिरि० ॥ ३ ॥
यत्र सहस्राम्रवणे केवलमाप्यादिशाद्विभुर्धर्मम् ।
लक्षारामे सोऽयं गिरि० ॥ ४ ॥
निर्वृतिनितम्बिनीवरनितम्बसुम्बमाप यच्छितम्बस्थः ।
श्रीयदुकुलतिलकोऽयं गिरि० ॥ ५ ॥
बुद्ध्वा कल्याणत्रयमिह कृष्णो रूप्यकस्ममणिबिम्बम् ।
चैत्यत्रयमकृताऽयं गिरि० ॥ ६ ॥
पविना हरिर्यदन्तर्विधाय विवरं व्यधाद्रजतचैत्यम् ।
काञ्चनबलानकमयं गिरि० ॥ ७ ॥
तन्मध्ये रत्नमयीं प्रमाणवर्णान्वितां चकार हरिः ।
श्रीनेमेर्मूर्त्तिमसौ गिरि० ॥ ८ ॥
स्वकृतैतद्बिम्बयुतं हरित्रिबिम्बं सुराः समवसरणे ।
न्यदधन्त यदन्तरसौ गिरि० ॥ ९ ॥
शिखरोपरि यत्राम्बाऽवलोकनशिरसि रद्गमण्डपके ।
शाम्बो बलानकेऽसौ गिरि० ॥ १० ॥
यत्र प्रद्युम्नपुरः सिद्धिविनायकसुरः प्रतीहारः ।
चिन्तितसिद्धिकरोऽसौ गिरि० ॥ ११ ॥
तत्प्रतिरूपं चैत्यं पूर्वाभिमुखं तु निर्वृतिस्थाने ।
यत्र हरिश्चक्रेऽसौ गिरि० ॥ १२ ॥
तीर्थतिस्मरणाद् यत्र यादवाः सप्त कालमेघाद्याः ।
क्षेत्रपतामापुरसौ गिरि० ॥ १३ ॥

विभुमर्चति मेघरवो वलानकं गिरिविदारणश्चक्रे ।
यत्र चतुर्द्वारमसौ गिरि० ॥ १४ ॥
यत्र सहस्राम्रवणांतरस्ति रम्या सुवर्णचैत्यानाम् ।
चतुरधिकविंशतिरयं गिरि० ॥ १५ ॥
द्वासप्ततिर्जिनानां लक्षारामेऽस्ति यत्र तु गुहायाम् ।
सचतुर्विंशतिकासौ गिरि० ॥ १६ ॥
वर्षसहस्रद्वितयं प्रावर्त्तत यत्र किल शिवासूनोः ।
लेप्यमयी प्रतिमासौ गिरि० ॥ १७ ॥
लेपगमेऽम्बादेशात्प्रभुचैत्यं यत्र पश्चिमाभिमुखम् ।
रत्नोऽस्थापयतासौ गिरि० ॥ १८ ॥
काञ्चनवलानकान्तः समवसृतेस्तन्तुनेह विम्बमिदम् ।
रत्नेनानीतमसौ गिरि० ॥ १९ ॥
बौद्धनिषिद्धः सङ्घो नेमिनतौ यत्र मन्त्रगगनगतिम् ।
जयचन्द्रमादिशदसौ गिरि० ॥ २० ॥
तारां विजित्य बौद्धान्निहत्य देवानवन्दयत्संघम् ।
जयचन्द्रो यत्रायं गिरि० ॥ २१ ॥
नृपपुरतः क्षपणेभ्यः कुमार्युदितगाथयाम्बयार्प्यत यः ।
श्रीसङ्घाय सदायं गिरि० ॥ २२ ॥
नित्यानुष्ठानान्तस्ततोऽनुसमयं समस्तसङ्घेन ।
यः पश्यतेऽनिशमसौ गिरि० ॥ २३ ॥
दीक्षाज्ञानध्यानव्याख्यानशिवावलोकनस्थाने ।
प्रभुचैत्यपावितोऽसौ गिरि० ॥ २४ ॥
राजीमतीचन्द्रदरीगजेन्द्रपदकुण्डनागझर्यादौ ।
यः प्रभुमूर्त्तियुतोऽयं गिरि० ॥ २५ ॥
छत्राक्षरघण्टाञ्जनबिन्दुशिवशिलादि यत्राहार्यस्ति ।
कल्याणकारणमयं गिरि० ॥ २६ ॥
पाकुलमात्रमन्नदण्डेशाद्या अपि त्र्यधुर्यत्र ।
नेमिभवनोद्धृतिममौ गिरि० ॥ २७ ॥
कल्याणत्रयचैत्यं तेजःपालो न्यवीविशन्मन्त्री ।
यत्र्मेनत्याननमसौ गिरि० ॥ २८ ॥

[illegible] ।
[illegible] तिष्ठति ॥ २९ ॥
[illegible] ।
[illegible] तिष्ठति ॥ ३० ॥
[illegible] ।
[illegible] तिष्ठति ॥ ३१ ॥
[illegible] ।
इति [illegible] जयति ॥ ३२ ॥

इति [illegible] ।

विभुमर्चंति मेघरवो वलानकं गिरिविदारणश्चक्रे ।
यत्र चतुर्द्वारमसौ गिरि० ॥ १४ ॥
यत्र सहस्राम्रवणांतरस्ति रम्या सुवर्णचैत्यानाम् ।
चतुरधिकविंशतिरयं गिरि० ॥ १५ ॥
द्वासप्ततिर्जिनानां लक्षारामेऽस्ति यत्र तु गुहायाम् ।
सचतुर्विंशतिकासौ गिरि० ॥ १६ ॥
वर्षसहस्रद्वितयं प्रावर्त्तत यत्र किल शिवासूनोः ।
लेप्यमयी प्रतिमासौ गिरि० ॥ १७ ॥
लेपगमेऽम्बादेशात्प्रभुचैत्यं यत्र पश्चिमाभिमुखम् ।
रत्नोऽस्थापयतासौ गिरि० ॥ १८ ॥
काञ्चनबलानकान्तः समवसृतेस्तन्तुनेह बिम्बमिदम् ।
रत्नेनानीतमसौ गिरि० ॥ १९ ॥
बौद्धनिषिद्धः सङ्घो नेमिनतौ यत्र मन्त्रगगनगतिम् ।
जयचन्द्रमादिशदसौ गिरि० ॥ २० ॥
तारां विजित्य बौद्धान्निहत्य देवालयन्दयत्संयम् ।
जयचन्द्रो यत्रायं गिरि० ॥ २१ ॥
नृपपुरतः क्षपणेभ्यः कुमार्युदितगाथयाम्बयार्प्यत यः ।
श्रीसङ्घाय सदायं गिरि० ॥ २२ ॥
नित्यानुष्ठानान्तस्ततोऽनुसमयं समस्तसङ्घेन ।
यः पठ्यतेऽनिशमसौ गिरि० ॥ २३ ॥
दीक्षाज्ञानध्यानव्याख्यानशिवावलोकनस्थाने ।
प्रभुचैत्यपावितोऽसौ गिरि० ॥ २४ ॥
राजीमतीचन्द्रदरीगजेन्द्रपदकुण्डनागझम्पाद्यैः ।
यः प्रभुमूर्त्तियुतोऽयं गिरि० ॥ २५ ॥
छत्राक्षरघण्टाञ्जनबिन्दुशिवशिलादि यत्राद्याप्यस्ति ।
कल्याणकारणमयं गिरि० ॥ २६ ॥
याकुम्भमाल्यमज्जनदण्डेशाद्या अपि व्यधुर्यत्र ।
नेमिभवनोन्नतिमसौ गिरि० ॥ २७ ॥
कल्याणत्रयचैत्यं तेजःपालो न्यवीविशन्मन्त्री ।
यत्रेभ्यस्थानमसौ गिरि० ॥ २८ ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ।
इति [illegible] ॥ [illegible] ॥

इति [illegible] ।

APPENDIX VIII

Inscription of the reign of Alapkhan in the temple of Sthambhana Pârsvanâtha at Cambay.

ॐ अर्हं संवत् १३६६ वर्षे प्रतापाक्रान्तभूतलश्रीअलावदीनसुरत्राणप्रतिशरीरश्रीअल्पखानविजयराज्ये श्रीस्तंभतीर्थे श्रीसुधर्मास्वामिसंताननभोनभोमणिसुविहितचूडामणिप्रभुश्रीजिनेश्वरसूरिपट्टालंकारप्रभुश्रीजिनप्रबोधसूरिशिष्यचूडामणियुगप्रधानप्रभुश्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरूपदेशेन ऊकेशवंशीयसाहजिनदेवसाहसहदेवकुलमंडनस्य श्रीजेसलमेरौ श्रीपार्श्वनाथविधिचैत्यकारितश्रीसम्मेतशिखरप्रासादस्य साहकेसवस्य पुत्ररत्नेन श्रीस्तंभतीर्थे निर्मापितसकलस्वपक्षपरपक्षचमत्कारिनानाविधमार्गणलोकदारिद्रयमुद्रापहारिगुणरत्नाकरस्य गुरुगुर्जरपुरप्रवेशकमहोत्सवेन संपादितश्रीशत्रुंजयोज्ज्रयंतमहातीर्थयात्रासमुपार्जितपुण्यप्राग्भारेण श्रीपत्तनसंस्थापितकोद्दडिकालंकारश्रीशांतिनाथविधिचैत्यालयश्रीश्रावकपौषधशालाकारापणोपचितप्रसृमरयशःसंभारेण भ्रातृसाहराजुदेवसाहबोलियसाहजेहडसाहलपपतिसाहगुणधरपुत्ररत्नसाहजयसिंहसाहजगधरसाहसलपणसाहरत्नसिंहप्रमुखपरिवारसारेण श्रीजिनशासनप्रभावकेण सकलसाधर्मिकवत्सलेन साहजेसलसुश्रावकेण कोद्दडिकास्थापनपूर्वं श्रीश्रावकपोषधशालासहितः सकलविधिलक्ष्मीविलासालयः श्रीअजितस्वामिदेवविधिचैत्यालयः कारित आचन्द्रार्कं यावन्नंदतात् ॥ शुभमस्तु । श्रीर्भूयात् श्रमणसंघस्य । श्रीः ।

APPENDIX IX

Inscriptions on the Satrunjaya Hill pertaining Samara's installation of the image of Aditvara.

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि सोमे श्रीमदूकेशवंशे वेसटगोत्रीयसा० ...लषणपुत्रसा०आजडतनयसा०गोसलभार्यागुणमतीकुक्षिसंभवेन संघपति- ...आसाधरानुजेन सा०लूणसीहाग्रजेन संघपतिसाधुश्रीदेसलेन पुत्रसा०सहज- पालसा०साहणपालसा०सामंतसा०समरसा०सांगणप्रमुखकुटुम्बसमुदायोपेतेन निजकुलदेवी (सचि) कामूर्त्तिः कारिता । यावद्व्योमनि चंद्रार्कौ यावन्मेरुर्म- हीतले । तावत् श्री (सच) का मूर्तिः....

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि १४ सोमे....ज्ञातीयराणकश्रीमहीपाल- देवमूर्त्तिः....संघपतिश्रीदेसलेन कारिता श्रीयुगादिदेवचैत्यालये ।

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि १४ सोमे श्रीमदूकेशवंशे वेसटगोत्रे सा० सलषणपुत्रसा०आजडतनयसा०गोसलभार्यासा०गुणमतिकुक्षिसम्भूतेन संघ- पतिसा०आसाधरानुजेन सा०लुणसीहाग्रजेन संघपतिसाधुश्रीदेसलेन सा०- सहजपालसा०साहणपालसा०सामंतसा०समरसीहसा०सांगणसा०सोमप्रभृ- तिकुटुंबसहायोपेतेन वृद्धभ्रातृसंघपतिआसाधरमूर्त्तिः श्रेष्ठिमाढलपुत्रीसं- घ०रत्नश्रीमूर्त्तिसमन्विता कारिता । आशाधरः कल्पतरुप्रहोपमाशात्रिकं पूरित........ । .... टंकृतबाहुयुगो युगादिदेवं प्रयतः प्रणौति ॥ चिरं नंदतात् ॥ ॥ शुभं भवतु ॥

संवत् १४१४ वर्षे वैशाखसु १० गुरौ संघपतिदेसलसुतसा०समरस- मरश्रीयुग्मं सा०सालिगसा०सज्जनसिंहाभ्यां कारितं । प्रतिष्ठितं श्रीककसूरि- शिष्यैः श्रीदेवगुप्तसूरिभिः । शुभं भवतु ॥

APPENDIX X

पेथडरासः

विणयवयणि वीनवउं देवि सामिणि वागेसरि
हंसगमणि आकाशभमणि तिहुयणि परमेसरि ।
वीरजिणिंदह नमीय चलण चउविहुश्रीसंघिहिं
कयडजक्ख जक्खाधिराज समरीय मनरंगिहिं ॥ १ ॥
कोडीयनयरनिवासिणी य वंदउं अंबिकदेवि ।
शासनदेवति मनि धरीय गुरुचलण नमेवि ॥ २ ॥
रास रमेवउ जिणभुवणि तालमेल ठवि पाउ ।
संघतलायन रोपीउ ए सभगिरि विभगिरि वेवि ॥ ३ ॥
निसुणउ धामी एकमनि महीयलिमज्झि पहाण ।
जास बोध निरवमतिलउ पेथ अगंजीयमाण ॥ ४ ॥
पिण एक तस गुण संभलउ संघपति साहसधीर ।
अकलीअ कलि जिम छेतरीअ गरूउ गुहिर गंभीर ॥ ५ ॥
पोरूआडकुलिमंडणउ वर्द्धमाणकुलिलीह ।
धांडमीहकुलि अवतरीया पेथपमुह सुतसीह ॥ ६ ॥
जिम कंचण कसवट्टीयए पामिउ बहुगुणरेह ।
थंपवि पेथपरीपीयइ बहुअ कालि घरि एह ॥ ७ ॥
वरसीग पेथड पाटे थंपथ वोलावइ
नरमीहरतनह कारे मनि मंत्र चलावइ ।
मणूयजन्म अनिहूलहइ अनइ श्रावयजम्म
जाव लहइ बहुपुण्य जगि जिणवरधम्म ॥ ८ ॥
धणकणगरयणभंडार ते मवि अछइ य असार ।
संपइ मोहनबंध ते सघ्वि जाणे गमार ॥ ९ ॥
सांभिनवउ जउ गरथ करेइ लीजइ राउल छल ह धरेइ ।
मणूयजनम इवं सफल करीजइ जीवियजोवनलाहउ लीजइ ॥ १० ॥
अथिरलाछि किम थिर ह करीजइ जिणह धंम तस उत्तम दीजइ ।
सेत्रुंजि रिसहसामि वंदीजइ विविहप्पकारिहिं प्रभु पूजीजइ ॥ ११ ॥

बंधवि कीयउ वयण प्रमाण एकचित्ति मति समाण जाण ।
बंधवि कीयउ विचार सविहुं काजि लिउ नरमाअ भार ॥ १२ ॥
य निसुणउ लोयमज्झि संघनणउ समाहउ भवीअणाउ
गाणूंअ दीजइ भनिजत्ति भवीयण लहइ लाहउ धणाधणाउ ।
सि रलीयइं रंगि गाम हयं नयरम नवरंग नवागयर ॥ १३ ॥
सुणि सामहणी संघनणी जो करइ निरंतर पंरहि तर
इन देयालउं सामुहिउं नांह माहि सुंअमर जिण ठ्याण ।
दिसदेसाउर वरनयर निरि लोनि ककाग्रो पाठवाण ॥ १४
पाटणि पइसीय सामनि नहि गणनंअर भराण तानवान ।
तीरथजाथ जापयउं देव नहि देमनउ समाण कार ॥ १५ ॥
तहिं वेगि लेउ पण आवीउ न समानयन नहि नाणइ पूनिसाकुलिमाया ।
नयर पसाहरउ कीयउ तवकाणि नहि नाणइ वागाधारविरत सघारथा सामगार
घरि घरि वइसीय लोय मनावाग मा गणमाहवरविरत
पूरुपाइणाह ॥ १६ ॥
दूसमसमइ अहि जिम निराग गानानउ विवार मनि धराग गम
जाउइ जनमहणउ ।
.... ॥ १७ ॥
एकमावि नर जिणइ धम्म वडिविणवर ....
पेथि कुमिग नर जाइं निदमर मला मना अनिदि वहिला पापनवर ।
कामिणि भामिणि धवल दियंता गायना गुण जिणवरह ।
अतिक्रमाहु जात्र समाहउ कांयल ... सुणाइ य ॥ १८ ॥
तं भउरा रूडा महधा माहीं बचांनंवरा दीसइ महलाणा गरया ।
ते धणाधणरा रमविसंरा वंचि न दीसइ .... गुण ॥ १९ ॥
देवालइ मारंग नवणि विसालोय हिंडोय माली रंगि विरमा हरिसमरे ।
तहि नाचइं रंगा बहुयन वेला वाला जोला लउडा रसि रमइ ॥ २० ॥
अतिरंगि पूरा दिना अमरा नवधरि नवरंगइ निपसरबे ।
रमममहोत्सव कउ देवालइ फागुणपंचमि सामंतापालइ प्रस्थान करउ
पयरहिय ॥ २१ ॥
संघपति सोहइंउ वांधवांई तीरथजात्र साहयउं सोमालाय ।
सोहगुण सामायणाह बहुय पायइ पणवि रहायाय ।
समुहुयम हु लेउ पसवि आवीय संघ देवालइन संपइ ॥ २२ ॥

संघपूज तिहां कीधउं अवारी भोयण सयल लोय सवि पूरीय
महोछव कारवीय ॥ २३ ॥

लहण ॥ फागुणदसमि दिणंद चलीय संघ दहदिसितणउ ।
हसमस धसमस जोइ मिलीय लोक पण अतिघणउ ए ॥ २४ ॥
यहतमह्ल अगेवाण तुरीय ठाठ जोइं पापरीय ।
पुलेहिं पलाण जोइ इकि देवालइ फिरीय ॥ २५ ॥
पहिलउं दीधी लागि जोइन देवालां संचरइं ए ।
अखंड पीयाणे जाइ पहिलउं पीलूयाणइ रहीय ॥ २६ ॥
चलीय संघसंजुत्त पहुतउ वेगि डाभलनयरे ।
तींहं दीन्हा वास भास रास रलीयामणां ए ।
देवालइ ऊछाहु चैत्रप्रवाडि सोहामणी ए ॥ २७ ॥
वडराउत वपाणि करणराउ मनि सलहीइ ए ।
देद दयापरजाम वील्हणवंस वपाणीइ ए ॥ २८ ॥
पहुतउ देवालइ तोइ हरसीय संघ प्रसंसीइ ए ।
पेथडसमउ न कोइ मारगि मन तुम्हि वीहिसिउ ए ॥ २९ ॥
दीन्ह पीयाणउं तोइ मयगलपरि तुम्हि संचरीय ।
वेगि पहूता तोइ नयरमाहि ते तरवरीय ॥ ३० ॥
आंगणि दीन्हा वास देवालां पापलि फिरीय ।
भवियां पणमउ पास जिणह भूयण रलीयामणउं ।
कीधीय चैत्रप्रवाडि देवदेवांगणि पेपणउं ए ॥ ३१ ॥
संघह कीउं वत्सह्ल धम्मी नागलपुरतणे ए ।
चलीय पीयाणइ जाम मारगि माग न जाणीइ ए ॥ ३२ ॥
सहू यालइ गीयं ताम संघपति पेथ वपाणीइ ए ।
नयणि निहालइ लोक पुण्यवंत धनवंत तहिं ॥ ३३ ॥
पूजीया जिणभूयणाइं भविया मणोरह चित्ति धरे ।
कीउं पीयाणउं भावि अम्बलीयछीतीयहारि तहिं ॥ ३४ ॥
पेथावाडइ जाइ भेटीय मंडणदेव तहिं ।
लायउं मानप्रमाण सीकिरि आवइं गुणपवरो ॥ ३५ ॥
भयु मनि करिवउ तुम्हि मारगि जाउ तम्हि ।
गिया ते जंबू जाम संघह पार न पामीए ए ।

[illegible] ॥ १९ ॥

[illegible] ॥ ३० ॥

[illegible]

[illegible] नगणि निराले ॥४२॥

[illegible] वहुभद ॥ ४३ ॥

[illegible] पुणमानिन

पदई आट संकलनि त्रिगुणि [illegible]

पंचसीहरि [illegible] मुग मन ।

पार्वाड डुंगर पण मिलउ फूलसार नै चंग

पाउल मायई रंगभर गागंसा ए गागंसा ए गागंसा मनह सरंग ॥ ४४ ॥

फागइ धंधण दिन्ह महि बहुगुण पूरी आस ।

संघपति धरइ धयामणउं घलोउ ए घलोउ ए घलोउ पालीगताणइ वास॥४५॥

गंगाजल जिम निर्मलउं सल्लनासर सुपवित्र ।

सांघवेय तारथतिलउ निसमसरे निसमसरे तिसमसरे संपत्त ॥ ४६ ॥

मकेवि सामिणि पय नमीय संतिनाह सुरराउ ।

पालितसुरिप्रतिष्ठिउ ए सोलमू ए सोलमू ए सोलमउ जिणराउ ॥ ४७ ॥

डुंगरसिरि जे पाहरीय कवडिजक्खपडिहारो ।

संघ जि सांनिध सो करइ पहिलुं ए पहिलुं ए पहिलुं पास जुहारे ॥ ४८ ॥

अणुपम सर देपवि तहि पहूंता पालिहूपारि ।

सरगारोहण दिठ तहिं अहिणव ए अहिणव ए अहिणव ईणं संसारे ॥ ४९ ॥

अष्टापद अवलोईई ए इंद्रमंडप अतिचंग ।
नंदीसर अहिणव तहिं देपीऊ ए देपीऊ ए देपीउ मनिहिं गुरंग ॥ ५० ॥
मंडपि पहुतउ पविध्र तहिं लोटींगणा करेउ ।
पणमीय सामीय रिसहजिण तिन्नि प्रदक्षिण तिन्निप्रदक्षिण तिन्नि प्रदक्षिण देउ ॥ ५१ ॥
दीठह्मा पदमहकमल निम्मल युगादि जिण पयठला सामी पद्मजिण विमलगिरे ।
भवीयच्छुणंत सामी लागह्मा तम्ह यहं नामिं नमो य नमो नमो संघुजसिहरो ५२
धायवद्धामणउं अतिहिं सोहामणुं रिसहभूअणि रूलीआमणं ए
भवीयजन कलस कंचणमय मंडियले ए दुक्स जलंजलि देयंति कुसुमंजले ॥
धुणंति दीणरीण जीण उतारंति जललवण नम्हण करंति सामी सुगंधजले ॥
कपूरिपूरि पूरीय तिणि कीय लि मृगनाभिमंडण त्रिजगगुरु
गुणनिलउ देवाधिदेव जोउ वेलवउ सेवत्रीपाडल बहल कुसुम परमल
पूजहे । वायवद्धामणं ॥
भवीयमणि बहआणंदि आरती उतारइ जिणिंद पढई भद्द मंगलि

तिलक भलउ लि कीय ले कंठि वरमाला ठविय ले चाउलि सिरि
धन धामी
भवीयजण रंजिय मनि दियंति ते दीण दुधीय जण
नचंति नयनवी रमणि वीणवंसमृदंगमणि तिवलि
भवण ।
आय कि रिसहेसर तम्ह परमेसर सामीसाल चिरकालि
तम्हची पाय ए कमलभमर भविक जन जयउ जगनाथ

अखंडकोडाकोडि सिद्धि ले तीथयर गोत्र बंधीय ले

आयस मगीय जव चलीय पूरीय संघ मल्लीय मनि
डर ढलीउ ।
आयस मग्गिय पेथ ज चलीउ ढलीय ढोडर संघपति
सयलसंघो पहुत पालीताणए घरि घरि साहमीवच्छल

चित्त तिहि सफलसिद्धिक्षेत्रे जन्मफल लेउ जो बहुधणवंतइं रूपावटी
चलीय पीयाणए ।
याातिपति लोक वखाणए सेलडीया संघ पहुत तहि चलयउ अखंड
पीआणए ।
अमरेलीपपीयाणए पहुतउ वेगि तहिं पण विकीयाणए विसमगिरि दं-
धीपउ पूरि मनि आसह ॥
पुरि अंगणि दीन्हा घास उग्रसेनमंदिरु दीठ पगार अघनरकवि भणइं
गढवि खइंगार ।
जउ दीसए पोलिपगार नरपम नरसीअ नरआधार ॥
टकि मंढिउ वास तहिं विसमए सुरठ वइदेस भोल लोक तहि निवसएग ।
रि गुरूउ गिरनार स पसिद्धउ ता तहि दमोदरो देप प्रसिद्धउ वहि सोयन-
रेख नदी जलपूरीय ।
कालमेघो क्षेत्रपाल गिरिपाहरी मंत्रियाहडु देवि पाज करावीय धवलीय वर
परव तीण करावीय ।
विसम डूंगर गुरूउ गिरनारो चडीय नेमिकुमरि लीयउ संजमभारो
दिनि चउपनि वरनाण ऊपजइए जगतिगुरु जिणिह वर तसु सिहरे सिजइए ॥
सीधु सामी सामलउ तसु सिहरि संघ पहूतउ ऊलट आंगिहिं अतिघणउ देपीउ
राजलकंत । तहि नाचिनए ए सहिलडी ए ललागीय गिरिनारे
राजलियर कलिआमणउ सामलडउ संसारो । तहिं नाचिनए०॥
अंग पखालि सुगधंदमइ ए जल पहरीय धोति प्रधीत ।
इंद्रमहोत्सव आयरंभी तहिं धयठ लि बहुधणवंत । तहिं नाचिनए सहि० ॥
इंद्रमालउच्छाह करी जो वेचीय विभव नीयाणि ।
सफलमणोरह पूरीय संघपति चडीयलि इन्द्रविमानि ॥ तहि नाचिनए० ॥
चमरधारि सरतारसवंगी गावंती बहु आसीस ।
सामलसापि किरि संघपति नंदउ बहुत वरीस ॥ तहिं नाचिनए० ॥
गधंदमइ ए नीरि कलस जलभरीय लि कपूरिहिं भंगी महापूज अहिसीम ।
नप कलीय लि आरती उतारउ मंगलिक संघपति ईम ॥ तहि ना० ॥
अंबिकि आस मणोरह पूरी अपलोईय जगधाप
सांवपजन जुहारीय वलीयउ पेथ जन्म सुकीयाप ॥ तहि नासहलली ए ढलो-
पा गई गिरिनारि ॥

अष्टापद अवलोईई ए इंद्रमंडप अतिचंग ।
नंदीसर अहिणव तहिं देपीऊ ए देपीऊ ए देपीउ मनिहिं सुरंग ॥ ५० ॥
मंडपि पहुतउ पवित्र तहिं लोटांगणां करेउ ।
पणमीय सामीय रिसहजिण तिन्नि प्रदक्षिण तिन्निप्रदक्षिण तिन्नि प्रदक्षिण देउ ॥ ५१ ॥
दीठल्ला पदमहकमल निम्मल युगादि जिण पयठला सामी पढमजिण विमलगिरे ।
भवीयचच्छुणंत सामी लागह्ला तम्ह यइं नामिं नमो य नमो नमो सेत्तुजसिहरो॰॥
वायवद्धामणउं अतिहिं सोहामणुं रिसहभूअणि रूलीआमणं ए
भवीयजन कलस कंचणमय मंडियले ए दुक्ख जलंजलि देयंति कुसुमजले ॥
धुणंति दीणरीण जीण ऊतारंति जललवण नम्हण करंति सामी सुगंधजले ॥
कपूरिपूरि पूरीय तिणि कीय लि मृगनाभिमंडण त्रिजगगुरु
गुणनिलउ देवाधिदेव जोउ वेलयउ सेवत्रीपाडल वहल कुसुम परमल विपुल पूजहे । वायवद्धामणं ॥
भवीयमणि वहआणंदि आरती ऊतारइ जिणिंद पढइं भट्ट मंगलिक रिसहसामि ।
तिलक भलउ लि कीय ले कंठि वरमाला ठविय ले चाउलि सिरि वद्धावीय लि। धन शामी वद्धामणउं ॥
भवीयजण रंजिय मनि दियंति ते दीण दुथीय जण मग्गण दाणु
नचंति नयनवी रमणि वीणवंसमृदंगमणि तिवल्लि तालनिनाद सुणि पूरीय भवण । वाइयवद्धामणुं॰ ॥
आप कि रिसहेसर तम्ह परमेसर सामीसाल चिरकालि मुक्तिवर ।
तम्हची पाय ए कमलभमर भविक जन जयउ जगनाथ तुं जगतगुरो ॥ वायवद्धाम॰ ॥
अम्हं इकोडाकोडि सिद्धि ले तीथयर गोत्र बंधीय ले पूजीयु हरिसह मनि मन मिलीउ ।
आपस मग्गीय जय चलीय पूरीय संघ मल्हीय मनि निचंतीय पेथडकंठि टोडर ठलीउ । वायवद्धामणं॰ ॥
आपस मग्गिय पेथ ज चलीउ ठलीय टोडर संघपति मोकलावए
सयलसंघो पहुत पालीताणए घरि घरि साहमीवच्छल करए ।

...यीय चित्त निहि सफलसिद्धिसेत्रे जन्मफल लेउ जो बहुधणवंतइं रूपावटी
घलीय पीयाणए ।

...यहउ संघातिपति लोक चल्लाणए सेलडीया संघ पहुत तहि चलयउ अखंड
पीआणए ।

जाइ अमरेलीयपीयाणए पहुतउ वेगि तहिं पण विकीयाणए विसमगिरि ढं-
धीपउ पूरि मनि आसह ॥

तेजलपुरि अंगणि दीन्हा पास उग्रसेनमंदिक दीठ पगार अयनरकधि भणइं
गढवि खइंगार ।

गरूअउ दीसए पोलिपगार नरपम नरसीअ नरआधार ॥
मंडलकि मंडिउ पास तहिं धिसमए सुरठ पइदेस भोल लोक तहि निवसयए ।
गिरि गुरूउ गिरनार स पसिद्धउ ता लहि दमोदरो देय प्रसिद्धउ यहि सोयन-
रेख नदी जलपूरीय ।

कालमेघो क्षेत्रपाल गिरिपाद्दरी मंत्रियाहड देवि पाज करायीय घयलीय वर
परव तीण करायीय ।

विसम डूंगर गुरूउ गिरनारो चडीय नेमिकुमरि लीयउ संजमभारो
दिनि पउपनि वरनाण ऊपजइए जगतिगुरु जिणिह वर तसु सिहरे सिज्झए ॥
सीधु सामी सामलउ तसु सिहरि संघ पहुतउ ऊलट आंगिहिं अतिघणउ देपीउ
राजलवंत ! तहि नाचिनए ए सहिलडी ए लला गीय गिरिनारे
राजलियर दलिआमणउ सामलहउ संसारो । तहिं नाचिनए०॥
अंग पखालि सुगयंदमइ ए जल पहरीय धोति प्रवीत ।
इंद्रमहोत्सव आयरंभी तहिं वयठ लि बहुधणवंत । तहिं नाचिनए सहि० ॥
इंद्रमालउच्छाह करी जो वेचीय विभव नीयाणि ।
सफलमणोरह पूरीय संघपति चडीयलि इन्द्रविमानि ॥ तहिं नाचिनए० ॥
घमरधारि सरतारसवंगी गायंती बहु आसीस ।
सामलसापि किरि संघपति नंदउ वहत वरीस ॥ तहिं नाचिनए० ॥
गयंदमइ ए नीरि कलस जलभरीय लि कपूरिहिं भंगी महापूज अहिसीम ।
नय कलीय लि आरती उतारउ मंगलिक संघपति ईम ॥ तहिं ना० ॥
अंविकि आस मणोरह पूरी अवलोईय जगनाथ
सांवपजन जुहारीय वलीयउ पेथ जन्म सुकीयाथ ॥ तहिं नासहलली ए दली-
या गइं गिरिनारि ॥

सोमनाथचंदपह वंदीय देखीउ यलीउ आम
दिउ पीयाणं हिव मन रहिसउ मंडलिक भणइ ईम ॥ तहिं ना० ॥
दिउ पीयाणं वेगि तहिं हरीयाला मूडा रे सुरताण संपत्ता मनीला मू

इति श्रीरणमल्लछंदमौक्तिकम्ला० पेथडरासः समाप्तः ॥

अष्टापद अवलोइई ए इंद्रमंडप अतिचंग।
नंदीसर अहिणव तहिं देपीऊ ए देपीऊ ए देपीउ मनिहिं सुरंग ॥ ५० ॥
मंडपि पहुतउ पवित्र तहिं लोटींगणां करेउ।
पणमीय सामीय रिसहजिण तिन्नि प्रदक्षिण तिन्निप्रदक्षिण तिन्नि प्रदक्षिण देउ ॥ ५१ ॥
दीठह्ला पदमहकमल निम्मल युगादि जिण पयठला सामी पढमजिण विमलगिरे।
भवीयच्छुणंत सामी लागह्ला तम्ह पइं नामि नमो य नमो नमो सेत्तुजसिहरो५२
वापवद्धामणउं अतिहिं सोहामणुं रिसहभुअणि रलीआमणं ए
भवीयजन कलस कंचणमय मंडियले ए दुकल जलंजलि देयंति कुसुमजले ॥
थुणंति दीणरीण जीण उत्तारंति जललवण नम्हण करंति सामी सुगंधजले ॥
कपूरिपूरि पूरीय तिणि कीय लि मृगनाभिमंडण त्रिजगगुरू
गुणनिलउ देवाधिदेव जोउ येलयउ सेवत्रीपाडल वहल कुसुम परमल विपुल पूजहे। वापवद्धामणं ॥
भवीयमणि वहआणंदि आरती उत्तारइ जिणिंद पइइं भट्ट मंगलिक रिसहसामि।
तिलक भलउ लि कीय ले कंठि वरमाला ठविय ले चाउलि सिरि वद्धावीग लि। धन धामी वद्धामणउं ॥
भवीगजण रंजिय मनि दियंति ते दीण दुथीय जण मग्गण दाणु
नचंति नयनर्वा रमणि वीणवंसमृदंगमणि तिवह्लि तालनिनाद सुणि पूरीग भवण। वाइवद्धामणुं० ॥
आग कि रिसहेसर तम्ह परमेसर सामीमाल्ह चिरकालि मुधिनर।
तम्हचां पाय ए कमलभमर भविक जन जयउ जगनाथ तुं जगतगुरो ॥ वापवद्धाम० ॥
अमंइच्छोदासोदि सिद्धि ले तीथयर गोत्र बंधीग ले पूजीगु हरिसह मनि मन मिलीउ।
आपस मनीय जय चन्दीय पूरीय मंघ मक्कीय मनि निपंतीय गेयडकंठि टोडर दलीउ। वापवद्धामणं० ॥
१५ मन्निरप पेथ ज पन्दीउ दलीय टोडर संघपति मोकलायए
...ठयंत्रो पहुत पाटीणापुर घरि घरि साहमीवच्छल कारए।

...य विस्त निहि सयलसिद्धिक्षेत्रे जन्मफल लेउ जो बहुधणवंतइं रूपावटी
घलीय पीयाणए ।
...उ संघातिपति लोक धन्नाणए सेलडीया संघ पहुत तहि चलपउ अखंड
पीआणए ।
...ाइ अमरेर्लीपर्पायाणए पहतउ वेगि तहिं पण विमीयाणए विसमगिरि ढं-
घीपउ पूरि मनि आसह ॥
...तिजलपुरि अंगणि दीन्हा पास उग्रसेनमंदिर दीठ पगार अपनरकवि भणइं
गढयि खइंगार ।

गरूअड दीसए पोलिपगार नरपम नरसींअ नरआधार ॥
मंडलकि मंडिउ पास तहि विमलए सुरठ वडदेस भोल लोक तहि निवसयए ।
गिरि गुरूउ गिरनार स पसिद्धउ ता लहि दमोदरो देव प्रसिद्धउ घहि सोवन-
रेख नदी जलपूरीय ।
कालमेघो क्षेत्रपाल गिरिपाहरी मंत्रिवाहड देवि पाज करावीय धवलीय वर
परय तीण करावीय ।

विसम डूंगर गुरूउ गिरनारो चडीय नेमिकुमरि लीयउ संजमभारो
दिनि चउपनि वरनाण ऊपजइए जगतिगुरु जिणिह वर तसु सिहरे सिज्झए ॥
सांधु सामी सामलउ तसु सिहरि संघ पहूतउ ऊलट आंगिहिं अतिघणउ देपीउ
राजलवंत । तहि नाचिनए ए सहिलडी ए लला गीय गिरिनारे
राजलियर ग्लिआमणउ सामलडउ संसारो । तहि नाचिनए०॥
अंग पखालि सुगपंदमइ ए जल पहरीप धोति प्रयीत ।
इंद्रमहोत्सव आपरंभी तहि वयठ लि बहुगुणवंत । तहिं नाचिनए सहि० ॥
इंद्रमालउच्छाह करी जो वेचीय विभव नीयाणि ।
सफलमणोरह पूरीय संघपति चडीयलि इन्द्रविमानि ॥ तहिं नाचिनए० ॥
चमरधारि सरतारसवंगी गावंती वहु आसीस ।
सामलसापि किरि संघपति नंदउ वहत वरीस ॥ तहिं नाचिनए० ॥
गयंदमइ ए नीरि कलस जलभरीय लि कपूरिहिं भंगी महापूज अहिसीम ।
नप कलीय लि आरती उतारउ मंगलिक संघपति ईम ॥ तहिं ना० ॥
अंबिकि आस मणोरह पूरी अवलोईय जगनाथ
सांवपजून जुहारीप वलीपउ पेथ जन्म सुकीयाथ ॥ तहिं नासहलली ए कली-
या गईं गिरिनारि ॥

अष्टापद अवलोइई ए इंद्रमंडप अतिचंग।
नंदीसर अहिणव तहिं देपीऊ ए देपीऊ ए देपीउ मनिहिं सुरंग ॥ ५० ॥
मंडपि पहुतउ पविन्न तहिं लोटींगणां करेउ।
पणमीय सामीय रिसहजिण तिन्नि प्रदक्षिण तिन्निप्रदक्षिण तिन्नि प्रदक्षिण देउ ॥ ५१ ॥
दीठह्ला पदमहकमल निम्मल युगादि जिण पयठला सामी पढमजिण विमलगिरे।
भवीयच्छुणंत सामी लागह्ला तम्ह यइं नामिं नमो य नमो नमो सेत्तुजसिहरो५२
वायवद्धामणउं अतिहिं सोहामणुं रिसहभूअणि रलीआमणं ए
भवीयजन कलस कंचणमय मंडियले ए दुक्ख जलंजलि देयंति कुसुमंजले ॥
धुणंति दीणरीण जीण ऊतारंति जललवण नम्हण करंति सामी सुगंधजले ॥
कपूरिपूरि पूरीय तिणि कीय लि मृगनाभिमंडण त्रिजगगुरु
गुणनिलउ देवाधिदेव जोउ वेलवउ सेवत्रीपाडल वहल कुसुम परमल विपुल पूजहे। वायवद्धामणं ॥
भवीयमणि वहआणंदि आरती ऊतारइ जिणिंद पढइं भट्ट मंगलिक रिसहसामि।
तिलक भलउ लि कीय ले कंठि वरमाला ठविय ले चाउलि सिरि वद्धावीय लि। घन धामी वद्धामणउं ॥
भवीयजण रंजिय मनि दियंति ते दीण दुधीय जण मग्गण दाणु
नचंति नवनवी रमणि वीणवंसमृदंगमणि तिवल्लि तालनिनाद सुणि पूरीय भवण। वाइवद्धामणुं० ॥
आय कि रिसहेसर तम्ह परमेसर सामीसाल चिरकालि मुक्तिवर।
तम्हची पाय ए कमलभमर भविक जन जयउ जगनाथ तुं जगतगुरो ॥ वायवद्धाम० ॥
अखंडकोडाकोडि सिद्धि ले तीथयर गोत्र वंधीय ले पूजीयु हरिसह मनि मन मिलीउ।
आयस मग्गीय जव चलीय पूरीय संघ मरुलीय मनि निचंतीय पेथडकंठि टोडर ढलीउ। वागवद्धामणं० ॥
मग्गिय पेथ ज चलीउ ढलीय टोडर संघपति मोकलावए
पहुत पालीताणए घरि घरि साहमीवच्छल कारए।

य वित्त तिहि सफलसिद्धिक्षेत्रे जनमफल लेउ जो बहुधणवंतदं रूपावटो
चलीय पीयाणए।
उ संघातिपति लोक चलाणए सेलडीपा संघ पहुत तहि चलपउ अखंड
पीआणए।
इ अमरेलीयपीयाणए पहुतउ वेगि तहिं पण विकीयाणए विसमगिरि दं-
घीपउ पूरि मनि आसह ॥
जलपुरि अंगणि दीन्हा वास उग्रसेनमंदिर दीठ पगार अघनरकवि भणइं
गढवि लइंगार।
गरूअउ दीसए पोलिपगार नरपम नरसीअ नरआधार ॥
मंडलकि मंडिउ वास तहिं विसमए सुरठ वडदेस भोल लोक तहि निवसगए।
गिरि गुरूउ गिरनार स पसिद्धउ ता लहि दमोदरो देव प्रसिद्धउ वहि सोवन-
रेल नदी जलपूरीय।
कालमेघो क्षेत्रपाल गिरिपाहरी मंत्रियाहड देवि पाज करावीय भयलीय पर
परप तीण करावीय।
विसम डूंगर गुरूउ गिरनारो चडीय नेमिकुमरि लीयउ संजमभारो
दिनि चउपनि वरनाण ऊपजइए जगतिगुरु जिणिह वर तसु सिहरे सिउक्षग ॥
सीघु सामी सामलउ तसु सिहरि संघ पहुतउ उलट आंगिहिं अतिघणउ दीठउ
राजलकंत। तहि नाचिनए ए सहिलडी ए लला गीय गिरिनारे
राजलियर दलिआमणउ सामलडउ संसारो। तहि नाचिनए०॥
अंग पखालि सुगयंदमइ ए जल पहरीय धोति प्रवीत।
इंद्रमहोत्सव आयरंभी तहिं यपठ लि बहुधणवंत। तहिं नाचिनए सहि० ॥
इंद्रमालउच्छाह करी जो वेचीय विभव नीयाणि।
सफलमणोरह पूरीय संघपति चडीयलि इन्द्रविमानि ॥ तहिं नाचिनए० ॥
चमरधारि सरतारसवंगी गावंती बहु आसीस।
सामलसापि किरि संघपति नंदउ यहत परीस ॥ तहिं नाचिनए० ॥
गयंदमइ ए नीरि फलस जलभरीय लि कपूरिहिं भंगी महापूज अहिसीम।
नय कलीय लि आरती उतारउ मंगलिक संघपति ईस ॥ तहिं ना० ॥
अंविकि आस मणोरह पूरी अवलोईय जगनाथ
सांबपजून जुहारीय चलीयउ पेथ जन्म सुकीयाथ ॥ तहिं नासहलडी ए ढलो-
पा गई गिरिनारि ॥